कोई पत्थर से ...

के० पी० सक्सेना

आलेख प्रकाशन, दिल्ली

शुरू करने से पहले

सो ब-दापरवर ! इस हसरत के साथ यह मक्लन सुपुद क्र रहा हू कि कोई पत्थर स न मारे ! यह भी नही चाहता कि कोई सिफ फूला स ही सहलाये ! हर खट्टी मीठी रचना हास्य के आवरण म लिपटी मिलेगी आपका ! मगर कही कही तिलमिलाहट भी होगी, यह भी मुझे मालूम है ! समाज क हर वग को अपन ढग स उघाडा है मैंने ! कही-कही परत दर परत दद की तह हैं, तो कही कही सैलाब ए-तबस्सुम !

लिखन को या ता पाच सौ से ऊपर व्यग्य लिखे पर कुछ एक ऐसे जायके दार साबित हुए जो मुझे भी चटखारा दे गये और आपको भी ! उ-ही सबको पत्थर की मार से बचाते हुए इस सकलन मे बाध दिया !

हजरत कदरदान, मेरे साथ वही मसल हुई कि कुछ गुड ढीला कुछ बनिया ! न मैंने किताब का गुलदस्ता सजाने की सोची, न सजान वाला ने साथ दिया ! नतीजा यह निकला कि व्यग्य सकलन के नाम पर मेरी यह दूसरी जायज औलाद है ! मेरी नपफाजी की य दास्तानें आपका पस-द आयें तो दिलचस्पी का सेहरा आपके सिर ! न पस-द आयें ता तोहमत और लानत मेर सिर ! या इतना जरूर अज क्रूगा कि व्यग्य कार का बच्चा आज तक हर किसीको खुश नही कर पाया ! कही किसी रचना न समाज के किसी वग को खराच पहुचा दी ता मन ही मन जूतियां उडा दी ! मेरे दोस्ता न अक्सर मुझे टोका है कि तुम ज्यादातर अपनी ही बीवी और बच्चो को क्या लपेटे रहते हो ? अब आप ही बताइये कि मैं किसी गैर की बीबी और बच्चा का क्याकर लपेट सकता हू ? जो

चन्द बाल ववाया वन है जिन पर उनग मुने बहन प्यार है ।   मगर इतना आप भी महसूस करेंगे पढकर कि अपा बीवी-बच्चो क माध्यम ग मन हजारा क बीवी-बच्चा क दिल का दद कुरेदा है और उनपर मरहम लगाने की भी कोशिश की है ।कुल मिलाकर यही प्रयत्न रहा है कि मीठी-मीठी चुभन भी हो और हसी की गुदगुदी भी आती रहे ।   व्यंग्य का यह मतलब मन कभी नहा निकाला कि उठाओ पत्थर और बरहमी स दे मारा!

कभी इतना कठोर हुआ होता तो यह इल्तजा क्या करता कि, कोई पत्थर स न मार   । गरचे किसीस दुश्मनी ही निकालनी हो तो निपटन के कई तरीके हैं—मसलन नजरो की मार या मीठे-मीठे शब्दो की मार। पहले तरीके लाइक उम्र नही रही, सो दूसरा अपना रहा हू ।

बस, अब फुरसत क चन्द लम्हो म खुदा का नाम लेकर शुरू कीजिये और झेलते चले जाइये ।   म यही अपने घर पर बैठा बैठा महसूस करता रहूगा कि वहां आपकी भवें तन रही हैं और कहा मीठी मीठी गुदगुदी हो रही है ।   आपकी पसद की किसी एक रचना ने भी आपको तरोताजा कर दिया तो मेरी मेहनत और आपके पैसे (या लाइब्रेरी कार्ड) वसूल ।   बस सलाम करते करते इतना जरूर अर्ज कर दू कि आज के कडवे-कसैले माहौल म किसीको पल भर की हसी बख्श देना कोई खाला जी का घर नही ।   जिन्होने अपने हिस्से के गम अपने अन्दर समेटकर दूसरो के होठो को मुस्कराहट दी है, उनका दर्जा अपने-आपमे बहुत ऊचा है ।   इस ऊचाई की किन चद सीढियो तक म पहुच सका हू, इसका फैसला आपके हाथो मे है ।   शेष शुभ ।

आपका
के० पी० सक्सेना

इत्र के दाग-सा मेरा लखनऊ

गुलो गुलजार व बागो बहार शुरू करता हू किस्सागो व अफ्साना-निगार हजरत पडित अमृतलाल नागर साह् की हवेली वाला के नाम से जिनन 'पीपल की परी' मे कुछ यो कहा है, 'बनाया अल्ला ताला ने यह जहान, उसमे मुल्क हिन्दोस्तान, जिसके उत्तर की तरफ डाल दी इठलाती-बलखाती नदी गोमती और उसके किनार आबाद कर दिया शहर ए-लखनऊ कि कनकव्वे उडाओ और शीरमालें खाओ।"

तो ए हुजूर ! खुदा झूठ न बुलवाय, गलत होठ न खुलवाये, हम भी बाल-बच्चेदार हैं ! जो कुछ कहेगे, सच कहग ! सच के अलावा कुछ कहना होगा तो कही और कह लेंगे, मीलो लवा लखनऊ पडा है कहने-सुनन का। पुरानो का कहना है कि इस शहर ए लखनऊ मे नाबदान-नाबदान हिना महकती थी—कुलिया कुनिया जूही गमकती थी पर अब तो हुजूर, गामती के पक्के पुल से नीचे मनो पानी बह गया। सारा जलवा ढट गया। फश-ए मखमल ता दूर, खडजा भी न रहा ! अलबत्ता छिनने के लिए पाव अभी बाकी है !

कहते हैं हुजूर, कि पहले अवध का खूटा फजाबाद म गडा था और नवाब बरहान उल-मुल्क नशापुरी वही पे कैंपिटल बनाये हुए दिल्ली दरबार की सीढिया तोड रहे थ ! नवाव शुजाउद्दौला से बरदाश्त काहे को होता ? सो हुकूमत का पाया लखनऊ घसीट लाये और तभी से लखनऊ की जुल्फा म चमेली का तल महकने लगा।

गदर और तोप-तलवारें अलग, घुघरुओ की रुन झुन अलग ! मरत

मर गये मगर पाव मे कामदानी की जूतिया वगैर महल न छोडा। तोपें दगी मगर जवाब न दिया। कहते है कि तोप के बैरल म उसदीदा बटेर अपने अडे से रही थी! तोप दगती तो अडे बेकार हो जाते! चुनाचे लखनऊ उजडवा दिया, मगर बटेर की नस्ल आज भी सही सलामत है। यह दूसरी बात है कि आज चोच का चारा चुग्गा नसीब नही।

फिर भाड नक्कालो मीरासनो डोमनियो और शोहदो का दौर आया। तालिया चटखी और वह गुल गपाडे उडे कि अल्ला दे और बन्दा ले। नाजुक मिजाजी ऐसी कि तीन घर उधर मूली पके तो तीन घर इधर वाले को मार जुकाम के छीकें आने लगें। भाडो ने चुन चुनकर नकल उतारी और शान दुशालें ओढकर टने। एक भाड थे मिर्जा कायम। दरबार म पहुचकर दुआ पढी, खुदा नवाब साहब को सलामत और बगम को कायम रखे।" चोट हो गयी। दूसरा मतलब निकलता था कि बगम को कायम भाड रख। तौबा! आज का जमाना होता तो मिर्जा कायम का पाजामा तक फुक हो जाता! नवाब अली नकी खा खिलदार थे। कायम को सिक्का से भर दिया। कहा गया मेरा लखनऊ ?

उधर डोमनिया मीरासनें जनाने म थाप ढोल बजाकर बेगमों के इश्क की महीन महीन बखिया उधेडती और मुह भर भर इनाम पाती। हर ड्योढी की अलग मीरासनें थी, जो श्यक के राज तो दूर यह तक जानती थी कि फला बेगम के पेट म कौन सी दाल पडी है—और अल्ला रखे, कौन-सा महीना चल रहा है।

अब ना तवायफो का सलीका, नमकीन जवानी, रख रखाव और ठसक गिनाने बठू तो मीलो कागज खप जाय। अकेली जोहरा और मुशतरी ही बेजोड थी जिनका गला खुद अल्ला मिया ने अपने हाथो से ढाला था।

कहा गया मेरा लखनऊ ?

महफिलें जमती थी तो टना पीकदान खुशबूदार पीको स लबरेज हो जाते थ। गजल हजल, मसनवी हरजिया रख्ती मसिया, सोज दास्तानगोइ फबती तुरकती ध्यान, मुशायरे और न जाने क्या-क्या!

हर शाम हर डयाढ़ी पर एक मुशायरा। चवेली की लडे लिपटे पेचवान, नन्ही मुन्नी कोरी हाडिया मे लाल लिहाफ ओढे तोते के बच्चो जैसे पान। वाह वाह उड रही हैं! चोट पर चोट जुड रही हैं! जनानिया अलग पर्दे म हर शेर पर बल खा रही हैं! गगा-जमनी इत्र-बस रूमाल हिला रही है! तबा दहक रहा है, लोवान महक रहा ह!

अब जा उन्ही ड्योढिया पर नजर डालिये तो प्याज के भाव और कट्रोल के गेहू की चर्चा सुनाई देती है।

कहा गया मेरा लखनऊ?

हाय! लिबास याद आता है तो अपनी शर्ट का गरेबान फाडने को जी चाहता है। नामा, जामा, बालाबर अगरखा, चपकन, अचकन, शेरवानी! टापिया ही किस्म-दर किस्म—दुपलडी नुक्केदार, मन्दियल, जरनली कुल्ला, शिम्ला, तुर्की तौवा! जनाने तन पर चोली अगिया सलूके चौदह किस्म के पाजामे, बाईस कटानो के दुपट्टे! इत्र-सन्दल, अलग स! बगल से गुजर जाये तो पिछली तीन पुश्तो की रूह तक महक जाय! छडी हाथ मे सभाले, बचते-बचाते सुर्मेदानी बने चले जा रहे है। अब उन्ही सडको पर मावडा चाल बेल-बाटमे नजर आती है। बाटम अल्ला न दी नही, बेल का कहीं नाम नही! तीन तीन रगो की प्योदही बुशशर्टे! न कमर न सीना! नजदीक से नजर डालने पर भी नायिका भेद पल्ले नही पडता कि वह आ रहे हैं या आ रही हैं?

कहा गया मेरा लखनऊ?

इसी लखनऊ की जनानी ड्योढी पर शादी गमी देखते बनती थी! हर चीज मे एक अदा, एक नफासत! छट्ठी, बीसवी चिल्ले नहान अकीका खीर चटाई, दूध बढाई बिस्मिल्ला, खतना और शादी की तकरीबें। मर गये तो मय्यत फातिहा, चालीसवें मे भी एक वजेदारी!

अब तो बस जच्चा बच्चा अस्पताल से ले आये और पिल्ले जैसा पाल लिया! मर गया तो कधो पर लादकर छुट्टी कर दी! न मरने वाले को मजा आया न कधा देने वालो का! कहा गया मेरा लखनऊ?

पहले हथेलिया पर निकाह की मेहदी रचती थी तो पहलौठी के बच्चे तक हथेलिया महकती थी! अब तो बस थोप ली, छुट्टी हुई! कही कही अल-

बसा रह गयी है !

हुजूर ! खाने पर आइये तो नाम सुन सुनकर मुंह राल से भर जाये !
शीरमाल बाकरखानी नान जलेबी पराठे, मलीदा दूध की पूरियां, पुलाव शाही टुकड़े फीरनी, जर्दा मुतजन सफेदा कोरमा, शामी कबाब ! तौबा ! अब तो इतनी खाली रकाबियां भी मयस्सर नहीं ! बावर्चीटोल वाले दूल्हन मियां सिर्फ बहत्तर किस्म के चावल पकाने में माहिर थे ! गाजीउद्दीन हैदर की बेगम को पराठे पसन्द थे ! शाही रकाबदार ६ पराठों में तीस सेर घी खपाता था ! अब जो तीस सेर घी के सिर्फ नाम जोड़ने को कहूं तो तीन दिन गश न टूटे ! बच्चे दिल का हो तो रकम सुनकर दम तोड़ दे ! कुछ जमाने ने तोड़ा कुछ हाजमे ने ! दाल भात भकोसा और दफ्तर निकल गये ! मोहल्ला बावर्ची टोल की हाथी कद देगें औंधी बेकार पड़ी हैं ! कहां गया मेरा लखनऊ ?

बाजियां थीं कि गिनते गिनाते पसीने छूट जायें ! लखनऊ की बनबयां काकोरी में जाकर लड़ती थीं ! एक थी जली खुर्शीद ! बला की हसीन ! शोहदों ने चेहरा तेजाब से जला दिया ! छत पर आराम कुर्सी में सात सात पेंच लड़ाकर नाम कर गयी ! तीन तार मांझे से सात-सात पेच काटे। अब न अंगुली में दम न कलाई में ! पतंग बाजी सिर्फ बच्चों के हाथ में रह गयी। बटेरें कबूतर, लाल गुलदम बकरे खा-पीकर हजम कर डाले। नामलवा नक्खास का बाजार रह गया जहां बुर्कों में मढ़ी मुर्दा सूरतें दुकानों पर मोटरों के पुर्जे और पुराने टाट, और फुटपाथ पर नंगी कोकशास्त्र और फिल्मस्टारों की फोटुएं बची हैं ! कहां गया मेरा लखनऊ ?

घूंघरदार चमेली-सजे इक्के ढूंढ़े नहीं मिलते ! तांगा और घोड़े के ढांचे नजर आते हैं ! पान की दुकानों से तकल्लुफ का चूना लग गया ! दूसरा पेचवान धुआं हो गये ! चिलमन और चिकन की तहों में अच्छी सूरतें न जाने कहां चली गयीं ? न बहवलें न इश्तहारबाजियां ! न नजरें न दुपट्टे ! मन्मार सा कपड़ा में चश्मा चढ़ाये जनानों को भला कौन छेड़े ? फिर यह भी अदला बदली में कि कहीं साहबजादी के भेस

मे साहबजाने न हो और टुकडेबाजी पर पानी फिर जाये ?

ऐ हुजूर, जिसे देखिये उसीका काफिया तग है ! कौन शेर कहे कौन सुने ? न आदाब का सलीका, न साहब सलामत का ! अब्बा रह नही, पप्पा हो गये ! मुह गाल करके बाप का 'पप्पा' कहगी तो यो लगेगा गाया कुत्ते के पिल्ले को बुला रही हैं। बचे खुचे तरहदार लाग दौलतखाना पूछते हैं ता लगता है किराये के काबूकनुमा फ्लैट का मजाक उडा रहे हो ! तीन महीन से किराया नही गया, छत टपक रही है गुसलखाने म पड पौधे उग आये हैं और वह दौलतखाना हो गया। आदमी दो टकिया की नौकरी कर रहा है फिर भी पूछेंगे कि हुजूर का शुगल क्या है ? अब भी कुछ ऐसे दिलजले पडे हैं कि घर म मुर्गी का दाना मयस्सर नही, और नाम बजता है 'फिद्दन खा साहब हाथीनशीन !'

बस हुजूर, इद बकरीद होली दीवाली कुछ पुरान नजर आते है कि हथेली मे जूतिया दबाये ईद मिल रहे हैं। सिक्न मीना कुन्दन हाथी दात इत्रसाजी अब भी हैं मगर कमीज मे बटन जसी। फूलो के हार, गजरे, सहरे लडें अब भी सजती मगर वह खुशबुए नही ! नाम लेने को इमामबाडा, बारादरी, रेजीडेंसी अब भी कायम है कि हा, हम भी कभी इत्र मलत थे। चार बाग स फिटफिटी पर बैठकर, दिन काटकर फिर चारबाग लौट आइय मगर एक भी खुशबू इस लखनऊ के नाम पर सुघाई दे जाये ता मेरा नाम बदलकर फन्ने खा रख दीजिये !

तसल्ली क नाम पर सिफ मोहरम बाकी है जो अब भी लगभग जू का तू होता है और दसदिना का लखनऊ जरा जरा लखनऊ हो जाता है।

और होली ! वह ता बस हो ली ! इसी त्योहार मे शहर के नाबदान तक टेसू स रग जाते थे और गली गली गुलाला के ढेर लग जाते थे। अब तो होली खेले चेहरो पर भी त्योहार की रौनक नही, बल्कि बाप के दसवें का मातम झलकता है ! गोमती या ही खामाश बह रही है ! इमामबाड सिर उठाये खडे है ! रजीडेंसी के खडहर बरकरार है ! मगर मेरा लखनऊ कहा गया ?

चुनाचे ए हुजूर ! हमने हर पहलू से गोमती दख ली ! नया

लखनऊ हिप्पीकट जुल्फा का मुबारक ! पुराना हम बेल रहे है और पढ रहे हैं

वह दिन हवा हुए कि पसीना गुलाब था,
अब इत्र भी मलो तो पसीने की बू नहीं !

अच्छा हजरत ! आदाब अर्ज !

जायेगी जरूर चिट्ठी

ए लल्ला राजू, तुमे किसना वहू का और तरे लडका-बच्चन का गनेम जी सुखी रखें। लल्ला। जे चिट्ठी इत्तें घरेलू ढग से तुझे इस मारे लिख रई हू कि तेरे दद्दा पिरथीराज जब पले पैने डिरामा लैंके हमारे सहर मे आये थे तब लल्ला, तू बिल्कुल छोरा जैसो रह या। उसी साल मेरा व्याह भया रह्या, सो गोकुल के दद्दा मुझ डिरामा दिखान को लै गये उ हींन मुझमे बतायो कि जे छोकरा पिरथीराज जी को बडा लडका है। तब तेरो रूप बडो सलोनो रह यो इत्ती पुरानी बात को लके मैं तेर को 'लल्ला' कह के चिट्ठी लिखाये रही हू।

अब तू जाने लल्ला, कि मैं रामदेई ठहरी सात ऊपर साठ की। गनस जी के दिये भय लडके, बहुए नाती पोता घर म ह गोकुल और उसकी वहू जनकदुलारी न कई दफै तेरी फोटुए अखबार और किताबन मे छपी भई दिखायी। मुये जे भी पता लग गया कि तून बहुत से सनीमा पिच्चर बनाये हैं जा खूब चले हैं मैं ठहरी पुरानी मिट्टी की। चूमा-चाटी और इसक पिरेम के सनीमा जब गोकुल के दद्दा के साथ ना देखन गयी तो अब भला सन से सफेद बाल मूड पे धर के देखूगी। अलबत्ता भक्तीवाली पिच्चरें कई दफै बहुए दिखाये लायी। गुजरे बरस सतोसी माता वाली पिच्चर देखी।

परसो गोकुल की बहू ने जिद्द पकड लई कि अम्मा, 'सत्तम, सिवम्, सुंदरम्' लग गयी है। चन के देख आओ नाम सुनके ही मुझे यो लगी जन मजीरा-खडतालें बज रई हैंगी। एक फोटू भी देखी कि मदिर म

भजन आरती हाए रही हैगी । ऊपर स जब जे पता भयो कि पिच्चर राजू लल्ला की है तो चाना गऊ गोबर सो पवित्र होय गयो । खुसी भई कि चलो अब लल्ला भी अधड़ होय गयो है सो धरम करम की भक्ती पिच्चर वाली लाइन पकड़ लई हैगी । गोकुल कटाय लायो पाच टिकट । उसकी जोरु छाते की बहुए वे दोनो और मैं । देख लई पिच्चर तरी । साफ कहू और बुरा लग तो एक पराठा कम खइया । मन म कडा जस सुलग गय धुआ भर गयो, सो चिट्ठी भिजवाये रही हू । पिच्चर भर बहुए मुझस मू छुपाती रही और मैं बहुअन स । कड़वा लाग तो लग । म तरी ताई सरीखी हू ऐसो खपसूरत भक्ती छाप नाम रख क एमी नगई ? मुझ तो बुढाप म एसा लगा लल्ला जस गोकुल के गोलोकवासी दद्दा मुझ बहुअन के सामने छेड रय हैं और मैं सरम स मू छिपान की जगह ढूढ रही हू सकर भगवान को नाम बीच म डाल क एमो छिछोरपन ?

पुजारी की धी (लड़की) को एमो पहनावा ? हमारे होया तो महरी कहारिन रात म खसम क सामने भी न पहनें । गाव की और सारी धीए (लड़किया) तो ढग का लहगा चोली लगाये हैं मगर रूपा लत्ता नपट घूम रही हैगी न बाप की सरम न गाव की लाज । पेट ढाडी (नाभि) जाघ पीठ सीना सब निगोड़ो खुलो धरो है । लल्ला तू मर स उमर म छोटो है सो लिखावत लाज लग है । गोकुल न बाद म कह या कि पिच्चर बालिगन क ल है । मैं पुच्छू हू कि क्या बालिग मरद औरतन ने लाज सरम बच खायी है ?

राजू लल्ला । गाव की मैं भी हू । गाव देहात की हर खुसबू बदबू स वाकिफ हू । पर मैंन एमी बसरम छोकरी न देखी कि शहर क अजीनर (इजीनियर) का घसीट के खाडो म ल जाव । मुझ तो ऐसा लग है लल्ला कि तेरी आखिन म गाव की छोकरी गुड जसी मस्ती है । जिसे चाहे तन गोप दे । खपमूरत और कडियल छोरे गाव म भी होव हैं । तरे अजीनर भय्या (शशि कपूर) क मन म कौन-स रसगुल्ला लटक हैं कि भरे बजार म छोकरिया का क पीछ जवानी कटारी म रस दौड रही हैंगी ? अब जरा अपनी रूपा क तन भय चद्दर का बात भी ल लो। लल्ला । जब मरे

छुटकन की पसनी (वालक को अन्न खिलान की रस्म) की दावत भई रही थी तब कढईया प पूरी छानने में ही वैठी थी। लाई चिकनी करने टाली तो छपाक से खौलतो भयो घी मू पे आये। एक तरफ को सारा चहरा मारे फफोलन के चियडा होय गयो। मगर गोकुल के दद्दा ने का मुझे पहचानो नाय या घर से निकार दयो ? मरद अगर मरद है तो पूरो जिसम जल जान पर भी अपना मेहरिया को पहचान लेवे है ! तेरे राजीव न कौन-से खेत के आलू खाये थे लल्ला, कि अपनी पिरान पियारी की पहचान भूल गयो ? मेरो गोकुल ता हजारन की भीड म अपनी पुरानी साइकल तक पहचान लेव है ! तेरा राजीव रूपा का पहचान भी है तो गान मे ! अब भला जिसकी बहू गाना वजाना न जानती होवे वाके मरद की तो हाय गयी छूट्टी !

राजू लल्ला ! मेरे गोकुल के दद्दा ने जिस टैम प धरती छोडी थी तब से हफ्ते भर तक का धीए बहुए बिलकती रहे थी। तेरी रूपा का पुजारी दद्दा मरा और वो थोडे टैम अगाडू मटक-मटकके गा वजा रही हैगी। निगोटा बाप न भया, मुर्गी का अडा भया कि आज फोडा, कल दूसरा दिन ! और देख लल्ला, गाव समूचा पानी म तिडी भया जाय रहा है और अजीनैर जा ह सो रूपा के पिछाडी को भागता फिर रया हैगा। ऐसी अजीनरी से तो चौकस था कि सावुन कटारी लै के कही हज्जामी कर लेता !

जव तेरी पिच्चर खतम भई तो बहुए ऐसी लजाए सरमाए रही थी जम मैं बिन बताए उनके बरोठे (कोठरी) मे चली गयी होऊ ! गोकुल और छुटकन अलग को नीले पीले भये जाय रहे थे कि ऐसी पिच्चर म अम्मा को वफ्जूल लै आये। तेरी रूपा की उघडी देह दसा और लप्पा झप्पी दखके मरे सोहदे तो सनीम म टुर टुर सीटी वजाये रहे हैंगे और मैं मरी बहुअन वटन से मू छुपाए राम नामी जप रही हूगा कि गनेस जी जे फूहडपना जल्दी चुक्ता करो !

राजू लल्ला ! गगा मैया के असीरवाद से धीए बहुए बेटे तरे कन भी हैंग। लल्ला, क्या तू उन सबके साथ वैठ के अपनी पिच्चर के चटकारे ले सकै है ? गोकुल ने मा को बताई तो मन यकीन न भया कि वह अजी-

नैर छाक्रा नेरा सगा भय्या हैगा   तल्ला, बडे लोगन की वडी वातें ! मरा छुम्कन तो गोकुल क सामने अपनी तीन दर्फ की लडकौरी वहू स म खोल के वात न भर सक है !

खर भय्या, तरी पिच्चर तुझे मुबारक !   मने ता वस इत्ती सिका यत हगी कि इत्ती नगइ वाल सनीमे का नाम इत्ता खपसूरत काहे को धर दिया ? मरी जसी बुढिया ठुडिया तक जाके लटक गयी ! काई वसा ही मरा चूमा चाटी वाला नाम होता तो अपन गुपाल जी की आरती छाड के मैं काय को जपनी आखें फोडती और मन खराब करती। घर म चूहा मर जाय ता वामन को लडडू जिमा के गनस जी से छमा माग लेयू ! ऐस मनीमे का पिराच्छित (प्रायश्चित) किस तरिया होवे ? मैंने ता गगाजली उठाय नइ नल्ला कि अब किसी भकी पिच्चर म भी जाऊ ता पहल से ठाक वजाय के देख लेयू कि लफगई नही हैगी !

किमना वहू को असीम ! बच्चन का गनस जी सुखी रखें !

तरी ताई सरीखी

रामदेई, मारफत गाकुल परमाद सरकारी मुलाजिम सहर—नखलऊ

मरने का कायदा

एक दफे बाबू जी के टाइम मे बारिश हुई थी। तब मैं आठवी जमात म था। अंग्रेज ताजे ताजे हिंदुस्तान से चले हुए थे और अपनी बुनियाद छोड गए थे। तब हम लोग बरसाती पहन, हैट के ऊपर मोमजामा बंधवाये बारिश म घूमते थे। वैसे बारिश म घर बैठना अच्छा लगता है। मगर बाबू जी हम लोगो को पानी मे छोड देते थे ताकि मुहल्ले वालो को यह तो मालूम हो जाये कि उनके बच्चो के पास भी बरसाती और हैट-मोमजामा वगैरह ह। उन दिनो हैट वगैरह जरा इज्जतदार चीज समझी जाती थी। बाबूजी के बडे भाई (जिन्हे हम बडे बाप कहते थे) घर म भी बनियान-टाई वगैरह फिट रखते थे। हम बखूबी याद है कि वह मरते वक्त भी थ्री पीस सूट पहने थे और तितली छाप टाइ बाधे थे। लोगो न उनसे कहा भी कि भई, अब तुम मर रहे हो। सूट वगैरह क्या खराब करते हो? चन्द घण्टा बाद मेहतर को दे देना पडेगा। अंगोछा पहनकर मर जाओ। मगर बडे बाप ने दोस्तों को डाट दिया, ' मर मैं रहा हू सास आपकी खिच रही है? मैं सूट पहनकर मरू या लगोटी बाधकर, आपसे मतलब? मेरे मरने के बाद जाहिर है कि दस बीस मुहल्ले वालिया रोने आयेंगी। सूट पहने रहने से जरा राव रहेगा। आप लोग चीं चपड मत कीजिये। मुझे जरा ढग से मरने दीजिये।"

इतना कहकर उन्होंने पासिंग शो की एक सिगरेट पी और मर गये। पहले हम लोग समझे कि अभी नही मर है। सब एक दूसर का चेहरा देख रह थे कि रोना शुरू कर या अभी रुके रह? बाबू जी इस उम्मीद मे

थे कि शायद वह अभी एक सिगरेट और पियेंगे। मगर वह नहीं उठे। पण्डित जी को बुलवाया गया। उन्होंने स्लेट पर कुछ हिसाब जोड़ा और डिक्लेयर कर दिया कि मुंशी नौबत राय अहलमद मर गये हैं। तब कहीं जाकर हम लोगों ने बाकायदा रोना शुरू किया। आजकल धर्म पर से लोगों की आस्था उठ गयी है। कोई मर भी चुकता है तो भी उस वक्त तक उसे मरा हुआ नहीं मानते जब तक डाक्टर मुआइना करके न कह दे कि मर गया है। डाक्टर के आने तक घर वाले भरे हुए ईमान से उसकी पासबुक और जमा फण्ड के बारे में पूछते रहते हैं। डाक्टर की घोषणा के बाद खून का घूट पीकर, मजबूरन दहाड़े मारना शुरू कर देते हैं। मेरे बचपन में मरे हुए को मरा साबित करने के लिए डाक्टर नहीं आता था। पण्डित जी बुलाये जाते थे जो कुछ देर मुंह ही मुंह में कुछ बुदबुदाकर मरने वाले के मुंह में गंगाजल या सिर्फ नल का पानी छोड़कर घोषणा कर देते थे कि जाते रहे। इस पत्थर की लकीर मानकर सामूहिक रुलाई शुरू हो जाया करती थी। अब चाहे मरने वाला भी खुद कहे कि भई, ठहरो। अभी हम थोड़े बाकी हैं। मगर कोई नहीं मानता था और धारावाहिक रोना चलता रहता था।

आप इसे गल्प ही मुबालगा समझें मगर मेरे लड़कपन का चश्मदीद वाकया है। हमारे मुहल्ले की एक नानी अभी पूरी तरह मरी भी न थीं कि पण्डित जी डिक्लेयर कर गये। उन्हें जरा मुहल्ले में भी जाने की जल्दी थी। अब यहां यह आलम है कि पूरी एक बटालियन औरतें नानी के पार्थिव शरीर पर रो रही हैं और चद्दर तले नानी खुद भी रो रही हैं कि निगोड़ा को मर मरने की इतनी जल्दी थी? इसी गम में लगभग बीस मिनट तक नानी खुद अपनी मौत पर सबके साथ रोयीं और रोते रोते मर गयीं। उनके इकबालिया मरते ही सबने रोना बन्द कर दिया था और सुस्ता रहे थे।

आहिस्ता-आहिस्ता मैं जवान हुआ। अंग्रेज हटे, कांग्रेस आयी कांग्रेस गयी जनता आयी मगर मरने का सलीका और तहजीब धीरे धीरे गिरता ही गया। जिस तरह जिन्दा रहने की आपाधापी और हबड़ दबड़ बढ़ती गयी उसी तरह मरना भी बड़े ऊल जलूल ढंग से होने लगा। पहले

के शेर और कविताई गवाह हैं कि आशिक उस वक्त तक नहीं मरता था जब तक माशूक खुद उसके सिरहाने आकर चेहरे पर अपना आंचल न डाल दे। अगर माशूक परदेसी हुआ और उसकी ट्रेन लेट हो गयी तो आशिक सांस खींचे पड़ा रहता था और रह रहकर दोस्तों से पूछता था कि भई, वह अभी आये या नहीं ? कब तक वेटिंग लिस्ट में पड़ा रहूं ?

मौजूदा हालात का जायजा लीजिये तो पता लगता है कि लोगों को ढंग से मरना भी नहीं आता। कुछ लोग मर जाते हैं तब लोगों को पता लगता है कि वे जिन्दा भी थे। दूसरी तरफ कुछ लोगों को सांस लेने का इस कदर शौक होता है कि लोग चाहते हैं वे मर जायें मगर वे हैं कि सांस की कण्टीन्यूटी बनाये रखे हुए हैं। सिर्फ एक अच्छा पहलू है आज के मरने में—कण्डोलेंस या ताजीयत यानी श्रद्धांजलि। जिन लोगों को कभी कोई श्रद्धा नहीं रही वे भी लाइन में खड़े हो जाते हैं और सिर झुकाये कनखियों से ताड़ने जाते हैं कि दो मिनट का मौन पूरा हुआ या नहीं। उसके बाद फोकट की छुट्टी। मेरा ही अपना बास कई साल पहले बीमार था। सब कहते थे कि आखिरी ओवर खेल रहा है। उधर मेरे बीवी-बच्चे कई दिन से गर्दन दबोचे थे कि मैटिनी शो दिखा लाओ। मैं यह कहकर टालता आ रहा था कि आजकल में बास खच होने वाला है। कण्डोलेंस वाले दिन मैटिनी शो चलेंगे। मगर हुआ यह कि पिक्चर आयी, चली गयी। बच्चे जवान हो गये और बास आज तक मजबूत चल रहा है। मौत के मामले में ऐसी बेईमानी मुझे कतई पसन्द नहीं। अरे भई, मरना है तो शराफत से मर जाओ। झोल क्यों देते हो ? दूसरे के चार काम अटके रह जाते हैं खामखाह। पुराने वक्तों में मरने वाले ऐसे घपले-बाज नहीं होते थे।

मैं सास को याद करता हूँ

जाबिर के वालिद मेरे बाबूजी न और जाबिर मुझसे हमेशा चिन्तित रहे।

अभी पिछली शाम हम लोग मूगफलियां पर बैठे राजनीति को डिस्कस कर रहे थे। जाबिर अचानक राजनीति से हटकर बाबूजी पर आ गये और मुझे लताड़कर बोले तुम आजकल अपने घर वालों की पीठ पर बहुत गुड़ मल रहे हो। पहले रचनाओं में बीवी का ताने थे अब बाबूजी को ताने लगे हो! चाहते क्या हो?

उनके पूछने का अन्दाज कुछ ऐसा था जैसे जो चाहोगे वही मिलेगा। मैंने उन्हें समझाया देखो जाबिर, बीवी की कदर जीते जी करते रहना धरम भी है और रोटियों का जुगाड़ भी। बाबूजी की कदर उनके मरने के बाद समझ में आयी कि एक अदद बाप का न होना क्या मान रखता है! मगर हर साल फरवरी भर मैं सिर्फ सास को याद करता हूँ! लोग पितृ-पक्ष भर मां-बाप को पानी चढ़ाते हैं मैं फरवरी भर सास की याद में बिला वजह आंखें पोंछता रहता हूं।

क्यों? सास का फरवरी में क्या ताल्लुक?"

जाबिर तू सासहीन है, नहीं समझेगा! अपने सुशील कालरा (कार्टूनिस्ट) को देख। पोर पोर सासीय पीड़ा से पीड़ित है उसका। उसकी रचनाएं पढ़कर और सास के अत्याचार सुनकर मीसा युग का बोध होता है। कैसी कैसी यातनाएं भोगी है दुखिया ने! जाबिर तेरे वालिद के भी अगर सास हुई होती तो तुझे अन्दाजा लग जाता! खैर, मेरी सास परम्परागत मामेज जैसी नहीं थी! उम्र इतना छोटा था कि बाबू जी उन्हें

प्यार से 'फरवरी' कहा करते थे। यह भी एक कारण है कि फरवरी भर मैं सासियाना गम म मुब्तला रहता हू। यो तो मेरी शादी के हालनाक हादमे को गुजरे २६ साल होने का आये, मगर याद ए-सास अब भी ताजा है। उनके छोट से चेहरे पर वही ताजगी थी जो फरवरी के महीन म होती है। टेम्परामेंट भी फरवरी था मरहूमा का। न सद, न गम। आम सासो की तरह उन्ह मेरे और मेरी बीवी के इश्क मे खलल अन्दाज होने की आदत न थी। फरवरी के लीप ईयर की तरह हर चौथे साल हमारे यहा आती थी और मेरे ताजा बच्चे की मालिश वगैरह निपटाकर चली जाती थी। जिस तरह लीप ईयर फरवरी का एक दिन बख्श जाती है, मेरी सास की आमद मेरे कुनबे को एक फद बख्श जाती थी। फरवरी मे तीन दिन पहले प' मिलन पर जो खुशी होती है, वही मुझे खुशदामन साहबा (सास) के आने से होती थी। उनके रहते तक मैं बच्चो को नहलाने और उनकी चड्डियो के नाडे ठीक करने से बचा रहता था। अब तो ऐसी सासे मिलती ही नही। उनके इन्तकाल के बाद लाख कोशिश के बावजूद मुझे वैसी सास न मिली। चुनाव चिह्न के गाय बछडे की तरह सास को बीवी से अलग हासिल करना कठिन था। एकाध सासें पसन्द भी आयी मगर शर्त थी कि बीवी भी अपनाओ तब सास मिलेगी। बीवी तो मेरे पास बाकायदा थी सिर्फ सास चाहिए थी। कोई सास राजी न हुई।'

मगर वह फरवरी और सास का क्या घपला है ?" जाबिर बोले।

"घपला नही, गहरा ताल्लुक है। काफी कुछ तो बयान कर चुका ही हू। मो मुझे सास मिली भी फरवरी मे थी और इन्तकाल भी फरवरी मे ही फरमाया। सास के खत्म हो चुकने के बाद मेरी बकाया औलादें भी फरवरी म ही हुई और याद ए सास सताती रही। हाय, कुछ फरवरिया और चल जाती तो ठड मे पोतडे क्यो छाटने पडते ? जी कचोटता है मेरा कि जब सास न रही तो फिर फरवरी क्यो आती है ? साल के ग्यारह महीने भर गैर की बीवी के बनाव सिंगार पर भले ही आख उठ जाती हो मगर गैर की सास का ध्यान नही डालता। अलबत्ता फरवरी भर सिर्फ सासो के ही श्री दर्शन करता हू। अडोसी पडोसी कैसे इठलाते फिर रह है फरवरी भर घर मे सास जो है। खूब सनीमे देखो बीवी के साथ। कभी मेरी भी थी।

अब किसीका खाक नसीब होगी एसी सास। डेढ सौ क करीब सासें मरी ही कालोनी मे ह मगर वह न्ही मुन्नी बूढी ही और थी जो मेरी सास हुआ करती थी। खुद मरहूमा का फरवरी बेहद पसद थी। उनकी न्ही सी इक-लौती नूरचश्मी (जि ह बाद म हमार हिस्से म आना था) फरवरी म ही धरती की रानक बनी थी। यह दीगर बात है कि बाद म उ हे अपन पप्पू जी (हमारे ससुर) जैसा ही जून सरीखा खुश्क और गम मिजाज मिला। जाविर काश नून कभी फरवरी आई मीन मदर इन ला का देखा होता! मरने दम तक इनला (कानून के अदर) रहो। कभी सख्त बात नही कही। एक बार भी आउट ला (डकैत) हाने की काशिश नही की। मुझ बेहद चाहती थी (दीगर सासें नाट कर!) हर फरवरी के फरवरी मेरे लिए कोई न कोई गरम कपडा बनवाती रही। कई बार मुझ बीबी के सामन स्वीकार करना पडा कि उनकी सास से मेरी सास कही ज्यादा अच्छी है। अम्मा न सुना तो हस दी कि मैं मुरीद ए सास होकर रह गया हू। बुरा क्या है? एक अदद अच्छी सास इवेस्टमट कम्पनी के इनाम जसी है। डेढ दजन शादिया करे कोई तो कही जाकर एक सास अच्छी निकलती है। जाओ जाविर अट्ठाईस फरवरी की शाम ढल तक कही से बीस सास ले आओ! लोग बीस ब्राह्मणा का खिलाते है मैं बीस सासा का खिला पिला कर दामाद होने का पुण्य कमाना चाहता हू!''

मिल जायेंगी! जाओ खाना पकवा रखो!'' जाविर न ठडी सास भरकर कहा।

कहा?' मैंन हैरत स पूछा।

मुझ बदनसीब के यहा उपलब्ध है। दात मत निपोरो। मैंन बीस शादिया नही की मगर सास एक अदद ही बीस के बराबर हासिल हुई हैं। कम कामन और डीनडौन म निसम्बर दिमाग से मई और पैसा खच करने में फरवरी! मैं उ हें लेता आऊगा। तुम बदोबस्त बीस सासा की खुराक का ही रखना। अल्लाह ने चाहा तो जूठन न बचन पायगी! न जान वह नव घडी कब आयगी जब हम भी गम ए सास म फकीरो की खिलायेंगे! मुशील का जरा का और मरा दम बराबर का ही है!''

जाविर ठडी सास भरकर चल गय।

अथ श्री इस्तीफाय नम

हमारा देश एक इस्तीफा प्रधान देश है। जितनी नौकरिया नही लगती उसमे अधिक इस्तीफे दिये जाते है। त्याग और स्वार्थ रहित सेवा की ऐसी मिसाल परलोक म भी नही मिलेगी। काश, मुझे इस देश की राजनीति की जरा सी राख मिल जाती तो भभूत मलकर और सिर पर हरी झडी बाधकर विध्याचल मे खोपडी घुटा आता।

खैर, मैं इस्तीफे की बात कर रहा था। हमारे देश मे अनाज की दो फसलें होती हैं रबी और खरीफ। इसी तरह राजनीति की दो फसलें होती हैं—चुनाव और इस्तीफा। पहले चुनाव, फिर इस्तीफा, फिर चुनाव फिर। यह सास्कृतिक कार्यक्रम होता रहता है। जनता दोनो हाथो से अपना पेट पकडे यह तमाशा देखती रहती है। इसपर मनोरजन-कर भी नही पडता। जिसे जाना होता है वह कह देता है कि भई इस्तीफा माग लो। अगला माग लेता है और वह दे देता है। यह इस्तीफा राष्ट्रपति के पास भेज दिया जाता है। इसे मजूर करना और नयी भर्ती वाले का शपथ दिलाना, यही दो काम होते हैं राष्ट्रपति के पास। मेरे ख्याल से अगर राष्ट्रपति जी शपथ दिलाने के साथ ही अग्रिम इस्तीफा भी ले लें तो उनका भी काम कम हो जाये और पब्लिक भी बिना वजह की नौटकी देखने से बच जाये।

जो धरती पर आया है उसकी एक दिन 'राम नाम सत्य है' होनी है। जो राजनीति मे है उसे एक दिन इस्तीफा देना है। ये दोनो बातें शाश्वत सत्य हैं। अब तो यह स्थिति आ गयी है कि अखबार म किसी नेता की

बाद म वापस ले लिया। पब्लिक हुडक गयी। चन्द दिनो के लिए अपनी भूख और अभाव भूलकर इस्तीफे म अटक गयी। अक्सर फिल्मा म भी यही होता है। खबर छप गयी कि धर्मेन्द्र मौसमी चटर्जी स शादी बना रहा ह। पब्लिक हुडक गयी कि हाय व दोनो तो आलरेडी बाल-बच्चेदार हैं! बाद म पता लगा कि स्टट है। पब्लिक खुश हो गयी कि दो घर बरबाद होने म बच गय! पब्लिक निगोडी तो गोबर है! आप इस्तीफा दें तब भी खुश वापस ले लें तब भी खुश। बहुत मा न वापस लिया फिर दे दिया। इस्तीफा न हुआ बैडमिण्टन की चिडिया हो गयी। मैंन अपने दोस्त को फिर छेडा देखा यार! दनादन इस्तीफे हो रहे हैं, तुम चुप हो? वह भडक गया। चीख-कर बोला 'भाड म गये इस्तीफे! हमने इसीलिए चुना था कि तुम तुनक तुनककर इस्तीफे देते रहो और खलबली फैला करत रहो। सारा टाइम इन इस्तीफो और शपथा मे ही निकाल दो। उल्लू के पट्ठे तो हम सब हैं कि मुह निहार रहे है कि अब कुछ होगा। कुछ दिन सुधरेंगे। कुछ जीना आसान होगा। सब एक-दूसरे का मुह निहार रहे हैं कि वह इस्तीफा दें तो हम भी दे दें। या उसने दिया है, इसलिए हम नही देंगे। सर्कस का खेल चल रहा है। यह झूला छोडा उसे पकड लिया,

फिर उसे छोडा और गडाप स जाल मे आ गिरे। दर्शको ने तालियाँ बजायी। शाबास! क्या कलाबाजी खायी है! किसीके पास दुख दर्द लेकर जाओ तो पता लगता है कि वह इस्तीफा दिये बैठा है। या देने की सोच रहा है। अब बोलो किसके बाप को बाप कहें! जिसकी मूछ का बाल नीचा हुआ वही इस्तीफा लिखने बैठ गया। किसीके चच्चा ने इस्तीफा दिया तो भतीजे हमदर्दी म रिजाइन कर आये। कोई पूछे भला कि मियाँ जब भर्ती होना था तो दरवाजे-दरवाजे पब्लिक को मा बाप कहते थ। इस्तीफेबाजी शुरू हुई तो पब्लिक मर-खप गयी! कभी पूछ लेते आकर कि हम इस्तीफा दें या रोके रहें! लौटे बराती और गुजरे गवाह को कौन पूछता है!

जनाने फरिश्ते

हम हमारी इकलौती बीबी और हम दोनो के साथ हमारी बेपनाह मुहब्बत के चार नमूने । चंदेक कनस्तर और पेट भरने का अल्लम गल्लम सामान । शहर मे यह हमारा नया मकान था । आठ बार सामान की उखाड़-पछाड़ ने हम पस्त कर दिया था । या तो हमारा यकीन सिर्फ यह था कि दुनिया मे अगर कुछ है तो बस, बीबी से मुहब्बत । मुहब्बत करने के लिए कोई लगेज जरूरी नही है । एक लोटा एक चटाई काफी है । मगर बीबी को हमारे अलावा अपने चारो डिप्लोमाओं से भी मुहब्बत थी । चुनाचे हर मकान तब्दील करते वक्त दूध की बोतलें चुसनियो, बच्चा गाडी ढेरो चड्डिया और तरह तरह के काजल की ढेरो डिबिया साथ लगी रहती थी कि इतनी दिक्कतो से गढे गये किसी नमूने को खुदा न खास्ता नजर न लग जाये। नजरबाजी मे हमारी इकलौती बीबी का इतना गहरा अकीदा था कि अगर कोई सा बच्चा भी दिन मे दो की जगह तीन बार फारिग होने बाथ रूम गया तो बजाय अमृतधारा इस्तमाल करने के, वह कजरौटा लेकर बैठ जाती थी कि टोट नजर खा गया है । हमारा ईमान गवाह है कि हमने इन रगरूटो को तरबूज, आइसक्रीम, चाकलेट और गुड की पट्टी खाते हुए बीसिया बार देखा मगर नजर खाते हुए कभी न देखा । फिर भी एक शरीफ और समझदार शौहर की तरह हमने कभी उनकी राय से चीं चपड नही की । जब जब उन्होने कहा कि तीसरे नंबर वाला नजर खा गया है हमने कहा, 'जरूर खा गया है ।" हालांकि खायी उसने मलाई की बरफ थी ।

चुनाचे, *अब तक हम आठ मकान खाली कर चुके थे।* छह हमने खाली किये दो ने हमें खाली कर दिया। मुख्तसर तौर पर ये दो मकान इस कदर खस्ता थे कि जब तक एक तरफ की दीवार पर पुताई हो रही होती थी दूसरी तरफ का पलास्तर चूने की धमक से गिर चुका होता। इन दो मकानों को रहने लायक बनाने की जिद में हम इस कदर खाली हो गये कि आये-गये को चाय पिलाने लायक न रहे। जरूरी दास्तान उन छह मकानों की है जिन्हें हमने खाली किया। इन छहों मकानों पर फरिश्ता का साया था। ये फरिश्ते मर्दाना होते तो लंगोट बांधकर हम निपट लेते। मगर मार ऊपर वाले की ऐसी कि हर जगह कुदरत की मेहरबानी के तौर पर जनाना फरिश्ता मिला। शुरू से ही शुरू करते हैं।

तोपखाना वाला हमारा पहला मकान किन्हीं मिसेज डेनियल का था। रखने वालों ने शायद मुहल्ले का नाम मिसेज डेनियल को देखकर उन्हीं की शान में रखा था। मकान उम्दा था मगर मिसेज डेनियल मकान से भी उम्दा थीं। दुनिया में तनहा थीं! पचपन बरस की उनकी नन्हीं मुन्नी सेहत का यह आलम था कि अपने कमरे में मोजे बदल रही होतीं, तो हमारा कमरा हिल रहा होता और हमें शेव बनाना कठिन हो जाता। उन्हें न जाने क्या बैठे ठाले हमारी बीवी पर बेहद प्यार आ गया और उसे अपनी बेटी बना लिया। हमें रोना यह आया कि हमें दामाद का दर्जा न दिया। बात बात पर हमें लताड़ देतीं और जरा जरा सी बात पर बाजार दौड़ा देतीं।

उन दिनों पहली बार बीवी के पांव भारी हुए थे। बीवी की खिदमत कराने के बहाने उस शिलाखण्ड बुढ़िया ने हमारा कचूमर निकाल डाला। चुनाचे नवजात का आठ पाउण्ड वाला अवतार लेते लेते तक हमारा अट्ठारह पाउण्ड वजन कम करा डाला! मिसेज डेनियल चीखती रहीं। हमने मकान तब्दील कर दिया।

दूसरा मकान इलाहीपुर में हमें लाला गोपीचंद सर्राफ का मिला। गोपी बाबू ने शायद अपने पेशे में इतने गहने न गढ़े होंगे, जितनी औलादें गढ़ी थीं! रात में दुकान बंद होने के बाद वे अपने आंगन में बीवी-

तो यो महसूस होता गोया मुर्गा मुर्गी पार्टी
वच्चे समेत रोटी खा रहे होते गोपीचद को भी हमारी बीवी
काम म अपने दर्जन। अन्दर पर बैठे हो। लेडी हमारी सिलाई की मशीन
पर प्यार उमडा। बल्कि बीवी से ज्यादा हमारी हर वक्त हमारी बीवी
स प्यार था। चुनाचे नौबत यह आयी कि गोपीचद का पूरा खानदान
बीवी कम दर्जिन ज्यादा नजर आने लगी। अपने अपने नकरों का नाप
खाना हमारे घर इकट्ठा हो और कतार बाधकर
दे रहा है। यह मकान हमारी बीवी ने छोडा।
बल्कि फ्लैट (जिसमें हम वाकई
एम० एम० रोड पर अगला मकान मिस्टर कनाडिया
फ्लैट कर दिया) किसी मिसेज कनाडिया का था। लगभग हर पाच साल बाद
शायद कही बाहर बिजनस करते थे और अपनी ताई के साथ तनहा
शायद वोट देने आते थे। मिसेज कनोडिया हम ताई समझे थे वह मेहतमम
रहती थी। बाद म पता लगा कि जिन्हें कुल जमा पचीस छब्बीस
अतिविशाल चीज उनकी बेबी थी। बेबी अभी एक शरीफ और
मान की थी और बकलगम चुभलाती रहती थी। कुछ बोझ हमारे ऊपर
इज्जतदार किरायेदार की तरह बेबी की पढाई का मगर एक शाम जब हमारी
आ पडा। यहा तक तो गनीमत थी। बजाय पढाई के बाय के
वह और मिसेज कनाडिया शापिंग पर गयी थी हमारी हड्डिया बिखरते बिखरते रह
बेबी का बोझ हमारे ऊपर आ पडा। हमपर मर मिटी थी और हमारा
गयी। बेबी निहायत फिल्मी ढग से हमने भी इश्क के सबध म काफी
जनाना उठवाने पर आमादा थी। हाथ नही लगी थी जिसमे
कुछ पढ रखा था मगर ऐसी किताब आज तक डाली गयी हो। हमने
भैस से इश्क करने के तरीकों पर रोशनी और अगली सुबह बेबी
खालिस निर्मोही ढग म उसी रात पैक अप किया
के बेहद पुख्ता इश्क पर लात मारकर चल बसे।
चौथा मकान किन्ही पदाइशी कुआरे आहूजा साहब का था।
वे खुद अपनी जगह फरिश्ता थे। मगर कभी कभी उनपर जनानपन
का दौरा पडता था और बडी बेतकल्लुफी स हमारी बीबी का पनीर के
पकौडा का नया तरीका समझाने लग पडते थे। खुद हमारी बीवी का
कहना था कि रसोई की बाबत जितनी मालूमात आहूजा साहब का थी

उतनी तो हमारी बीवी की मा को भी नही मालूम थी। धीरे धीरे आहूजा साहब कुछ ज्यादा ही जनाने मूड मे आन लगे तो घबराकर हम दोनो और हमारे चारा इस घर से भाग खड़े हुए !

इस्माइलगज वाला अगला मकान किन्ही फर्नीचर मर्चेण्ट अब्बू साहब का था ! इन्हे सिर्फ साफे बनवाने और बेटिया पैदा करने का शौक था ! विश्वस्त सूत्रा (पत्नी द्वारा) से पता लगा कि अब्बू साहब के छह अदद जवान-जहान बेटिया हैं जो शायद अग्रेजी बोलती हुई ही पैदा हुई है। हर शाम उनके छहो प्रस्तावित दामाद सूटो म कसे, स्कूटरो पर हाजिर होते और रात गये तक रेकार्ड प्लेयर की धुन पर इस कदर 'शेक' होता था कि नीचे के कमरे मे हमारे पेट मे पडी अरहर की दाल हिलती रहती थी ! उसपर रही सही कसर उस दिन निकल गयी जब बेगम अब्बू की जिद पर हम भी बीवी समेत 'शेक' मे शामिल होना पडा ! अब्बू साहब खुद अपनी तोद समेत बेगम के साथ 'शेक' हो रहे थे ! किस्सा कोताह, इस एक बार के शेक ने हमे एसा शेक किया कि कई पाव कडवा तेल हमारे जोडो की मालिश पर खच हुआ ! हम इस मकान से भी खच होकर छठे मकान म आये !

सोचा कि अब कही नही जायेंगे ! मकान हवादार था ! मालिक मकान सिर्फ मिया बीवी थे ! सोने पर सुहागा यह कि उनकी बीवी हमारे लेखो की परिस्तार (प्रशसिका) निकली ! उन्हे न जाने क्या अपने बारे मे गलतफहमी थी कि वह अच्छा हास्य व्यग्य लिख सकती हैं ! ढेरो लिख लिखकर जमा भी किया था। अब हमारे सिर एक 'जरा सी जहमत' (बकौल उनके शौहर के) यह भी आयी कि हम उनकी सडी-गली रचनाए ठीक करें ! चार महीने मे हमारे पास पत्रिकाओ की चिट्ठिया और सम्पादको की फटकारो का ढेर लग गया। अपनी एक रचना न लिख पाये सिर्फ उन्हे गाइड करते रहे ! रात गये तक हमारे साथ बैठी महक रही हैं और रचना सुना रही हैं ! हमारी बीवी जल भुनकर कबाब हो रही हैं ! चुनाचे, ए मेरे दिल कही और चल !

अब शहर मे यह हमारा नौवा मकान है ! आज पहला दिन है अभी रतन साहब उनकी बीवी और एक अदद परमानेण्ट साथ रहने वाली जवान साली के शौक का कुछ पता नही चला है। आप सब हमारे साथ दुआ कीजिये कि वे दोनो जनानिया शैतान भले ही साबित हो जायें, अब तक की तरह 'फरिश्ता न साबित हो ! आमीन !

वह कसम वह इरादा

हसकर नकार दीजिये तो कोई बात नही, वरना अगर ध्यान देकर जरा बारीकी से सोचिये तो आप खुद महसूस करेंगे कि जिस उम्र से मैं गुजर रहा हू वह इश्क-विश्क के मामले म निहायत खतरनाक है, दूसरे मुल्को की जाने दीजिये जहा आदमी पैंतालीस की उम्र मे बाकायदा जवान होकर बाकायदा शादी पचास की उम्र मे करता है, इससे पहले सिफ 'तजर्बे' करता है। हमारे यहा तजर्बे की कोई फैसिलिटी नही है—जवान होते होते तक आदमी चन्द बच्चो की वल्दियत कबूल कर चुका होता है और पैतालीस तक पहुचते पहुचते 'साचा नाम तेरा साई' जपने लगता है। कुल मिलाकर हम हिन्दुस्तानी हर काम जल्दी निपटा लेते है और रहती नौकरी तक इश्क, शादी, बच्चे, मकान, गठिया ब्लडप्रेशर वगैरह झेल सकते हैं। पैंतालीस का आदमी भूतपूर्व पहलवान जैसा होता है जिसे सिफ यही फिक्र खाये डालती है कि कौन पहलवान किस अखाडे पर मश्क कर रहा है। शहर के अन्देशे से दुबलाना हर काजी पैंतालीस पर ही शुरू करता है। मुहल्ले के हर लडके लडकी की नेकचलनी पर निगाह रखने की यही उम्र होती है। मजाल है कि उसके चश्मे तले की पैनी निगाह से बचकर कोई लडकी छज्जे पर गेसू बिखरा ले? पैंतालिसिये के सीने पर हथौडा बज उठता है कि देख निगोडी इश्क करने को पर तोल रही है—मैं पैंतालीस का हो गया हू। थानेदार के रोजनामचे की तरह कालोनी के हर जवान छोकरे छोकरी का ब्योरा मेरे पास दर्ज है।

इधर एक नयी धुन मेरे प्राणो को लग गयी है। आत्मा रिमच पर

लगी हुई है तफसील या है कि गत रविवार चौबीस नम्बर वाला की बकी पानी की टकी की आड म कुछ या गुनगुना रही थी, "क्या हुआ तेरा वादा वह कसम वह इरादा। मेरी पैंतालीस बरस पुरानी आखें कल प्लाइवुड फाम्ब पावर के चश्मे तोस ताड गयी कि सम्बोधन पच्चीस नम्बर वाला क छोकरे से है जो फिजिक्स पढ़ने के बहाने 'बायनाजी' पढ़ने की कोशिश कर रहा है। हे परमात्मा क्या करेक्टर रह गया है आजकल! हमारे टाइम म इश्क इस तरह गा बजाकर नही होता था। चुपचाप हाल-दिल लिखकर गोली बनाकर फेंक देते थ। तिसपर भी यह डर खाये जाता था कि गोली कही मुहल्ला की जगह उसकी वालिदा का न जा लगे। पर लडकी की बात गौरतलब ह। छानबीन करने के बाद ही बात आगे बढ़ानी है आगे तो कहानी है ही। यह कैसे हो सकता है कि पैंतालीस साल का आदमी चश्मदीद रहे और इश्क फिक्र होता रहे?

क्या हुआ तेरा वादा?' पहले इसपर सोचना है। वादा क्या था? किस बात का लेकर था? और अगर था तो क्या हुआ? उसपर अमल क्या नहीं किया गया? दो बातें सामने आती हैं। या तो छोकरे की याद दाश्त कमजोर है या किसी बटर जगह अटक गया है। वादा करने के बाद क्या हुआ का प्रश्न नही उठना चाहिए। हम लोग भी अपने टाइम म वादे शादे करते थे मगर क्या हुआ की नौबत नही आने देते थे। मा बाप ने डाट दिया तो वादा किन्सल कर लेते थे और साफ कह देते थे कि भई, तुम कही और इश्क पकड लो, मेरा बाप नाराज हो रहा है। उन दिनो महबूबाए भी डिनचड स्पिरिट जैसी साफ होती थी। 'कोई बात नहीं।" कहकर कहीं और इश्क लगा लेती थी। यह थोडे ही कि महीनो वाले की याद दिलाती रहे कि क्या हुआ?

आगे गुत्थी और उलझती है। छोकरी का कहना है कि वह कसम—वह इरादा। कौन सी कसम? कैसा इरादा? आजकल का यह टुच्-पुन्जियापना मेरी समझ मे नहीं आता। जब तुम्हारा हाजमा दुरुस्त नहीं है तो कसम खा क्यो लेते हो? बाद मे गैस बनने लगती है! हम लोग भी कसम खाते थे मगर साफ पचा लेते थे। महबूबाएं भी कसम पचा लेती थी। छुट्टी हुई। इश्क की बीमारी में कसम साबूदाने की तरह होती

चाहिए। खायी और पचा ली। यह थोड़े ही कि जोश में आकर कसम खा ली और फिर महीनों पेट में अफरन हो रही है, खट्टी डकारें आ रही हैं। बालकनी पर टहलकर एक-दूसरे से तकाजा कर रहे हैं कि कसम का क्या हुआ ?

इस पूरे संदर्भ में सबसे खतरनाक बात है वह इरादा। क्या था वह इरादा? इरादे को लेकर पचासों सन्देह पैदा हो सकते हैं। इरादा खतरनाक भी हो सकता है घर से भागने का भी हो सकता है। रेल की पटरी तक जाकर बिना कटे लौट आने का भी हो सकता है। चौबीस बटे पच्चीस नम्बर वालों का क्या इरादा था, यही चिन्तन का विषय है। रिसर्च का टॉपिक है इरादा जरूर गैरकानूनी और खतरनाक रहा होगा। वरना कन्या यह क्यों पूछती कि क्या हुआ ? कमबख्त साफ कहता भी तो नहीं कि पुष्पा मैंने इरादा बदल दिया है। बिला वजह गरीब को घपले में डाल रखा है। बार-बार पूछ रही है "क्या हुआ वह इरादा ?" एक हमारा टाइम था। जहाँ कोई इरादा हुआ, सरंजाम दे डाला यह थोड़े ही कि पेंडिंग डाल पड़े हैं। मेरा ही सन पचास में गुलाबदेई से जरा-जरा हिसाब चलता था। हम दोनों ने इरादा किया कि सर्कस देखना है। अगली शाम देख आये। जरा सी बात का महीनों मुँह देखते और पूछते रहते, क्या हुआ ? आजकल के इश्क में दफ्तर के बाबुओं जैसा कछुआपन आ गया है, महीनों फाइल दराज में पड़ी हैं। अगला हर तीसरे दिन पूछ रहा है "क्या हुआ ?" अरे भाई या तो इरादा ही मत करो, और करो तो निपटाकर अगला काम देखो। खैर पुनः घटनास्थल पर आइए। पुष्पा अभी पूछ रही थी, 'क्या हुआ वह इरादा ?' उधर वह बगरान है, कि दो टूक बात कहता ही नहीं। फिजिक्स की किताब की आड़ में मनहूस मुस्कराये चला जा रहा है। इरादे पर फैसला नहीं कर रहा है। छछूँदर कहीं का। तेरे बाप ने भी इश्क किया था कभी ? मुझे और पुष्पा को घपले में डाल रखा है तुझे क्या मालूम मरदूद कि पैंतालीस साल की उम्र में दूसरों के इरादों में कितनी दिलचस्पी होती है ? अबे कुछ हिंट ही दे दे कि क्या इरादा था और इरादे का क्या हुआ ? कोई मालो मजबूरी हो तो फूट भी मुँह से। मैं मदद को तैयार हूँ।

मुँह में आग लगा के जमालो अलग खड़ी है। पुष्पा और उसका वह

इरादा छत पर से हट गये हैं। मैं तफ्तीश मे लगा हू। अपना ही अपने के काम आता है। मैंने आहिस्ता स 'उन' से कहा,"भई बुरा न मानना प्लीज, या तो तुम काफी कूटमग्ज हो फिर भी जरा सलाह दो। क्या हुआ तेरा वादा वह कसम वह इरादा। इसपर रोशनी डालो जरा।"

'भाड म गया वादा और इरादा। यह नही हुआ कि जरा चक्की पर गेहू पटक आये। आधी चदिया के बाल खच हो चुके और अभी वादा इरादा ही चल रहा है, कुछ तो सोचा करो। पैंतालीस के हो गये हो।'

हलव पर बुरादा छिडक्ना इसे ही कहते हैं। समझदार हुई होती तो ताड न जाती कि अडोस पडोस से हमदर्दी पैंतालीस की उम्र पर ही जागती है वे दोना कब तक क्या हुआ ?' म फसे रहेंगे ? मैं छत पर जा रहा हू। शायद वे लोग दोबारा छज्जो पर आयें।

बीस सूत्री लिहाफ

मैं यदि झूठ बोलता होऊं तो अल्लाह मुझे दोजख में चारपाई न दे और मैं खड़े खड़े सोऊं। मेरे कुनबे का इतिहास और मेरे पैताने पड़ा लिहाफ गवाह है कि खानदानी अर्जीनवीस होने हुए भी हमारे दादे परदादो ने हमेशा अच्छा ओढ़ा। खाने पहनने का नपा तुला ढर्रा था। दो बोटियां प्याले भर शोरबा, कटा प्याज, चार रोटियां और कुल्हड़-भर शीरे की दारू मिल गयी, और हमारे दादा जी खुद को नेपोलियन से भी पाव भर ज्यादा वजनी समझते रहे। इसपर कभी ध्यान न दिया कि अगले के घर क्या पक रहा है। पहनने के मामले में एक पुश्तैनी काली शेरवानी, गबरून का पाजामा और थिगड़े लगी सलीमशाही जूती दादा की यूनिफार्म रही। कभी मूड आया तो शेरवानी तले डोरिये की कमीज डाल ली, वर्ना अमूमन कमीज या बनियान की लानत को दूर रखते थे और खालिस नंग जिस्म पर शेरवानी डाट लेते थे।

अलबत्ता जहां तक ओढ़ने का सवाल है, दादा जी ने दादी के मरते दम तक अतलस के लिहाफ में ही महफूज रखा। नाते रिश्तेदारों में हमारा घराना 'लिहाफ वालों का घराना' कहलाता था। चन्द सिरफिरे यह मतलब निकाल लेते थे कि शायद हमारे यहां रूई धुनी जाती है या लिहाफों में तागे डाले जाते हैं। जो लोग समझदार थे और खानदानी रईस थे, वे ठण्डी आहें भरते थे कि हाय लिहाफ हो तो मुंशी रोशनलाल अर्जीनवीस के लिहाफ जैसा ! दादी गर्मी और बरसात भर दादा की बालाई आमदनी एक पोटली में सहजती जाती और बाजार में गोभी का फूल आते ही

सारी जमा रकम लिहाफ और लिहाफियों पर खर्च कर डालतीं। ताजी नयी रुई में एक एक बिनौला चुना जाता, शहर के बहतरीन धुनियों से रुई धुनवायी जाती और छपी हुई अतलस का अबर' और बेहतरीन पापलीन का अस्तर तलाश किया जाता। गोट' इस कदर हसीन टांकी जाती गोया पत्तियों के बीच कलियां तड़प रही हों। फिर जो लिहाफ बन कर तैयार होता वह इस कदर बेमिसाल होता कि कोई ओलम्पिक में आर्ट्स पर चला जाये तो बगैर दौड़े पांच गोल्ड मेडल सिर्फ लिहाफ पर जीत लाये।

बुआ जी बताती हैं कि जो लोग हमारे बरेली शहर में झुमका ढूंढ़ने आते थे और पागलखाना देखकर वापस जाने लगते थे, वे एक बार हमारे घर लिहाफ देखने जरूर आते। झुमका न मिलने का गम उनके दिल से जाता रहता। कभी कभी तो यहां तक नौबत आती कि दादा लिहाफ में दफन सो रहे हैं और प्रेस वाले लिहाफ की तस्वीरें उतार रहे हैं, दादी का इण्टरव्यू ले रहे हैं। एक लम्बे अरसे तक बरेली में दो ही चीजों की चर्चा रही —स्व० के० एल० सहगल (उन दिनों बरेली में थे) के गले की और हमारे यहां के लिहाफ की। बड़े घरानों में शादियां होतीं तो कन्या को डोली में बिठाने से पहले दादी को अदब से डोली में ले जाते कि दहेज का लिहाफ सवार दो। लड़की भले ही सही, ससुराल वाले लिहाफ देखकर ही खुश हो जायेंगे।

हमें याद है कि जब पहलौठी के तौर पर हम पैदा हुए थे, तब हम बेहद हसीन और गुलगुली लिहाफी में रखा गया था। मुहल्ले वालियां हमें चूमने से पहले लिहाफी चूमती थीं। रुई इस कदर नरम थी कि हममें और लिहाफी में फर्क करना कठिन था।

वक्त बदला और बूए इत्र पसीने की चिपचिपाहट में तबदील हो गयी। लिहाफ वालों का घराना उजड़ गया। आज जो ऐतिहासिक लिहाफ हमारे पैताने पड़ा है वह हमारी सुहागरात की मनहूस निशानी है। इस हादसे को बीते बीस साल गुजर गये। हर साल लिहाफ से एक एक सूत अलग होता गया। कभी रुई झाक गयी तो कभी तगाई ने खीमें निपोर दी। जब जब सोचा कि लाओ इस लिहाफ का इलाज करवा दें तब तब

'उंह' मतली शुरू हो गयी और एक अदद छोटी सी नयी लिहाफी बनवानी पड़ी। होते करते पिछले जाड़ो लिहाफ बीस सूत्री हो गया। बीस जगह शिगाफ हो गये। काफी कोशिश के बावजूद हमने जब-जब लिहाफ तले पांव डाला, तब-तब पांव लिहाफ से गुजरता हुआ बाहर आ गया। जो कभी लिहाफ के अंदर की रूई कहलाती थी, वह अब बीस जगह सिमटकर मुर्गी के बच्चों की शक्ल में इकट्ठी हो गयी। हम लिहाफ ओढ़ते थे तो सारी रात या महसूस होता था जैसे हम किसी पोल्ट्री फार्म में पड़े हैं और गुदगुदे चूजे हमारे हर तरफ उछल रहे हैं। अपर और लोअर घिसकर इस कदर झीना हो गया कि हम लिहाफ में पड़े-पड़े मुंह ढांप देख लेते कि कौन से बच्चे ने मंजन नहीं किया है। रात भर बदन पर जहां-तहां रूई के पिल्ले नहीं रहते, वहां वहां सर्दी के सबब खून का दौर जम जाता था। फिर हम महसूस करने लगते कि अभी अभी पैदा हुए हैं और दादी की नम-ओ-नाजुक रजाई में लेटे हैं। बस, नींद आ जाती।

यही ऐतिहासिक लिहाफ अब छत पर पड़ा इक्कीसवीं धूप देख रहा है। इसके टूटे फूटे बीसों सूत्र तार-तार हो रहे हैं, और हम हैं कि बड़ी एहतियात से उलट पलट कर देख रहे हैं कि अभी उसमें कितनी जान बाकी है? कहां-कहां रफू करके या पैच मारकर हम इसे नयी ताकत बख्श सकते हैं? मोटे तौर पर लिहाफ लगभग दो हिस्सों में तकसीम हो चुका है। तकरीबन सारी रूई सिर से ऊपर आ गयी है। अलग-अलग गुटबंदी का जीता जागता नमूना है। नया बनवाना हमारे नजदीक उतना ही नामुम किन है जितना नये सिरे से सेहरा बांधकर घोड़ी पर बैठना। इस बदनसीब लिहाफ को लेकर जब हम उनकी तनी हुई भवें देखनी पड़ती है, हमने यह कहकर उन्हें खुश कर दिया है

'तुम नहीं जानतीं डियर! इस लिहाफ से मेरी शादी के इब्त-दायी दिनों की यादें जुड़ी हैं। मैं इसे जुदा नहीं कर सकता।"

इश्क वरास्ता एन० सी० एल० ए०

सर्वसाधारण को सूचित कर देना मैं अपना धर्म समझता हूँ कि आजकल
मैं काफी हिलगा हुआ हूँ। कृपया मुझे न छेड़ें। भरपूर मौलिक
चिन्तन में लगे इंसान को छेड़ने से मुझे भी पाप लगता है। गरचे गुजारे
के लिए और कलर्की का वजन कमल हासिल करने के लिए मैंने बाटनी में
एम० एस सी० किया, मगर मूल रूप से मेरा विषय 'इश्क' रहा। आज भी
है। बाबू जी को कई बार मेरी फाइलों में सिप्टोगैमिक प्लाण्ट्स पर
लिख गये नोट्स के साथ के नोट्स भी मिले जिनमें ईसा से तीन सौ वर्ष
पूर्व इश्क करने की तहजीब पर भरपूर रिसर्च थी। शादी वादी, बच्चे-
बच्चे अपनी जगह इश्क पर रिसर्च अपनी जगह। घर से भागी हुई
लड़कियों के इण्टरव्यू और खुदकशी के ठीक पहले आशिक का हलफिया
बयान मय रेवेन्यू स्टाम्प मेरे पास मौजूद है। हकीम लखलखा की
नूर चश्मी शकरपारा के इश्क की पूरी दास्तान कोई मेरे टेप रेकार्डर पर
सुन। यह लड़की सफर-खर्च के पैसों के लिए भैंस बेचकर भागी थी। मेरे
पास भैंस तक की फोटो फाइल में है। मेरी शरीके वफात यानी बीबी
ने कई बार मुझे फटकारा कि—ऐ कमजात, नामुराद फटी जुराब पर
नया एम्बेस्डर जूता जेब नहीं देता। दम फूलने लगा है तेरा, अब तो
अल्ला का नाम ले। मैंने भी ताड़ दिया कि मैं खुद इश्क नहीं कर
रहा हूँ, बल्कि हिदायतनामा इश्क कम्पाइल कर रहा हूँ मुझे मालूम है
कि दुनिया का सबसे बड़ा ताला, अल्लाताला है। मगर रिसर्च पर
अल्ला भी खुश होता है। तू अपना चौका-चूल्हा सम्भाल। इश्क के

मामलात में बड़ी बूढ़ियों के टांग अड़ाने में अल्ला और आशिक, दोनों नाराज होते हैं।

चुनांचे ईसा से तीन सौ वर्ष पूर्व से लेकर आज तक, मेरे पास हर दौर के इश्क का खुलासा मौजूद है। मगर अफसोस! गंगा गोदावरी से टनों पानी बह गया, सोना उछला, चांदी लुढ़की, हल्दी मजबूत हुई, हम सुनहरे कल की ओर बढ़े, मर्दानगी तरशवा दी, दारूबंदी की, वाटर आफ लाइफ तक आ गये, मगर इश्क ज्यों का त्यों ठस्स तरीके से होता रहा। हर दौर में यही हुआ कि मिले, आयें चार-आठ हुई, आह वगैरह भरी और जुदा हो गये। मिल गये तो निकाह शिकाह पढ़वाकर आबादी में इजाफा किया और गेहूं पिसाने चले गए। बड़े-बड़े दानिश्वर आये मगर किसी ने न सोचा कि इश्क को जरा स्ट्रीम-लाइन करें, नये तरीके ईजाद करें और इसका एक 'कोड आफ कण्डक्ट' बनायें। आखिर यह काम मेरे ही हाथों होना था।

मेरे पास पूरा मसविदा तैयार है जो मुख्तसर यों है। सबसे पहले सारे के सारे चल रहे इश्क डिजाल्व कर दिये जायें। वैसे ही जैसे मुल्क को नई शक्ल देने से पहले मिलिट्री कूप करके बादशाह को हटा देते हैं। जब यह यकीन हो जाय कि मुल्क से सारे इश्क के जरासीम खत्म हो गये हैं तब इश्क के लायक लड़कों और हसीनाओं की फेहरिस्त सूबावार बनायी जाय। इसमें जवान होने के बावजूद सड़ी बुसी, कानी-तिपखी, खुतरी और भेंगी लड़कियों को शामिल न किया जाय। उनका कोटा अलग रखा जाय। अब इस फेहरिस्त से पन्द्रह परसेण्ट हरिजनों के लिए, छब्बीस परसेण्ट पिछड़े वर्ग के लिए और तीस परसेण्ट खास सिफा-रिश, भाई भतीजा और वी आई पि (यों) के लिए अलग रिजर्व कर दी जायें। इसमें चार परसेण्ट पहाड़ी और सरहदी इलाकों और एंग्लो इण्डियनों का हिस्सा होता है।

बाकी की पच्चीस परसेण्ट जनसाधारण यानी पब्लिक के लिए महफूज हो। अब एक यूनियन लव कमीशन यानी 'लोक प्रणय आयोग' का गठन किया जाये जिसके फारम (कीमत ५ किलो आटा) हर बड़े रेलवे स्टेशन पर फराहम हों। इश्कार्थी यानी कैण्डीडेट फारम पर

अपनी और अपने वालिद की तीन तीन तस्वीरें चस्पा करें। इस फारम के कालमो मे पूरी तफसील बयान हो—मसलन इश्क का पुराना तजुर्बा ले भागने का अनुभव पास पडास मे इश्क का पास्ट एक्स पीरिय स वगैरह। खानदानी आशिको को पाच नम्बर अलग। तीस आह प्रति मिनट को विशेष योग्यता माना जाये। फारम के साथ पिछले महबूब के खतो की प्रामाणिक प्रतिलिपिया नत्थी हो, जिनपर किसी पुराने आशिक के दस्तखत व मोहर मोजूद हो। 'प्रेमाचार समाचार' के नाम से एक रिसाला निकाला जाये जिसमे हर ग्रेड के इश्क की खाली जगहे छापी जायें। इसम अलाउ स के साथ फी पाचसाला बच्चो का इन्क्रीमेण्ट भी दज हो। सब कुछ निपट जाने पर इश्कार्थी को लिखित परीक्षा के लिए तलब किया जाये। इस पपर मे इश्क की जनरल नालेज, प्यार को ग्रामर और पुराने आशिको की जीवनी वगैरह पूछी जाये। पन्द्रह नम्बर का निबन्ध हो जिसके विषय कुछ ऐसे हो, किसी हसीना से पहला टकराव' लव इन ए रेलवे जर्नी, मेले मे इश्क', 'मेरा पसन्दीदा आशिक, राष्ट्र निर्माण मे रोमास का महत्त्व 'देहात म इश्क के फायदे व नुक्सानात' वगैरह। (नोट—खूने जिगर से पेपर साल्व करने वाले को दस नम्बर अलग अपना नश्तर, रूई, एण्टीसेप्टिक लोशन साथ लायें।) नकल करन की सख्त मुमानियत। जो कोई आशिक दूसरे की नकल करता पकडा जाये, उसे ट्रक म डालकर रेगिस्तान मे छुडवा दिया जाये। इम्तहान मे साथ साठ फीसदी नम्बर हासिल करने वाला को इण्टरव्यू म तलब किया जाये। इण्टरव्यू बोड मे तीन अदद पुराने खूसट-खुर्राट आशिक बिठाये जायें जो हर तरह से निचोड-निचोडकर आशिक का अर्क इश्क निकाल लें। इण्टरव्यू म फतहयाब आशिको के दिल, गुर्दे फेफडे, तिल्ली, खून व बलगम वगैरह की डाक्टरी जाच की जाये। डायबिटीज और कब्ज की शिकायत वालो को तीन महीने बाद फिर तलब किया जाये। डाक्टरी से गुजर चुके आशिको का आखिरी इम्तहान 'साइकोलाजिकल-टेस्ट' हो। इस टेस्ट के दौरान उनकी ताकत परखी जाये कि वे गालिया, फटकारें, जली-कटी, बच्चो की रें रें किस हद तक झेल सकते हैं। इस टेस्ट को पास करते ही

आशिक को बहुधन्धी प्रेम प्रशिक्षण केन्द्र' म भेजा जाये जो कही झील या पहाड पर बना हो। इस केन्द्र म पुराने तथा घिसे हुए टीचर और टीचरानिया प्रशिक्षण दें। थ्यारी क्लासेज के अलावा प्रैक्टिकल ट्रेनिंग के रूप म जूते खाने, दीवार फादने चिट्ठी फेंकने और तरह-तरह की सीटिया निकालने के आर्ट को गाइड किया जाये। ट्रेनिंग समाप्त होने पर पासिंग आउट परेड के बाद दीक्षान्त समारोह म ट्रेनिंग के दौरान अच्छे आशिको का मजनू मेमोरियल अवार्ड, रांझा ट्राफी तथा मिर्जा गोल्ड मेडल वगैरह दिय जायें। कन्वोकेशन एड्रेस करने के लिए आई० एस० जौहर टाइप के किसी फिल्मी सितारे को बुलाया जाय जिसका इश्क और तलाको का उम्दा रिकाड हो।

इस सबके बाद अगर डिप्लोमा होल्डर प्रेमी सही सलामत बच जायें तो एक अदद महबूबा दो वक्त का खाना, एक कम्बल और एक लोटा देकर उन्हें *प्रोबेशनरी पीरियड पर भेज दिया जाये। आशिक अगर दोबारा* सीटी बजाता नजर आ जाये तो मैं अपनी मूछें मुडवा दूगा। इस स्कीम के कार्य रूप में परिणत होते ही मुल्क मे एक स्वस्थ और ट्रेण्ड प्रेम परम्परा का विकास होगा। विदेशो मे हमारे आशिको का निर्यात बढेगा और इश्किया अनुशासन कायम होगा।

मेरी एक हजार पेज की स्कीम तैयार है। इन्तजार यह है कि स्कूल-कालेज खुल जायें, विश्वविद्यालयो मे शान्ति स्थापित हो जाये छात्र-चिंघाड जरा बन्द हो जाये और नौजवान जरा इश्क की तरफ तवज्जह दें। हो सकता है कि मेरे द्वारा सुझाये गये एन० सी० एल० ए० (नेशनल कमीशन आफ लव अफेयस) की चेयरमैनशिप का भार मेरे ही कन्धा पर आ पडे। मैं आजकल रोगन ए-बादाम से कन्धे मजबूत करवा रहा हू।

गम-ए- चमचा कहा तक झलू

वे जिनकी नरा नालज काफी मजबूा नहीं ह यहा नोट कर सकत
है। इत्तलाअ अज कर देना मेरा फज है कि मैं खानदानी रइस रह
चुका हू। न को यही कोइ किसी घडे म बतौर बालपत्र यह न लिखकर
डाल दे कि के० पी० घटिया तरबियत मे पते थे। बाद मे खीसे निकाल दें
कि हमे पता न था। मुझे जब भी घडे मे आई मीन मरे इतिहास को घडे
मे रखा जाये तो मेर रइस हाने की बात टरकाई नहीं जानी चाहिए।
खैर

रईस लोग जानते है कि भसा की तरह रईसो की भी अलग अलग
नस्लें होती है —पोतडो के रईस हाथीनशीन फाटका के रईस खास उल
खास रईस वगरह। हम लोग जरा इन नस्ला से अलग रईस थे और
'चौतरफा चमचा के रइस के नाम से बजते थे। बाबू जी को जिन्दगी भर
एक ही शौक रहा—चमचेबाजी का। गलतफहमी दूर कर देना मेरा फज
है। उन दिना चमचे चलत फिरते नही थे सिफ खनकते थे। खानदान मे
बची खुची बुआ जी गवाह हैं कि जाफरान कुरेदने की चादी की चमची
से लेकर हाथी साइज देग म चलाने वाला लकडी या कइ गज लम्बा
चमचा तक हमार यहा हुआ करता था। मुहल्ला क्या, आधी बस्ती म
चमचा उधार मागने वाला की भीड हमार दरवाने पर रहा करती थी।
बाबू जी उन दिना दाल से लकर आलू तक अलग अलग चमचियास पिया
करते थे। थाली म भले ही अम्मा चौलाई का साग और रोटिया डालकर
उनका डिनर करा दें मगर कई किस्म के चमचा का अलग प्लेट म सजा

रहना लाजमी था। जरा चूक हुई और दहाडे, 'अरे भई बडकन (हम) की अम्मा ! तीन नम्बर का गगा-जमनी चम्मच और ग्यारह नम्बर की चादी की चमची कहा गुम गयी ? अब भला शलगम का अचार और किश-मिश की चटनी क्या हम फावडे की मदद से भकोसेंगे ?"

उनका इतना कहना था कि घर-भर मे भूचाल आ जाता। इन दो नामाकूल चम्मचा की तलाश म अम्मा इस कदर दौडती गोया ओलम्पिक की तयारी कर रही हो। रियासत का यह आलम था कि लौकी की कटोरी तक म तीन चम्मच रहते थे। शारवा ताम्बे के चम्मच स, उपर तैरता धनिया जस्त के चम्मच स और लौकी के कतले सार का पानी चढे चम्मच से नोश फरमाए जाते थ। कचहरी जात वक्त भी अम्मा एहति यातन चेक कर लेती थी कि बाबू जी के बस्ते म लगभग आधा दजन चम्मच महफूज ह। उन्ह मालूम था कि कचहरी म बाबू जी खात पीते मुवक्किलो के पैस से हैं मगर चम्मच अपने ही इस्तमाल करते है। कुल मिलाकर मरहूम की ज्यादातर दूधिया और बालाई आमदनी चम्मचा पर खच होती थी। तैंतीस रुपया एक आना महीना तनख्वाह का हमे इल्म था। वाल्लाह सिफ वह ही जानते थे।

इस दुनिया से उनके खच हाने तक हम जवान हो चुके थे। विरासत म हम चमचो का खजाना मिला। इनम से एक ऐतिहासिक चम्मच हमारे पास आज भी मखमल म महफूज ह, जिसे बाबू जी के उस्ताद (मरहूम जिगर मुरादाबादी) दार सीच चुकने पर कोफ्ते खाने म इस्तेमाल करते थे। इस चम्मच की डण्टी पर बाबू जी न 'जिगर' साहब का एक शेर खुदवा छोडा था

> पूछता क्या कितनी बुसअत (जगह) मरे पैमान म है
> सब उलट दे साकिया जितनी भी मयखाने में है।

'जिगर' साहब का कोफ्ताई चमचा कलजे स लगाकर हम भी दुनिया के अखाडे म कूद। मगर देखत क्या ह कि अब चमचे चलन फिरने लगे हैं। अच्छा भला कोई पाजामा कमीज पहने खी खी करता किसीके साथ चला जा रहा ह और लोग कहत हैं कि यह पिछला अगले का चमचा' है। चमचाई परवरिश के सबब हमारी भी चमचो म दिलचस्पी बढी।

घर के सार चमचे मगनी म या कूडेदान मे खप चुके थे। 'चमचा वा रईस आज एक चमचे को तरस रहा था। यूनिवर्सिटी से लेकर दफ्तर तक हम। सिफ चमचे ही नही, चमचिया भी देखी थी। एक गुल सनावर पर जरा जरा दिल आया ही था कि क्लास के च द लडको न आगाह कर दिया। उसे न छेडना। वह डा० मि हा की चमची है। उसे टाप करना है। घण्टा बजने पर नोटस लेती है। हमने दिल वापस ल लिया। घर-गहस्थी की इल्लत म फस तो लागा से दस काम अटके। हमार फुफेरे साले की एक वडे आदमी से बनती थी। हम भी एक मरतबा साल साहब को बगल म दावे पहुचे कि काम बनवा लें। काफी देर लाइन म सूखत रहे। वन आदमी अन्दर चमचो मे खनक रहा था। आखिरकार चमचा ही हाथ लगा और फुफेरे साले ने काम बनवा दिया।

ज्यो ज्यो उम्र पुख्ता होती गयी, यह बात दिल मे बैठती गयी कि हर सू चमच खनक रहे है। खुदा झूठ न बुलवाय चमचा के रक्स हमन देखे बम्बई की फिल्मी दुनिया म। ऐस ऐसे चमचापरस्त कि हमारे वालिद तक हमारी नजरो से गिर गय। हर हीरो की कटलरी अलग, हीराइन की अलग। हीरो हाण्डी जना माल चटा रहा है और चमचे अपनी-अपनी साइज के मुताबिक हाण्डी खुरच रहे हैं, एवज मे हीरो का कन्धे पर उठाये हैं। एक फिल्मी फोटाग्राफर दोस्त के यहा च द चमचिया खनक रही थी। सबकी सब एक ही हीराइन पर पल रही थी। चुनाचे च द ही मिनटा म उनकी लनतरानिया सुनकर हम इस नतीजे पर पहुचे कि वाकई उस हीराइन को अल्ला ताला न ओवरटाइम मेहनत करके बनाया है। उसकी जैसी कमर नैन होठ बाजू गदन, सीना वगैरह क्लियोपेटा की वालदा तक को मयस्सर न हुआ होगा। अब जो उस गुलबदन को सेट पर स्वरू देखा तो तबीयत इस कदर भिनक गयी कि अपन ही घर म बतन माजने वाली अधेड बुवा स इश्क कही बेहतर नजर आया। चमचा क्या नही कर सकता ?

चुनाचे दिल स एक हूक उठी कि ए नामुराद ! तरा वालिद कभी मजबूरन गम भी खाता था तो चमचे स। तरे मुकद्दर म एक भी चमचा नही ! चटनी की दौड पोदीने तक। कहा हाथ पाव मारत ? एक दिन मूड

गनीमत जानकर डरते डरते उनसे कहा कृपया बुरा न मानना। यो तो अब तुम सेहत के फजल से वाकायदा पनीला नजर आती हो, फिर भी अगर मेरी चमची बनना कबूल कर ला

' उससे क्या होगा ?" उन्होंने ढाई आख भर घूरा।

' हर बात म खीखियाया न करा। चमचे के बगैर इन्सान दो कौडी का। बस, जरा मुझे लाघे पर उठाय रहा। काफी है।"

"चन्दिया का खल्वाट महगाई जैसा बन्ता जा रहा है। अब यह चमची रखेंगे। लानत है।

गुड़ की खाकर अपन ही खून पर नजर डाली। लढियाकर कहा, ' बट, आजकल चमचे बहुत महग हैं न ?

"श्योर डैडी। काफी माल खा जात हैं।"

"सोचता हू तुम्हारा पाकिट खच बढा दू। इसके एवज मे तुम्ह ।'

' आपका चमचा बनना हागा। यही न ? '

' बटे ! अपन दादा मरहूम की फाटू पर नजर फेंको। हम लोग चमचा के रईस रह चुके है।"

खाक नाकिय डैड, गुजरी बेवकूफिया पर। मैं खुद कालेज यूनियन का चुनाव लड रहा हू। चमचे यो ही कम पड रहे हैं। थाडे पस इधर आने दीजिये, डड। चन्द चमचे और पालन हैं।"

अब मैं काह कर, कित जाऊ ? जब घर की मुगिया दाने पर नही आ रही हैं तब बाहर किसके आग हाथ पसारू कि मिया, कुछ माल डकार लो और चमचे बन जाओ ?

जैसा-जैसा कालीचरन कहता गया

भूतपूर्व ग्रामोफोन (अब रेकार्ड प्लेयर) के रेकार्डों को छोडकर मेरे पास पुरानी कापियों में लगभग हर चीज का रेकार्ड मौजूद है। क्रिकेट से लेकर काली मिर्च की खरीद तक। इन्हीं रेकार्डों में एक जगह दर्ज है कि हिन्दी फिल्मों में सबसे ज्यादा इस्तेमाल होने वाला डायलाग है, ये खुशी के आंसू हैं।

उस दिन पहली बार मेरी आंखों में खुशी के आंसू इस कदर भर आये कि लगभग दहाडें मारने की नौबत आ गयी। खुशखबरी पडोस के कालीचरन लाये थे। मेरे नाम एक सरकारी पर्चा आया था जिसमें इत्तला दर्ज थी कि मेरी कोई बुआ जी ताजा ताजा गोलोकवासी हुई हैं और अपना जुमला बैंक एकाउण्ट मेरे नाम कर गयी हैं। वे जो खुशी के आंसू कहलाते हैं सो धारावाहिक छूट पडे। हालांकि मैं बुआ जी मरहूमा की शक्ल और नाम से वाकिफ नहीं था फिर भी सांस सांस उन्हें श्रद्धांजलि देने लगा। घर में जितने नर मादा थे सबके चेहरों पर चमक आ गयी। कुत्ता और तोता तक क्रमशः अपनी दुम और चोंच हिलाने लगे। किस्सा कोताह, हरेक की आंखों में वे सारे सपने तैरने लगे जो अमूमन किसी फटीचर घराने में जायदाद आने पर तैरने चाहिए। बडे साहबजादे इस कदर उबाल खा गये कि चार अलग-अलग दर्जियों के यहां सूटों के नाप दे आये। बाकी बच्चों ने कमरे का एक कोना साफ करके मेज जमा दी। यहां भावी टी० वी० सेट रखा जाने वाला था। वगैरह वगैरह।

कालीचरन पुराने घाघ थे और इस कदर दीवानी फौजदारी झेल चुके

थे कि लगभग सेशन जज जैसी कानूनी 'नालेज' रखते थे। तथाकथित बुआ की पासबुक कोर्ट में जमा थी। कालीचरन ने साथ दिया कि कचहरी करा देंगे। लगे हाथों इशारा कर दिया कि पान तम्बाकू भर की कुछ रकम जेब में डाले रहना। महीने की शुरुआत थी सो कोई खास दिक्कत पेश नहीं आयी।

मेरे घर ने आरती उतारने वाले मूड के साथ हमें विदा दी। कालीचरन ने कहा था कि कोर्ट-कचहरी में कुछ टाइम लग जाता है। हमने चार दिन कैजुअल की अर्जी दफ्तर भिजवा दी। पहले कालीचरन हमें एक ऐसे शख्स के पास ले गये जो फटीचर से तख्त पर चश्मा लगाये बैठा था। एक खास किस्म के कागज पर दरख्वास्त टाइप की गयी। हजा खर्चा और पान-तम्बाकू मिलाकर ग्यारह रुपये से शुरुआत हुई। अब गवाही लानी थी। कालीचरन पांच पांच रुपया फी आदमी के हिसाब से दो खबीसों को पकड़ लाये, जिन्होंने हमारे के० पी० सक्सेना होने की गवाही दी। हमारा ईमान गवाह है कि इन दोनों कूला उडडू लोगों को हमने कभी सपने में भी न देखा था। खैर

अर्जी सीढ़ी व सीढ़ी चली। एक क्लर्क किस्म के आदमी ने पहला नुक्ता लगाया

यह तो बाद की बात है कि मरहूमा चौमुखी देवी मरहूम मुंशी शिवचरन की बहन थीं। पहले यह सबूत लाइये कि मुंशी शिवचरन आपके वालिद थे।'

'जनाब, आज तक कोई बेटा यह सुबूत दे सका है कि उसका बाप वाकई उसका बाप है? बाबू जी अगर जन्नतनशीन न हो चुके होते तो मैं उन्हें बुला लाता! अब भला कैसे साबित करूं कि वह मेरे बाप थे।''

'तुम वाकई लूमड़ हो'' कालीचरन मुझे अलग घसीट ले गये। समझाया कि इस कुर्सी की दस्तूरी पांच रुपये होती है। चुनांचे काली चरन के माध्यम से हक हकदार तक पहुंचा। तस्दीक हो गयी कि मेरा बाप वाकई मेरा बाप था। मुझे पहली बार एहसास हुआ कि बाप की सही कीमत पांच रुपये है जिसके ढाई होते हैं! अर्जी की

पीठ पर एक छापा पडा और आगे बढी। अगले न एक और पहलू निकाला जो वाजिब था। उनकी दलील थी कि यह बात साफ है कि *क० पी० सक्सेना नाम के शख्स का वालिद मरहूम मुशी शिवचरन करार* पाया गया। मगर इसका क्या सबूत है कि दावेदार वही के० पी० सक्सेना है इस मनहूस नाम के शहर मे कई लोग है। कालीचरन न चुटकी काटी। एक और पाच का कागज ठिकाने लगा। साबित हो गया कि असली के० पी० मैं ही हू। बाकी सब या ही है अर्जी की पीठ काली हुई और लच हो गया। नीम के दरख्त तले एक बेहद खुश्क किस्म के हजरत बीडी खरीद रहे थे। कालीचरन ने ठोगा दिया कि अब कागज इसीके पास जायेगा। मेरा हाथ खुद ब खुद पतलून के अन्दर पाच का नोट टटोलने लगा। कालीचरन ने लपककर उन्हे गोच लिया और लू बतास का रोना रोकर धीरे से कहा आइये मुसद्दी बाबू कुछ ठण्डा हो जाय। अगला जसे तैयार बठा था। ठण्डा हुआ। तीन लस्सिया आयी। दो वे पी रहे थे एक मुझे पी रही थी। गिलास म बरफ हिलाते हुए कालीचरन ने मुद्दा भी हिला दिया। मेरी तरफ चुटकी *बढायी। मैंने अलविदा कहकर पाच का नोट रुखसत किया।* जिन्हे मुसद्दी बाबू कहा गया था खीसें निपोरकर बाले, 'इसकी क्या जरूरत थी? और नोट नोटो म शामिल कर लिया। लच हुन्त ही कागज की पीठ ठोककर अगले पडाव की जानिब रवाना किया गया।

यहा आकर ज्योमेट्री की एक और थ्यारम जड गयी। साबित करा कि मरहूमा चौमुखी दवी मरहूम मुशी शिवचरन की बहन थी सिफ बहन थी और बहन के अलावा कुछ भी नही थी। बाप साबित करत वक्त कम से कम एक फरीक (यानी मैं) जिन्दा था। अब जो मसला दरपेश था उसके दोनो फरीख खच हो चुके थ। कालीचरन न आखो ही आखो मे 'डबल कहा। दस का नोट आनन फानन वहा पहुच गया जहा के लिए छपा था। मरहूमा मरहूम की बहन करार पायी गयी और कागज की पुश्त फिर एक बार दागदार हुई? कालीचरन बोले अब बस। सिफ हाकिम के दस्तखत होने है।'

कालीचरन ने कागज हाथो हाथ लिया और चिक के बाहर दरी पर

बैठे एक मरगिल्ले स कहा कि दस्तखत होने है। अगले ने हमारी तरफ मुह घुमाये बगैर फर्माया।

"हाकिम लच पर वगले गये ह अब नही लौटेंगे।'

"क्या हुआ था उन्ह ?" हमन आसू पोछकर पूछना चाहा।

कालीचरन ने समझा दिया कि निगोटा कल पर टाल रहा है। हमारा जी चाहा कि जरा चिक के अन्दर झाककर हाकिम के हालात एहाजरा का जायजा लें। कालीचरन न रोक दिया और कान मे कहा कि पान तम्बाकू चाहता है। कोड हम पता लग चुका था। सिफ पान का मतलब 'एक' मय तम्बाकू के 'दा'। दो का एक नोट हमस जुदा हुआ और हाकिम को वगले से वापस ले आया। कागज की पुश्त पर लाल रोशनाई खिच गई। अब बस। मालखाने से बुआजी की किताब लेनी थी। बाबू ए मालखाना न आखा आखा मे प्रश्न उछाला। कालीचरन ने ताइद कर दी। मुडा तुडा अन्तिम पजा भी दम तोड गया। पासबुक लायी गयी। हमन झपटकर आखा स लगायी।

लरजते हाथो से पहला पेज खोला। तेरह हजार की रकम दज थी। हमारे चारों तबक रौशन हो गये। पज पलटते गये। पूरी पास बुक भरी हुई थी। आखिरी पेज पर बलेन्स म साठ रुपये बीस पस थे। सारे तबक अधेरे हो गय। सासें डूबने लगी। कचहरी के वम्बे से पानी पिया और पेड तले कोयले से हिसाब जाडा—खच वासठ रुपये, पचास पसे आमद साठ रुपय बीस पसे।

कालीचरन! जैसी मरी बुआ, वैसी तुम्हारी। उनकी यह जायदाद मैं तुम्हे सौंपता हू। "

और पासबुक कालीचरन की सदरी म ठूसकर मैं सरपट भाग निकला।

मैंने कालपात्र उखड़वाये

कुछ लोग पदाइशी जमाऊ होते ह। पनगोडे म आते ही रग जमा लेते और उम्र भर जहा पाव डालते है सीमेण्ट हो जाते हैं। कुछ पदाइ उखाड होते हैं मेरी तरह। जनम लेते ही साल भर म कई रिश्तेदार उखा कर मरघट पहुचवा दिये। बचपन म ही छोकरियो के गुडिया घर उख और जवान होते ही ताक झाक करने लगा कि किसका किससे जम र है। इस बात पर कभी ईमान नही लाया कि अपना भी कही जम जाय कइ करमजली ऐसी थी कि मेरे घर म जमना चाहती थी मगर बाद ताड गयी कि मनहूस उखाड है। फिर उ होने अपना गुन ताडा और औ जगहो पर जमाया। मैंने भुस म आग लगा दी और जमालो जैसा अल खडा रहा। सबकी सब सुख कामना दे दे क गयी। जहा तक मेरी इण्टलि जे स ने साथ दिया, मैंने किसीकी आदमकीम जमने नही दी। भेदिय बता रहते थे कि आजकल जुगी वाले मुशी जी की कुसुम की टाल वाले बिर बाबू क रमेश से जम रही है। मैंने हफ्ते भर म उखडवा दी। इसी बी मेरा बाप बाकई बाप साबित हुआ और मेरी एसी जमा दी कि आज त उखड नही पा रही है। पिछले पच्चीस बरसो म पचासो झटके मार कि उखड जाये। मगर वह नामुराद मुझ उखाडकर खुद टेप जैसी चिपकी रही। मगर जो उखाड होता है उस बगैर उखाडे चैन कहा।

फिर एक एसा दौर आया कि हर घर के घडे सुराहिया, बोतलें हाडिया गाडी जाने लगी। जिसे देखो वही अपने का घडे मे ठूसकर गडवा के चक्कर मे है। जिनके बाप दादा की न हिस्ट्री थी न जोगरफी, अपना

अपना इतिहास हांडिया म भरकर गडवान लग। कुछ ऐसा बुखार
चिरकुटों पर, कि रातारात जाग जागकर अपना इतिहास लिखवाने ल
जिसके पास जितने टाटीदार लोट थे सब कालपात्र म काम आ गये। व
स वर्षपेंदी के थ। वे भी गड गये कालपात्र म। सबका धुन सवार हो
कि अगली नस्लें हम जानें कि हम कितने पने खा थ और किस तरह ह
जूतिया म दाल बटवा दी। मेरे दिल म भी हूक उठी। हाय कहीं स
घडे अन नाम की दारू मिल जाती तो गडवा देता। पाच सौ साल बाद
पोता के पोते उखाडकर पीने ता मुझे कितनी दुआए देत। तब तक एक
पग पूरी बोतल जैसा तेज हो चुका होता। पोता के पोत मेरा इति
दोहरात। तारीफें होती कि हमारे दादा का दादा काई क० पी० थ
ड्राई इलाके म सूखा मर गया मगर हमारे लिए पाच घडे दबवा ग
मगर मेरी मजबूरी। अद्धे भर के पैस न थ। पाच घडे भर माल होत
अपने पुरखे न तार देता। तबीयत उखड गयी और ऊपर वाले म दु
मागने लगा कि मुझे दूसरा के घडे उखाडने का पल दे। प्रभु न सुन
कालपात्र गडवाने की लहर के बाद एक उखाड लहर आयी। मेरे
इतना मौजूद थी कि किसकी बोतल और किसका मटका कहा गड
पहली आख पडोसी जमुनादास पर गडी थी। यह शख्स जमुना किसी
से नहीं था। सिफ दास ही दास लगता था। चार बीविया तोडतोड
करके पाचवी घुडचढी का पाजामा नपवा रहा था। छठा इश्क लगाय
था। जिस कन्या से लडिया रहा था, उसीका मुजरा चादी की लुटि
मरे घर के पिछवाडे गडवा आया था। मेरे ऊपर जूता था। मेरे
जमुनादास की लुटिया जाटेंगे तो मुझपर थूकेंगे। कहग कि एक व
इश्क का बादशाह। एक खटमल हमारा परदादा था। डरपोक। प
के अलावा कहीं मामला नहीं फसा पाया। मुझे अपनी साख था
बिगाडनी थी। जमुनादास से आख बचाकर खुरपी और सलाख
गया। लुटिया समेत लौट आया। लुटिया में चन्द मसालेदार
जमुनादास और महबूबा के चन्द 'बालिग' फोटो, चोटी, चाली, फूल
खुशबुओं की शीशिया मिली। मैंने महफूज कर ली। अब करता रह
मरदूद का 'फ्यूचर' मैं उखाड लाया।

फिर हफ्ता भर मैं बुनाकी लाला क कलश की खोज म रहा। पता लग गया कि भेडी वाल पतनाल क बायें बाजू गडा है और ऊपर रेण्डी का पौधा लगा है। बुनाकी लाला पदाइशी कुआर थ और शायद खादी पहन पदा हुए थ। श्री धमाथ विधवा आश्रम के हेड थे। रेकाड था उनका कि अपन स्नह और छत्रछाया तल आश्रम की किसी वेवा को मरत दम तक वेवगी नहीं महसूस होने दी। एक रात अपन गुसलखान क बडे टब म भरा साबुन का पानी पतनाले म बहान गया तो दनादन कुदालें मारकर कलमा टब म छिपा लाया। रण्डी का पड ज्यों का त्यों लगा दिया। कलस म काफी रुद्राक्ष और ववाओ क जानी स्टटमण्ट निकल। इनम कहा गया था कि बुनाकी लाला न किस नवत्निी से वेवाओ की परवरिश की है। कई वेवाओ के बवा फोटो थ। एक वेवा न यहा तक लिखा था कि बुलाकी लाला आश्रम की पवित्रता देखकर हर कोई सुहागन वेवा होने के सपने देखती रहती थी।

तीसरा कालपात्र एक पुरान जूत की शक्ल म दफन था। मेर इण्टेली जेन्स सूत्रा ने खबर दी कि मेरे ही मुहल्ले का एक मनहूस के० परशाद अपना पात्र दबवा आया है। यह आदमी इस कदर बेहूदा था कि मेरे राज-मरा के अखबार पढने के बहाने ले जाता था और हफ्ते म डेढ रुपये की रद्दी बेचकर बीडिया खरीद लेता था। सुनने मे आया कि नगर के हिन्दी समाचार के पिछवाडे अपना कालपात्र दाब आया है। एक रात खुद को चादर म लपेटकर लालटेन कुदाल सम्भाले मैं अलीबाबा जैसा जा पहुचा और सिम सिम खोदकर मिट्टी बराबर कर दी। एक पुराना मिलिट्री बूट हाथ लगा जिसमे एक मोजे म ढेरा रचनाए भरी थी। सारी रचनाए मेरी अपनी थी। इस आदमी ने दस्तावेज म अपना नाम के० पी० और उपनाम 'सक्सेना लिखा था। आने वाली नस्ला के नाम एक खत म इसने खुद को टाप हास्य व्यग्यकार घोषित किया था। इस छोटू ने सबूत के तौर पर कुछ सामयिक बडभया, मसलन परसाई, जोशी, त्यागी आदि के साथ तस्वीरें भी बनवाई थी जो मोजे म महफूज थी। जूता हाथ लगत ही मेरी जान म जान आयी। हे भगवान, इसी उम्मीद पर लिखता रहा कि सौ साल बाद तो समझदार लोग पदा होगे और मेरा सही मूल्याकन होकर मेरे सारे

अवाड पोता परपोता को मिलेंगे। इस यमवरन ने तो जूता अपने नाम से दयवा लिया।

अगला कालपात्र अचानक हाथ लग गया। मैं डाक्टर मनूसी जम घटिया और फलट लेक्चरर का कालपात्र खोद रहा था। हाथ लग गया कमर जान 'नजरिया' का कालपात्र। कमर जान सफेद हो चुकी थी और देखादेखी तानपूर के कद्दू मे लिख-पढकर अपना कालपात्र दबा आयी। कद्दू के खोमे म कई एल० पी० रेकार्डों के टुकडे थे और गुमनाम शायर के कलाम की पर्चियां थी। एक स्टेटमेण्ट था कि कमर जान ने उर्दू गजल को नयी रूह दी और उनका गला इस कदर शीरो था कि मक्खियां स बचने को गले पर मच्छरदानी बाधे रहती थी। मुझे झुल सवार हुई कि बुढिया का गला टीप दू। अपनी जवानी मे वह गाव कस्बे के मुजरा म अर मुसी लाना, खुशबू लगाए हो अचरा म गाती थी। आवाज इस कदर वहशी हुआ करै थी कि गाव भर के बच्चे और कुत्ते रात भर रोते रहते थे।

अगले अडतालीस घण्टो के अदर-अदर मेरे एक विश्वासपात्र ने सूचना दी कि 'हाय जान' पिक्चर हाउस के पिछवाडे पुरानी बगिया म कालपात्र की बू आ रही है। वहा अक्सर एक लडकी भी मडराती देखी गयी है। जाहिर है कि इस कालपात्र के पीछे काफी सस्पेन्स और रोमास है। किस्सा कोताह, मैंने आधी रात को उसे निकाल लिया और मिट्टी बराबर करके पीट दी।

बरामद माल से पता लगा कि एक मतबान की शक्ल म कालपात्र शहाबूमियां अचारफरोश की छोकरी गुलबदन ने दबाया था। आन वाली नस्लो की छोकरियां के लिए गुलबदन का स्टेटमेण्ट था कि फिल्मो मे न भागें और इज्जत-आबरू समेटे घर मे बठी रह। मतबान मे राजेश, अमिताभ, धर्मेन्द्र और शशि कपूर की जाली चिट्ठियां थी कि गुलबदन, फिल्मो मे आ जाओ। धर्मेन्द्र ने शराब छोड देने की धमकी दी थी और अमिताभ ने बेहद पीने की। राजेश डिम्पल को छोडने को तैयार था कि गुलबदन, आ जा फिल्मा म। मगर गुलबदन न गयी। कालपात्र म इन हीरो लोगो की रगीन तस्वीरें थी। इत्र की शीशियां और गुलबदन का बिकनी सूट था। बिकनी सूट मिट्टी मे दबाकर बाकी सामान मैंने महफूज कर लिया।

खडे हुए इसान की शान मे

जहा तक इसान के महान होने का प्रश्न है हम भारतवासी सदियो से महानता की दौड मे दूसरे मुल्को से चार किलोमीटर आगे रह है। हमारे यहा बच्चा अपनी पहली बोली म 'ममी' 'पापा' बोलता है। अन्त-र्राष्ट्रीय भाषा से हम प्यार है। अत हम राष्ट्रीय होने स पहले ही अन्त र्राष्ट्रीय हो जाते है। खैर, मैंने शीर्षकानुसार प्रश्न खडे होने का उठाया है। खडा होना हमारा धर्म है। मा बाप के दिल को भी उस समय तक चैन नही आता जब तक छोटा बच्चा खडा न होने लगे और बडा लडका अपने पैरो पर खडा न हो जाये। एक बेचारे कविवर है, जो खडे खडे सिर्फ गुबार देखते रहे। वैसे वे राशन की लाइन मे, बस रेलगाडी म या दवा बेचने वाले के मजमे मे भी खडे हो सकते थे। कुछ लोगो को खडे होने से इतना प्यार है कि वे बोली भी खडी बोलते हैं। उन्ही लोगो के कारण 'खडी बोली' साहित्य म आयी। अगर ये लोग लेटे रहते तो कविताए लेटी बोली' म लिखी जाती। कुछ लोग खुद चाहे न खडे हो, मगर अपनी सीक खडी रखते ह। यह भी एक ऊची बात है कि आदमी सीक खडी रखे। जो लोग ज्यादा हकदार है—सीक ही नही, पूरी झाडू खडी रखते है।

मगर 'खडे' की इस ऐतिहासिक परम्परा म महान वे हैं जो चुनाव म खडे होते ह। चुनाव चाहे चुगी का हो या राष्ट्रपति पद का खडा होना एक शानदार परम्परा है। आम तौर से चुनावीय ढग से व लोग ही खडे होते हैं जो पूरे साल (या पूरे पाच साल) लेटे लेटे जुगाली करते रहते हैं। एसे लोगो की टागो मे फरवरी मार्च के महीने म ऐंठन सवार होती है और

वे खडे हो जाते हैं। इनमे से कुछेक ऐसे हैं जो खुद ढग से बैठना भी नही जानते मगर यार लोग उन्हें सहारा देकर खडा कर देते हैं कि बेटा ! खडे हो जाओ। बाद म जमानत जब्त होते ही बेचारे मुह के बल गिर पडते हैं और कई महीनो घुटने की मालिश करवाते रहते हैं। मैं एक एस सज्जन को जानता हू जो व्यक्तिगत रूप से अपनी पत्नी के सही पति भी साबित न हो सके, मगर हौसला राष्ट्रपति पद के लिए खडा होने का रखते हैं। वह बेचारे साल मे कई बार मुहल्ला कमेटी म लेकर जिला चेयरमैनी तक के लिए खडे होते है और बार बार गिर पडते हैं। मैंने कई बार सोचा कि उन्हे घुटनो की मालिश का तेल पहुचा दू ताकि उनके पैरो मे मजबूती आये और वे साल भर तक लगातार खडे रहें।

खडे होने के पीछे एक गहरा तर्क है। जो आदमी काफी समय तक बैठे बैठे या लेटे लेटे मजे म खाता रहता है और डकारें मारता है उसे अचानक ख्याल आता है कि अब वह खडा हो जाये। काफी दौड धूप और तीन तिकडम करके जब वह अपना खडा होना सार्थक कर लेता है तो फिर आखे मूदकर लेट जाता है और अधमुदी आखो से लम्बी लम्बी लाइनो म खडी जनता को देखकर कहता है 'भई, हम खडे हो चुके। हो गये। अब पाच बरस तक तुम लोग खडे रहो। पाच बरस बाद हम फिर खडे होंगे।"

खडे हुए आदमी के बारे म एक विशेष बात यह होती है कि यह व्यक्ति सही अर्थों म दर्शनीय होता है। कभी कभी तो 'खडे आदमी की मिठास देखकर मुझे धोखा हुआ है कि वह आदमी नही बल्कि गुड की भेली है। उसकी मुस्कराहट इतनी मधुर पारदर्शक और लजीली होती है कि सुहाग रात की दुल्हन भी मात है। उसके मन म मुहल्ले या क्षेत्र के लिए इतना प्रेम होता है कि उसका बस चले तो हर नाली मे सगमरमर जडवा दे और हर बम्ब की टोटी से देसी घी बहा दे। वह जिस वक्त अपनी भक्तमडली से घिरा हुआ छोटे छोटे कदम उठता हुआ, पइया पइया हर घर जाता है और हाथ जोडकर खीसें निपोरता है तो भला कौन ऐसा है जिसका मन पिघल न जाय। मतदाता के पाच साल पहले मर हुए बाप की याद मे बेचारा रो देता है। अब उस बेचारे को भला क्या मालूम कि इन

पाच साला मे मतदाता की मा भी मर गयी है। वह बेचारा तो पाच साल बाद खडा हुआ है। उसे नमन करो कि वह मोटरकार मोह त्याग कर खडा होते ही अपने जूता मे पदल चल रहा है। पाच साल तक आपने उसके बगले पर जूतिया घिसी और वह न मिला। क्या ? क्याकि वह लेटा था। आज बेचारा खडा हुआ है तो अपनी चप्पलें घिसकर आपके जूतो का कज उतार रहा है। वह क्या करे ? लेटे लेटे कही चप्पल घिसती है ?

कुल मिलाकर हे बन्धु ! खडा हुआ व्यक्ति शोभनीय है—दशनीय है—सग्रहणीय है—तथा वोटनीय है। आज उसे उबार ला। उसकी लुटिया डूबने से बचाओ, उसके नाम पर एक मोहर लगा दो। वह तर जायगा, तुम्हे दुआए देगा, और फिर तुमसे कुछ न मागेगा, बरसा शक्ल भी नही दिखायेगा। मुझे हर 'खडे' हुए व्यक्ति से हमदर्दी है। कविवर 'बच्चन' को भी थी, इसीलिए उन्होने काव्य म अपील की

इसी लिए खडा रहा, कि तुम मुझे पुकार लो।
पुकार कर दुलार लो ! दुलार कर सवार लो।

कृपया गर्मियों-भर सिर्फ फल खाइये

एक बात मैं पहले ही अर्ज कर देना चाहूंगा कि इस लेख की प्रेरणा मुझे अपने पड़ोस के एक छोटे बच्चे से मिली है। अभी पिछली शाम मैं अपने चबूतरे पर चटाई डाल, जांघिया लगाये गर्मी की मौज लेता हुआ प्रभु से लौ लगाये लेटा था। तभी मेरे कानों में एक बच्चे की आवाज पड़ी जो बैठे बैठे हिल हिलकर अपना सबक याद कर रहा था। उसके घर शायद अभी खाना नहीं पका था सो वह खाने के इंतजार में अपना सबक रट रहा था। उसने चीख चीखकर पढ़ना शुरू किया 'डर मत फल खा सेहत बना दाल रोटी मत खा। प्रभु के गुन गा। फल से ताकत आती है। ताकत से उम्र बढ़ती है। फल हमारे देश में होते हैं। अनाज बाहर से आता है। फल बढ़िया चीज है। फल खा

तभी शायद उसकी मां ने आवाज दी और वह दरवाजे पर अपनी लालटेन और मेरे लिए चिंतन छोड़कर चला गया। आज मुझे पहली बार पता लगा कि हमें फल खाने चाहिए। मैं निरा मूर्ख अभी तक यही समझता रहा कि सेहत दाल रोटी खाने से बनती है। दाल में प्रोटीन और गेहूं में कार्बोहाइड्रेट होते हैं। बाकी सारे पौष्टिक तत्त्व प्रभु के गुन गान से मिल जाते हैं। इस बच्चे ने मेरे ज्ञानचक्षु खोल दिये। मैं फलों और सेहत के बारे में सोचने लगा। बच्चा सच कहता है। हमारे नेता और मंत्रीगण बेचारे मात्र फल खाते हैं। इसी कारण इनकी रिटायर होने की कोई उम्र नहीं होती। चन्दन शय्या तक पहुंचने तक बेचारे देशसेवा करते रहते हैं। आम आदमी कमबख्त दाल रोटी भकोसता है और जटठायन तक

घटता है। खट्टी डकारें आती हैं और मरीज को अपने पैसों की याद में हार्ट अटैक होने लगता है। सो लीची भी बेकार है। काट दी। आलूबुखारा ठीक है। मगर इसके दामों के सुनने मात्र से बुखार का अंदेशा रहता है। भारतीय समाजवाद के अन्तर्गत आम आदमी अगर बुखार की हालत में सिर्फ आलू खा सकने के पैसे रखता होता वह कह सकता है कि वह आलू-बुखारा खा रहा है। मुझे न बुखार पसंद है न आलू। नहीं चलेगा। खिन्नी-फालसे उत्तम हैं। पर ये इतने छोटे छोटे होते हैं कि इन्हें पेट भर खाने के लिए दफ्तर से छुट्टी लेनी पड़ेगी। खिन्नी फालसे खाने से दिमाग बढ़ता है। मगर दिमाग ज्यादा बढ़ जाने से आदमी के नेता बन जाने का भय रहता है। मनुष्य रूप में जन्म लेकर मैं नेता बनने का पाप नहीं कर सकता। भगवान को मुंह दिखाना है। कसरू के स्मरणमात्र से किसीकी खोपड़ी जैसा बोध होता है। कसरू खाने से अच्छा है कि आदमी दूसरे की खोपड़ी खाता रहे। मैंने तय कर लिया कि पपीता सर्वोत्तम है। गर्मी भर पपीता सेवन करके हैल्थ बनाऊंगा। समाचारपत्र में पपीते का बाजार भाव देख-कर मैंने मीजान लगाया कि अपना सारा प्राविडेंट फंड निकाल लेने पर भी मैं पपीता नहीं खा सकता। अब सिर्फ बेल बचा है। चाहे उसे खाऊं या उससे अपना सिर फोड़ लूं। फिर भी मैंने निश्चय कर लिया है कि मैं गर्मी भर फल खाऊंगा। गीता में भगवान कृष्ण ने कहा है कि फल की आशा मत रखो। मैं आशा रखूंगा। न कोई फल सही काशीफल उर्फ कद्दू तो है। उसे ही गर्मी भर खाऊंगा। फल खाने से सेहत बनती है। आप देखेंगे कि अपने निश्चय पर दृढ़ रहकर अगले साल मैं दारासिंह को चैलेंज दे दूंगा। फल खाना अच्छी आदत है।

निगोड़े को मजबूत करो

जिस समय वे दल बल सहित मेरे द्वारे पधारे, मैं घर म नग धडग जाघिया पहन रात की बासी रोटिया चाय म भिगोकर नाश्ता ल रहा था। बच्चो ने बताया कि वे आये ह और उनके पीछे कुछेक और भी हैं जो कापिया, रजिस्टर, पर्चे, बिल्ले वगैरह सभाल हुए है। मैंने जाघिया पर बिस्तर की चादर लपेट ली और खोपडी खुजलाता हुआ एक आदर्श भारतीय क्लर्क जैसा बाहर आया। उन्होने कुछ इस अदाज स लपककर बाहें फैलाते हुए मुझे सीने म समेट लिया कि मुझे मेरा मरहूम ससुर याद आ गया, उन्होने भी बरसो पहले फेरो के बाद मुझे इसी तरह छाती से लगाया था और एक उम्र भर की इल्लत मेरे साथ बाध गये थे।

मैंने हर तरह उन्हें पहचानने की भरपूर कोशिश की, मगर वह कुछ ऐसे घरेलू ढग से मुस्करा रहे थे जसे मेरे पिता जी के साथ कचे और गिल्ली-डडा वगरह खेलत रहे हो। तभी उनका एक चमचा लपककर आगे आया और मुह म पेडे घोलता हुआ बोला, 'के० पी० भई, आजकल बडा धासू लिख रहे हो। हमारे यह निगोडेनाथ जी तो तुम्हारी रचनाओ पर मर मिटे ह। तुम सचमुच महान हो।"

मेरे दिमाग म फौरन बाबू भगवतीचरण वर्मा की एक कविता की पक्तिया गूज गयी, 'मैं महान हू, राम कहो। कैसे आय, किमसे तुम्हारा अटक रहा है काम कहो। मैं महान हू राम कहो।'

मैंने फौरन भगवती बाबू वाला पोज ले लिया और हल्की-सी मुस्कराहट छोड दी।

चमचा पुन चालू हो गया, "भई के० पी०, ऐसा है कि तुम्ह त्रिगोडेनाथ जी को मजबूत बनाना है।"

मैंने हडबडाकर एक निगाह निगाडे जी के हृष्ट पुष्ट दबकाय पर डाली। उनकी भुजाओं म बल था, चेहरा सुर्ख हो रहा था, मूछें एरियल समान खडी थीं और सीने की चौडाई बडे अरज बा कौन जसी प्रभावशाली थी। भला मैं एस सुगठित शरीर का कस बना सकता हू ? मुझे लगा जस व मेरे सींकिया जिस्म का मजाक हों। मुझे चुप देखकर चमचा पुन खनक उठा, 'क्या सोच रहे, बडी आशा लेकर आये है। तुम्ह निगाडे जी को मजबूत बनाना ह

देखिये, ऐसा है कि मजबूत बनाने वाली सारी चीजें पिछल पचीस योजनाओं से मुझस रूठी हुई हैं। दूध मलाई का मैंने सि सुना है। देशी घी की मुझे सिर्फ बचपन की याद है। बादाम मैं ख नहीं पा सकता। सेब-अंगूर को हाथ लगाते डरता हू। फि निगाडे जी को कैसे मजबूत बना सकता हू ? स्वय को मजबू लिए मैं आधा आधा लीटर पानी सुबह शाम पीता हू। कहिय करू।"

'हे हे हे! आप निरे परिहासी हैं। हमारा मतलब यह और भाभी जी अपना वोट इनके बक्स म गेर दें। बस य मजबूत आपको याद होगा कि यह पिछली बार गीदड पर बठ गय थे पुन गीदड पर चढ़े हो रहे हैं।'

'यह ऐतिहासिक गीदड कहां बंधा है ?' मैंने पूछा।

हे हे हे! पुन परिहास अरे भई, गीदड इनका चुन आप ही लोगों के आग्रह पर यह पुन खड़े हुए हैं। अब इन्ह म भी आप ही का काम है।"

"मगर मेरी कमजोरी का क्या होगा ? मैं भी थोडा सा चाहता हू, ताकि नौकरी चला सकू। मैंने धीरे स कहा।

"अवश्य। वह भी होगा। बस इन्हें कुर्सी लेन दीजिये, जब दिल्ली का खजाना छूटते देर नहीं लगेगी। चारों ओर बहायेंगे निगाडे जी। घी दूध धडल्ले स बहेगा फल-फूल

साधन सिर मुकाये खडे रहगे। ऐश्वय का बोल बाला होगा। आप देखते रहिय।"

'मैं निगोडेनाथ जी के व्यक्तिगत सुख साधना की नही, अपनी वात कर रहा हू।" मैंन वात साफ की।

ह ह ह ! भई तुम बडे हास्य व्यगी आदमी हो। ये सारी सुख सुविधाए तुम्हारे लिए ही जुटाने हेतु यह खडे हो रहे हैं।'

'इनके दिल म अचानक यह यतीमखाना कसे खुल गया?' मैंन डरते डरत पूछा।

' भइय, सब तुम्हारे समयन की बातें नही हैं। बस, तुम इ हें मजबूत बना-भर दो, फिर देखो। हम चाहते ह कि इन्कलाब आये। सुख सुविधाए मिलें भाषा के मसले हल हों।"

' आप कौन-सी भाषा का उत्थान करेग?" मैंने पूछा।

ऽ (सी तुम कहोग। निगोडे जी का अपना कोई स्वाथ थाडे ही है। ' अपनी काई भाषा है। इ हान भाषा सीखन स पहले ही स्कूल ा। दूध यह पीत नही, घी इ हें पचता नही। कभी-कभार लेते हैं। हर प्रौला इनक निकट मौसी और हर कन्या भतीजी ` त्यागी पुरप का मजबूत नही बनाओगे ता फिर और

ा। हामी भर ली कि सपत्नीक उन्हें मजबूत बनाऊगा। र धीमी सी डकार ली जिसम विशुद्ध ह्विस्कीय गव इलाइची पेश की। पडोस की कुछ कन्याए इस वरागी और निगोडेनाथ जी बडे स्नह से आखो ही आखा म हे थे। कुर्सी की आर बढत हुए आदमी की सम्पूण म छलक रही थी। इधर मैं अपनी बासी रोटी चाय पत्नी को समझा रहा था कि निगोडे को मजबूत

चमचा पुन चालू हो गया भई के० पी०, ऐसा है कि तुम्हें हमारे निगोडेनाथ जी को मजबूत बनाना है।'

मने हडबडाकर एक निगाह निगोडे जी के हृष्ट-पुष्ट देवकाय शरीर पर डाली। उनकी भुजाओं म बल था, चेहरा सुर्ख हो रहा था, तनी हुई मूछे एरियल समान खडी थी और सीने की चौडाई बडे अरज वाली मार कीन जैसी प्रभावशाली थी। भला मै एसे सुगठित शरीर को कैसे मजबूत बना सकता हू ? मुझे लगा जैसे वे मेरे सीकिया जिस्म का मजाक उडा रहे हो। मुझे चुप देखकर चमचा पुन खनक उठा क्या सोच रहे हो ? हम बडी आशा लेकर आये है। तुम्हे निगोडे जी को मजबूत बनाना है।"

'देखिये ऐसा है कि मजबूत बनाने वाली सारी चीजें पिछली दो पच वर्षीय योजनाओ से मुझसे रूठी हुई है। दूध मलाई का मैंने सिर्फ नाम ही सुना है। देशी घी की मुझे सिर्फ बचपने की याद है। बादाम मैं देखकर भी नही पहचान सकता। सेब अगूर को हाथ लगाते डरता हू। फिर भला मैं निगोडे जी को कैसे मजबूत बना सकता हू ? स्वय को मजबूत रखने के लिए मैं आधा आधा लीटर पानी सुबह शाम पीता हू। कहिये तो हाजिर करू।"

हे हे हे ! आप निरे परिहासी है। हमारा मतलब यह है कि आप और भाभी जी अपना वोट इनके बक्से म गेर दें। बस, ये मजबूत हो जायेंगे। आपको याद होगा कि यह पिछली बार गीदड पर खडे हुए थे। इस बार पुन गीदड पर खडे हो रहे है।'

'यह ऐतिहासिक गीदड कहा बधा है ?' मैंने पूछा।

'हे हे हे ! पुन परिहास, अरे भई गीदड इनका चुनाव चिह्न है। आप ही लोगो के आग्रह पर यह पुन खडे हुए हैं। अब इन्हे मजबूत बनाना भी आप ही का काम है।"

मगर मेरी कमजोरी का क्या होगा ? मैं भी थोडा सा मजबूत होना चाहता हू ताकि नौकरी चला सकू।' मैंने धीरे से कहा।

अवश्य। यही होगा। बस इन्हें कुर्सी लेने दीजिये, फिर देखिये। जन हित का झरना फूटते देर नही लगेगी। चारो ओर एक इन्कलाब लायेंगे निगोडे जी। घी दूध धन्नल्ले से बहेगा फल फूल पटे रहेंगे। सुख

साधन सिर झुकाये खडे रहगे। ऐश्वय का बोल बाला होगा। आप देखते रहिय।"

' मैं निगोडेनाथ जी के व्यक्तिगत सुख साधना की नही, अपनी बात कर रहा हू।" मैंन बात साफ की।

' हे ह ह ! भई, तुम बडे हास्य व्यगी आदमी हो। य सारी सुख सुविधाए तुम्हारे लिए ही जुटाने हतु यह खडे हो रहे है।"

"इनके दिल म अचानक यह यतीमखाना कैसे खुल गया ?' मैंन डरत-डरते पूछा।

' भइय, सब तुम्हारे समझने की बातें नही है। बस, तुम इ हे मजबूत बना-भर दो फिर देखो। हम चाहते ह कि इ कलाब आये। सुख सुविधाए मिलें, भाषा के मसले हल हो।"

' आप कौन-सी भाषा का उत्थान करेंगे ?" मैंन पूछा।

' जो सी तुम कहोग। निगोडे जी का अपना कोई स्वाथ थोडे ही है। न ही इनकी अपनी कोई भाषा है। इ होने भाषा सीखने से पहले ही स्कूल छोड दिया था। दूध यह पीते नही घी इ ह पचता नही। कभी कभार फल फलेरू ले लत है। हर प्रौढा इनके निकट मौसी और हर क या भतीजी तुल्य है। भला एमे त्यागी पुरप का मजबूत नही बनाओगे तो फिर और किस ?"

मैं डाउन हो गया। हामी भर ली कि सपत्नीक उ हें मजबूत बनाऊगा। उ होन हाथ जोडे और धीमी-सी डकार ली जिसम विशुद्ध ह्विस्कीय गध थी। चमचो ने उ हे इलाइची पेश की। पडोस की कुछ क याए इस वरागी दल को देख रही थी, और निगोडेनाथ जी बडे स्नेह से आखो ही आखो म बालाओ का तोल रहे थे। कुर्सी की ओर बढते हुए आदमी की सम्पूण मादकता उनकी आखो म छलक रही थी। इधर मैं अपनी बासी रोटी चाय के साथ निगलता हुआ पत्नी को समझा रहा था कि निगोडे को मजबूत बनाना बहुत जरूरी है।

दो बेचारे

जब से कनपटी पर कलमे पौन इच नीचे उतर आयी हैं मेरी आत्मा आधुनिक हो उठी है। चालीस की उम्र के फेंटे म आ चुके कितन ही प्रौढ छटपटा रहे हैं कि उनकी आत्मा आधुनिक नही हुई, मेरी हा गयी। अभी मैं लगभग तीस फीसदी ही आधुनिक हुआ हू, मगर तन मन और कपडो म क्राति आ चुकी है। कसे वस्त्र त्यागकर ढीले-ढाले बाजेवालानुमा कपडे पहनन का मन ललक रहा है। केशा स मोह बढ गया है। सिफ सिर पर पचास फी सदी केश ही रह गये हैं पर अब उनके प्रति अनुराग उमड पडा है। मूछें भार लगने लगी है। मुडानी हागी। कुल मिलाकर चेहरे पर कुछ ऐसा नमक लाना होगा कि लोग बाग घबराकर कह दें कि यह दखो बाबी का हीरो जा रहा है। मैंने बाबी दखी तो तीन रीलें सरक चुकने तक समझ ही न पाया कि उन दोना बच्चा म कौन नर है कौन मादा ? राज कपूर को मुझपर तरस आ गया और चौथी रील म उसन स्वीमिंग पूल पर नहान का दश्य दिखाकर मेरी मुश्किल हल कर दी। वह जो टू पीस म था वह थी', वह जा वन पीस म था वह था'।

आधुनिक हाने का यही चमत्कार है कि जब तक आदमी एक-एक पीस न परख ले नही कह सकता कि 'वह जा रही है या जा रहा है'। आधा नर आधा मादा बा रहन स आदमी देवत्व को प्राप्त होता है। भगवान न भी एक बार अधनारीश्वर का रूप लिया था। हमारे यहा की सारी जवान आबादी भगवान बनती जा रही है। किसी आधुनिक का दखता हू तो मन म भक्तिभाव जागता है और तेरी महिमा जग स यारी-

यारी ' गान को जी करता है।

मरे ताऊ का लडका आधुनिक यानी 'माड' है। कभी-कभी उस देख-कर मुझे अपनी ताई का धोखा हा जाता है और मैं उसके चरण छ लेता हू। बाद म पता लगता है कि वह ताई नही, ताई पुत्र है।

हा, ता म कह रहा था कि मेरी आत्मा एक तिहाई 'माड' यानी आधुनिक हा चुकी है। मन म वैराग जागता है तो गुरु की खोज होती है। मैं भी तलाश मे था कि कोई सौ फीसदी आधुनिक मिल जाये तो गुरु कर लू।

बाजार स गुजर रहा था। मित्र रामबोध सिनहा साथ थ। उनकी आत्मा मुझसे सीनियर है। वे पचास प्रतिशत माड हैं। मूछें घुटा चुके है और जटाए ग्रीवा छ रही है। नुक्कड पर मुडत टी दो अदद प्योर आधुनिक झाल" लटकाय चश्मोले (बडा चश्मा) चढाय और लगभग झोला पहने नजर आय। दोनो की गध स रामबोध को बाध हुआ कि एक नर है एक मादा। पर कौन क्या है, ब्रह्मा भी नही जानता। रामबोध ने उन्ह रोका और बोला 'दीक्षा लनी है। हम दोनो आशिक रूप स आधुनिक है पूरे होना चाहत है।"

वे दोना मुस्कराये। रामबोध न नतमस्तक होकर पूछा "कृप्या बतायें कि आपम से कौन शकर है कौन पावती ?" दोना हसे। दोना की हसी एक जैसी ही जनानी थी। हम दोनो पुन घपले म पड गये।

"हाय, आप इतना भी नही पहचान सकत ? मैं लडकी हू।' एक न बालो को झटका देकर कहा।

'यह दूसरी आपकी सहेली है ?" रामबोध न पूछा।

' हिश ! बाय फ्रेड है। आप लडका लडकी का भेद नही जानते ? '

' समाजवाद मे भेदभाव कसा ? तम्बू शामियाने जैसे ढीले ढाले वस्त्रो मे भेद कसे पता लगेगा ? आप दोना ही ग्रेट हैं।" मेरा सिर श्रद्धा से झुक गया।

' क्या हम आपस कुछ प्रश्न पूछें ?" रामबोध ने कहा।

"श्योर। पूछिय।"

' आपने पुरुष होते हुए भी पुरुष धम का बहिष्कार क्या किया ?"

मैंने उनम स जो पुरुष था उसस पूछा।

हिश ! पुरुष मैं नही, वह है। अभी तो बताया था।" उसन कहा।

सारी हम लज्जित ह। अच्छा, आप ही बताइये कि आपको पुरुष होकर भी पुरुष बने रहने से क्या इनकार है ?" रामबोध न पुरुष से पूछा।

"इसलिए कि मुशी प्रेमचद ने कहा है कि जब पुरुष मे नारी के गुण आ जात हैं तो वह देवता बन जाता है। मैं देवता बन रहा हू।" उसने अपनी लटा को सहलाकर कहा।

आप ढीली ढाली आलू के बोरा जसी पतलूनें क्या पहनते हैं ?"

इसलिए कि हमारा भविष्य ढीला है। जिनका भविष्य चुस्त और फलदायक है व चूडीदार कसे पाजामे और शेरवानी पहनत हैं।" नारी न कहा।

'केशा के प्रति यह मोह क्या ? रामबोध ने पूछा।

केश लहराते रहने से हमारी गरदनें सुरक्षित रहती हैं। नर नारी का भेद भाव मिटता है। दो बार की कटिंग के पैसो म एक मैटनी का टिकट बनता है। अतत हम चितू कपूर लगत हैं।'

"क्या आपके पिता जी भी राज कपूर लगते हैं ?' मैंने पूछा।

नही। वे पुरान पोगापथी हैं। दखने म हगल लगत हैं।'

नारी जाति के प्रति आपका क्या दष्टिकोण है ? रामबोध ने दूसरी यानी बाबी से पूछा।

ह्वाट नारी जात ? हम माड हैं। नारी वारी हमारी मा और नानी थी। हम बाबी हैं। ओनली बाबी।'

फिर भी शरीर-रचना स ता आप नारी है। इस सत्य को आप कमे नकारेंगी ?'

' रचना फचना कुछ नही। हम माड है। नारी वह है जो बच्चे जने। हम मुर्गीखाना नही खोलना। फ्री लाइफ। हम एक प्रकार की क्राटी ला रहे हैं। वह बोली।

क्राटी नही क्राति। मगर क्राति क लिए कमर कसकर रहना पडता है। मैंने शका उठायी।

"हमारी कमरे कसी हुई है। देखते नहीं कि ६ इंच चौड़ी बेल्ट कसी है हमारे परेलल की कमर पर।' वे ोना आगे बढ़ गये। एक बार फिर उन्हें देखकर धोखा हो गया कि कौन 'जा रही है, कौन जा रहा है। मैं और रामबोध ७ इंच चौड़ी बेल्ट खरीदने चल पड़े। हमें अपनी शेष आत्मा भी आधुनिक बनानी थी। रामबोध अभी से जनाने ढंग से चल रहा था।

जन्म तथा जनाजा

मुझे अचानक बठे ठाले एक दिन खुशी हुई कि ज म के ठीक चालीस साल बाद मेरी आत्मा मे भारतीयता का सचार हो गया। इससे पहले सिफ मेरा शरीर भारतीय था आत्मा मिक्सड थी। अत तब मेरी आत्मा सिफ व्हिस्की मागती थी, अब ठर्रा भी चला लेती है। आत्मा के शुद्ध भारतीय होने का सकेत मुझे तब मिला जब एक दिन मेरे मन म एक सास्कृतिक सस्था के गठन का अकुर फूटा। आदमी जब पूरी तरह भारतीय होने लगता है तब सबसे पहले सास्कृतिक कायक्रम करता है। मेरी आत्मा म भी 'जन गण मन बज उठा। मुझे तलाश हुई कि जल्द ही कोई सास्कृतिक सस्था ज्वाइन कर लू। अच्छी सास्कृतिक सस्था ज्वाइन कर लेने से भारतीयता की भी रक्षा होती है और आदमी धीरे धीरे आल इडिया' हो जाता है।

सुयोग कुछ एसा हुआ कि उ ही दिनो मुहल्ले म छूम छ न न नाम की एक सास्कृतिक कमेटी का गठन हो रहा था जिसका उद्देश्य साहित्य, नत्य, सगीत एव नाटक का ऊपर उठाना था तथा कुछ लोगो को खुद ऊपर उठना था।

मैं भी वहा गया और जात ही वाइस प्रेसिडेण्ट चुन लिया गया। मेरे खिलाफ कोई नही खडा हुआ। सब एकमत थे कि मैं शक्ल-सूरत से ही वाइस प्रेसिडेंट लगता हू। मीटिंग म हम सब मिलाकर बीस थे—सोलह नर और चार मादाए। नरा म एक बूढा था, दो अधबूढे (मुझे लेकर) और तेरह जवान। कयाए चारो जवान थी और वेशभूषा तथा मेकअप

स एकदम सास्कृतिक लगती थी। सास्कृतिक सस्था 'छम छ न न' के पदाधिकारी चुन लिये गये। कुमारी चुनझुना को सेक्रेटरी चुना गया। शेष तीनो झुलसा रही थी कि काश, व भी ऊची चोली और नीची साडी बाधकर आयी होती तो चुन जाती, जो सबस अधिक खुले रूप से सास्कृतिक थी वह च न ली गयी। सबन उ`ह बधाई दी (तथा नर सदस्या ने मन ही मन उनके सुगठित शरीर को भी बधाइ दी)।

घटनास्थल पर ही सबने दो दो रुपये च`दा दिया ताकि सस्था का लेटर हेड, लिफाफे, मोहर और पान-पत्ता वगैरह आ सके। सालाना च दा पच्चीस रुपया रखा गया जो मास के अ`त तक जमा करना था। चाय पानी के बाद गायन हुआ कुमारी झुनझुना का।

उ`होने मीरा के एक भजन के बाद जोवन से चुनरिया गिर गिर जाय । सुनाया। परम्परागत तालिया बजी और सस्था के गठन की प्रेस रिपोट तुर`त भेज दी गयी ताकि कल छप जाये।

अगले सप्ताह शुभ महूत देखकर सस्था का उद्घाटन हुआ। एक घटे का सास्कृतिक कायक्रम होना था। एक स्थानीय 'बाबू जी' उद्घाटनाथ बुला लिये गये। बाबू जी के दा शब्दो के बाद (जो पतीस मिनट तक चले) कायक्रम चालू हुआ। आर्केस्ट्रा पर जवानी दीवानी' की एक धुन बजी और इसके बाद कुमारी झुनझुना का कत्थक हुआ। मच पर अपन मेकअप और टाइट बधी साडी चोली मे इतनी अधिक सास्कृतिक लग रही थी कि हर एक के दिल मे तबला बज रहा था। फिर कुछ लोकल कविया की धर पटक हुई और दो छोटे बच्चो ने युगल स्वर म 'कमरे म बद हा, और चाबी ' गाया। मच पर काम करने वालो ने पीछे जाकर चाय वाय पी।

बाबू जी अपना गेंदे का हार कधे पर डालकर सस्था के दीर्घायु होन की कामना करके चले गये। इसकी भी प्रेस रिपोट आयी।

फिर महीना भर बीत गया। किसीने पच्चीस रुपया वार्षिक च`दे का भुगतान नही किया। रसीद बुको का कोरा कागज कोरा ही रह गया। हा, इस बीच कई उपलब्धिया हुइ। विमोचन कायक्रम के दौरान ज्वाइट सेक्रेटरी का लडका रामधन तिवारी सेक्रेटरी मिस चुनचुना पर मर गया और

दोना क दिला स प्रेम के परनाले वह निकले। उन दोना का अब भी चल रहा है। रसीद बुके और लेटर हेड या ही पडे ह जि ह प्रेसीडेंट की पत्नी धाबो के कपडे लिखने के काम म ला रही ह।

मुझे दु ख हा रहा है कि हम लोग थोडी ही देर के लिए सास्कृतिक होकर रह गये। हाय, हम लोग आल इडिया' होन की याजना लकर चले थे। मैंन प्रेसिडट से कहा कि सस्था को आगे बढाओ ता उ हान अपन दमे का बहाना लेकर गर्मियो तक के लिए बात टाल दी। कोषाध्यक्ष के यहा खुशी होन वाली थी, सो वह उधर फमा था। कुमारी झुनझुना और रामधन तिवारी शीघ्र ही विवाह सूत्र म बधकर अपना अलग सास्कृतिक कायक्रम शुरू करन वाले थे। उ होन हम शादी काड दिया और बदले म आशीवाद ले लिया। सयोजक चिमनलाल अपन गुड के ध धे म एसा लिपटा था कि बोला, "तुम लोग चलाओ तब तक। अपना बारह क्वीटल गुड निकालकर मैं भी आऊगा।'

किस्मत का मारा एक वाइम प्रेसिडेंट मैं बचा था। मेरी आत्मा इम कदर छटपटा रही थी कि कई बार जी मे आया कि मै अकले ही वह सब कुछ कर डालू जो सास्कृतिक है। खुद ही उदघाटन करू, खुद गाऊ खुद नत्यक वगरह करू और छूम छ न न का जीवित रखू। लेकिन पत्नी ने रेड मार दी। उनका मत था कि सास्कृतिक होने की बजाय घर म पुताइ कराना और गहू पिसाना ज्यादा जरूरी है। मुझे दु ख है कि सस्था समाप्त होते ही मेरी आत्मा पुन असास्कृतिक हो रही है। आयी हुई भारतीयता वापस लौट रही है। फिर भी मुझे इतनी तसल्ली है कि मैं एक भूतपूव सास्कृतिक सस्था का भूतपूव वाइस प्रेसिडेट हू। आज के युग म 'भूत होना भी बहुत बडी बात है।

हरियाले बन्ने ! तुझ पे खुदा की मार !

मैं जो झठ बाल रहा होऊं तो मुझे मेरे कोट का राशन न मिले । अपने तजुर्वे की बिना पर मैं कह सकता हू कि इन्सान की जिंदगी म सबसे मनहूस दिन वह होता है जब वह घोडी चढता है । मद बच्चा भूल जाता है कि उस दिन के बाद वह बेलगाम घोडी उसपर हावी रहेगी जिस खरीदने वह जा रहा है । मनहूस से भी बढकर 'दर मनहूस' वह है जिसकी ससुराल म सास नाम की भयानक चीज मौजूद हो । मेरी सास उम्र के साठ रन बनाकर आउट हो गयी । मैं डर रहा था कि कही बुढिया सेन्चुरी बनाने पर न तुल जाय । मने जब जब बाजे गाजे गस क हडा और ट्वीस्ट के नाम पर सडक पर जूतिया रगडते छोकरो के बीच किसी दूल्हा मिया को घोडी पर सवार देखा है मेरी आखो मे आसू आ गये हैं । हाय ! यह मासूम इस वक्त कैसा खुश खुश पृथ्वीराज चौहान जसा तना बैठा है । कल को यही चौहान राशन की गठरिया लाद लादकर इब्राहीम लोदी हो जाएगा । प्रभु, इसकी रक्षा करो !

म जब नया नया जवान हुआ था और एक अदद बीवी लाने ससुराल चला था तो मा बाप की जिद्द के बावजूद रिक्शे पर बैठकर गया था हालाकि मागे की मोटरें और किराये की घोडिया मिल रही थी मगर मैं अडा रहा कि रिक्शे पर जाऊगा । कारण ? मैं जानता था कि जवानी का यह टेम्परेरी बुखार उतरते ही मुझे सारी उम्र इल्लतों का रिक्शा खीचना है तो आदत क्या बिगाडू ? ससुराल पहुचकर मैंने किसीसे अपने जूते नही खुलवाये । एक तो यह डर था कि शाली के बहाने मिले नये जूते कोई

याड न दें दूसरे यह कि उम्र भर तो मुझे ससुरालिया के जूते खोलने हैं, सगुन क्या बिगाड़ू ? मेरा तजुर्बा गवाह है कि शादी के तीन हफ्ते बाद तक दामाद नामक जन्तु मुरादाबादी कलई के लोटे जैसा चमकता रहता है। फिर आहिस्ता आहिस्ता कलई इस हद तक उतर जाती है कि यही लोटा बाथरूम का लोटा होकर रह जाता है। कोई उसे हाथ नहीं लगाता और खुद वह ससुराल में इतना अलग हटकर बैठता है कि किसीसे छू न जाये।

मैं मानता हूं कि घोड़ी पर चढ़े नये नये पृथ्वीराज के मन में बड़ी उमंगें होती हैं। कम्पनी से इशू हुए गैस के ताजा सिलण्डर जैसा भरा हुआ होता है। बदन पर ताजा सूट होता है और पांव में ताजा जूतियां और जुराबें ! मन में ४४० वाल्ट अरमान होते हैं कि बस घोड़ी पर ही बैठे रहो ! 'स्वागतम' का झिलमिलाता बोर्ड होता है और सोफे पर उसके अरमानों की हमा मालिनी डेढ़ किलो कलाबत्तू में लिपटी बैठी होती है। दूल्हा आहिस्ता से चुटकी भी लेता है तो वह ताजा धुले खद्दर जैसी झेंप-कर सिकुड़ जाती है। हाय, दूल्हे को क्या मालूम कि कल से तमाम उम्र दूल्हे का झेंपते रहना होगा।

खुश हो ले बेटे ! आज तेरे मन में कल्याण जी आनन्द जी बज रहा है। कल से निर्गुण न बजने लगे तो मुझपर लानत ! मेरे एक दोस्त की शादी खाना बरबादी हुई। मैं भी मातम में शरीक हुआ। नौजवान दूल्हा मियां अपनी सवा छटांक मूंछों में गोंद मारकर घड़ी के सवा नौ की तरह ऐंठे हुए थे। दरवाजा निपट जाने पर जब डिनर पर बैठे तो एक भुक्तभोगी दोस्त ने टुकड़ा कसा अब, मूंछें डाउन कर ले। कल से तो डाउन हो ही जानी हैं।' दूल्हा मियां मुस्कराये।

दुल्हन घर छोड़ने के गम में टेम्परेरी रूप से दुखी थी। दोस्त ने पुन ठंडी आह भरी, 'बस बेटे ! यह तेरी आखिरी मुस्कराहट है। कल से वह मुस्करायेगी और तू इस मनहूस घड़ी को उम्र भर रोता रहेगा। हम लोगों ने टुकड़ेबाज दोस्त को डांट दिया।

आज उसी नये ब्याह को देखता हूं तो सांस लेने का जी चाहता है। मूंछें सात बटा बीस हो गयी हैं, आंखों पर मोटे चश्मे के लेंस सवार हैं

और शादी का सूट कटवाकर दोनो बच्चो के कोट सिलवा चुका है । कुल मिलाकर भारतीय क्रिकेट टीम के तावडतोड हार हुए कप्तान जैसा लगता है । जानता था कि नही जीत पायेगा, फिर भी खेला । यही छोकरा पहले मेज पर मुक्के मार मारकर बात करता था और चौबीसो घटे 'फिल्म फेयर' और गुलशन नदा बगल म दाबे घूमता था । अब पानी भी प्लेट म डालकर पीता है कि कही गम न हो । बगल मे मरम्मत के जूते और कडवे तेल की *पिपिया दाबे रहता है । बेचारा इस कदर सताया हुआ है कि किसीको* घोडी चढे देखता ह तो सिर स टोपी उतारकर सीने पर क्रास बना लेता है । प्रभु ! इसकी रक्षा करो । मगर प्रभु बेचारे किस-किसकी रक्षा करे ? प्रभु ने तो नही कहा था कि माथे पर बेला गुलाब डालकर घोडी पर चढ जाओ ।

अकलमन्द वह ह जो दूसरे को आखें मुचमुचाता देखकर झट अपना चश्मा बनवा ले । हमारे एक दोस्त के पिता मन तीस म ही चल गये । *भगवान का दिया सब कुछ है फिर भी तीन पुश्तो से कुवारे है और मूछे* ऐंठ रहे ह । दोस्त ने अपने बच्चे तक को स यास दिलवा दिया है ताकि चौथी पुश्त भी कुवारेपन का अनन्त सुख भोग सके ।

हमारे एक और प्रशसक है जो अभी तक भगवान की असीम अनुकम्पा स स्वयमेवक ह, अर्थात् घाडी नही चढे है । अक्सर हमारे घर आते हैं और बीवी बच्चो की ज्वाइण्ट हाय तोबा का शोर सुनकर ललचाने लगते ह । ऐसे क्षणो म दोस्त ही दोस्त के काम आता है । मैं तुरत उनका माया-मोह भग कराते हुए सलाह देता हू, 'घर म हाय तोबा मचवाने का इतना ही शौक है तो मेरे बीवी बच्चो को ले जाओ । और खेलो । तुम भी खुश, मैं भी । मगर भगवान के वास्ते घोडी चढने का अपराध न कर बठना ।'

तभी अन्दर से आवाज आती है, 'अजी क्या घटो स गप्पे लगा रहे हो । मुन्ना कब से नाली पर बैठा है ।"

दोस्त का माया मोह-पलायन कर जाता है और वह कमर म व द हो । *गुनगुनाना छोडकर तुरन्त कबीर की साखी पर उतर आते हैं ।* जैसे मेरे दोस्त के ज्ञानचक्षु खुले हैं वैसे ही ईश्वर करे हर कुवारे के खुल जायें । भुक्तभोगी मन से पूछो तो एक ही स्वर निकलेगा, शादिया वादिया

मंत्रियो अत्रिया नेताजा शेताजा के लिए ठीक ह। वने व नी क सुख के लिए भी काफी माल-पानी हो, और बाल बच्चा का भविष्य भी सफ हो। घाडी चढना हर एरे गैरे नत्थू खरे का सूट नही करता। कुर्सी पर पाव रखकर घोडी चढ भी गया तो उम्र भर दुलत्ती येलता रहेगा।'

सो ह कुवार भाइयो ! हमारी हालत तो पनीर जसी है जा दोबारा दूध नही बन सकता। मगर तुम दूध हो। पनीर मत बनना। लडकिया को मरी कोई सलाह नही। अडियल हाती ह। वे चाह ता शादी कर सकती है।

इस देश को रखना मेरे नेता

मैं नहा धोकर अंगोछा लगाये, अगरबत्ती सुलगाये कुछ एक घटिया दशहरिया, तेल की पूड़िया और फूलमाला सजाये चुपचाप राष्ट्रगान गुनगुना रहा था। अपने साबुन रहित स्नान घी रहित पूड़िया खोआ-रहित लौकी की बर्फी के प्रसाद और चीनी रहित पंजीरी को देखकर मेरे मन में जबरदस्त देशप्रेम उमड़ रहा था। मैंने मन ही मन बापू की तस्वीर से प्रार्थना की, "हे बापू! मुझे के० पी० सक्सेना की बजाय पौने छह फुट का झंडा बना दो। मुझे ऊंची कुर्सी न मिली, ऊंची छत तो मिल जाय। मैं वहीं लहराता रहूं और सलामियां लेता रहूं।" बापू कुछ नहीं बोले और चुपचाप अगरबत्ती का धुआं लेते रहे।

'बाहर कोई बुला रहा है आपको।' पुत्र ने पी० ए० जैसी विनम्र टोन में सूचना दी।

'मैं व्यस्त हूं। कह दो कि मैं देशप्रेम कर रहा हूं। दो घंटे बाद दो मिनट के लिए दर्शन दूंगा।' मैंने मंत्रियाना ठसक से कहा।

'वह अपना नाम पंद्रह अगस्त बता रहे हैं!' सुपुत्र बोले।

"क्या कहा? पंद्रह अगस्त? मुझसे मिलने आये हैं? सादर बिठाओ। चाय वाय भिजवा दो। मैं पाजामा पहनकर आता हूं।"

मैं शुद्ध खादी में बाहर आया। वे विशुद्ध में थे। चूड़ीदार पजामा था, वास्कट थी, टोपी था, छड़ी थी बगैरा ... सब कुछ था जो पंद्रह अगस्त होता है। माथे पर इंडिया का नक्शा जैसा चमक रहा था। होंठों पर सीलबंद चिकनी मुस्कान थी और आंखों में जयप्रकाश बाबू जैसा असंतोष था।

'मैं पन्द्रह अगस्त हू, आप कौन हैं ?" वह बाले।

'मैं महीने की अंतिम तारीख जैसा पतला हू। लेखक हू।"

'कुछ देशप्रेम भी है तुम्हार अन्दर ?"

बस, देशप्रेम ही तो बचा है अन्दर बाहर। वनस्तर पीप और मतवान सब खाली पडे है। हम लोग देशप्रेम ही खा पी और पहन आढ रहे है।'

तुम सचमुच महान हो। पढे लिखे न होते तो तुम्हें कहीं चुनाव म लडवाकर माला पहनवा देत। तुम्हारा दुर्भाग्य है कि तुम पोस्ट ग्रेजुएट हो और मात्र क्लर्की हेतु उपयुक्त हो। कानूनी देशप्रेम और माला मच का हकदार वही होता है जो आधे पर स मदरसा छोडकर लाठी सभाल ले और इन्कलाब बाल दे। खैर चप्पल पहन आओ, तुम्हे घुमा लाये, घर म बठे लख फख लिखते रहोगे। बाहर दखो आज सब मेरी ध्वडिया लहरा रहे हैं। आओ चलें।"

'चलता हू। कुछ चाय नाश्ता लेंगे ?'

'म जानता हू कि तुम भीगे चने का नाश्ता लेत हो। आजादी के पहले मैं भी लता था। आजादी के बाद मुझे अपच होने लगा। अब मैं सिफ शुद्ध घी और बादाम लेता हू। तुम पढे लिखे न होते तो तुम भी बादाम खा सकते थे। प्रकृति का नियम है कि पोस्ट ग्रेजुएट बादाम नहीं पचा सकता। पेचिश लग सकती है। अत घी रहित खाओ और चीनी-रहित पीओ। स्वस्थ रहोगे।

म उनके पीछे पीछ चलन लगा वह अचानक मुडकर बाल, एक मूल प्रश्न है। लोगो को मुझम अर्थात पन्द्रह अगस्त से इतना अनुराग क्या है ? उत्तर दो।

जी, सीधी सी बात है हम आजादी मिली इसी कारण।

मात्र गधव हो। आजादी मिलनी थी, मिल गया। सिलवर जुबली हो गयी। मगर लोग मुझे आज भी प्यार करते हैं। सत्ताईस साल बाद तो पत्नी भी पति की शक्ल स मुह बिचका लेती है। मैं अब भी प्यारा हू। क्यो ?'

'मैं समझा नहीं। आप ही बताइय न। मैंन कहा।

"अपने मुह अपनी प्रशसा अच्छी नही लगती। म तुम्ह दूसरा के मुह सुनवाता हू। इस बच्चे स पूछो।'

'ए बच्चे, इधर आओ। तुम्हे पद्रह अगस्त म इतनी प्रीति क्या है?" मैंन पूछा।

बच्चे न अपने स्कूली ड्रेस का ढीला नकर ऊपर सरकाया और नाक सुडकर बोला

"न कापिया है, न किताबें। मदरस बद ह, क्लासे ठडी है। बस, पापा के पास देन को फीस है मेर पास उडान को मौज बस जी, मजे ही मजे हं। पद्रह अगस्त जिदाबाद।"

बच्चा आग बढ गया। उ होन मुस्कराकर मुझे देखा और बोले, "समझे? बच्चा समझ गया, तुम चाच बन रहे। जाओ, इस छात्र लडके स पूछे।

"भाइ स्टूडेण्ट जी। कृपया सुनें।"

'हाई। कहिय। मैं भाइ नही सिस्टर हू। मेल फीमेल नही पहचान पाते? कहिय, क्या कहना है?'

'आपका पद्रह अगस्त स प्यार क्या है?" मैंने पूछा।

"बस प्यार तो मुझे राजेश खन्ना से है, लेकिन पद्रह अगस्त मुझे अच्छा लगता है। आज हम इतना कुछ 'अग्रेजी' मिला है, जो अग्रज नही दे पाये। कैवरे, ड्रिक्स, सेक्स, थाइम, बलयाटम, कोला काफी, एल० एस० डी० जय हिद! जो कुछ पाने को पतलून-युग म तरस गय, वह धोती-युग म मिल रहा है। बाई!"

'कहो बेटा लेखक! कुछ फसा अक्ल म?"

जी फसा! आपके श्रीचरण धय हैं!'

'अभी कहा धय हैं और दिखाता हू। सेठ साहब जरा सुनिय, आपको पद्रह अगस्त स क्या प्यार है?"

"भली कही जी! म्हारे को पद्रह म नही तो क्या जमाष्टमी स प्यार हावगा? दोना ही अगस्त म हावे ह! पर म्हारे को आजादी फल गयी। माल गायब, डबल दाम। जयहिद!"

सेठ आग बढ गय। पद्रह अगस्त महोदय मुस्कराये। मुखश्री म

दवे पान पर चुटकी भर जर्दा डालकर बोले, "चाह इन आफीसरनुमा आदमी स भी पूछ लो। भाई साहब ! पद्रह अगस्त आपको क्यो पसद है ?"

'क्योकि हमारा राष्ट्रीयकरण हो गया है। हम काउण्टर के पीछे बठत है पब्लिक हमारे आग जब चाहा पान खाने चले गय जब चाहा चाय पीन। पानी, बिजली वक सब हमारे हाथा म है। जब चाहा खोल दिया, जब चाहा ब द करके पिक्चर देखन निकल गय ! बोलो प्रेम स राष्ट्रप्रेम की जय !"

म सिर झुकाये मौन खडा रहा। वह छडी हिलात रहे। मुह म लुगदी चुभलाकर बोल "आओ इनसे भी पूछ लेत है। पहलवान, थोडा इधर आइयगा। कृपया बतलाइय कि आपको प द्रह अगस्त स क्या प्रीति है ?"

पहलवान न अपनी चौडी पतलून की चौडी बेल्ट म फस हाथ निकाल कर मसिल्स टटोले और बोल

लो जी आजादी है। हम सब आजाद हैं। एक हरा पत्ता पिछली पाकिट म सरकाओ और हुकम बोला मेरे को ! नौ इची रमपुरिया जिसक पेट म बोला उतार दें। अन्दर का सारा अस्तर बाहर। थोडी बहुत जाच-पडताल, फिर टाय टाय फिस्स ! आजादी द गुन गाला "

इतना शुभ वाचकर पहलवान जात भय ! मैंन पद्रह अगस्तरूपी *मानव के चरण थाम लिय और उनके पम्प जूत की धूल माथे लगा ली।* कुछ आग चलकर विशुद्ध खादी जीपस्थ हो गये अर्थात जीप पर लदकर सभा हेतु चले गय।

मैं न डे के खाली डडे जमा अकेला लौट आया। मरे घर की 'बडागान' कही बाहर गयी थी सो वह भी आ गयी !

'कहा गयी थी देवी ?'

प द्रह अगस्त कायक्रम म। मुझे प द्रह अगस्त स प्रीति है।"

मुझस नहीं है ? म तो दो दिसबर हू। प द्रह अगस्त स भी साढे तीन महीने बडा हू।'

'तुमस प्रीति करक मैंने चिल्लपा मोल ली। दिन भर खोपडी खाय रहत हैं। मुझे पद्रह अगस्त म प्रीति है। न घी न तन न चीनी, न

आटा, न कोयला, चूल्हे पर खिचडी डाल दी है अकोस लेना। म पुन डालडा गान मे जा रही हू।"

वह महगाई जैसी तेजी से आगे वढ गयी। मैं जमे हुए वेतन कानून जसा ठडा खडा रहा और आखे मूदकर गाने लगा, 'इस देश का रखना, मेरे नेता सभाल के। "

बेचारे शुद्ध पडिज्जी और फिल्मी कन्याए

लोग वाग न जाने क्या मरा दिल दुखाने पर तुल पडे है। माना कि मैंने एसा कुछ नही किया जिसके खिलाफ इनक्वायरी या कमीशन बिठाया जाय। करता भी क्या खाक यार? पतली दाल खाने वाला यदि उछलेगा भी तो पतली दाल भर ही उछलेगा। जिन्होने तगडा माल काटा है उनकी उछाल भी ऊची है, फिर भी श्रद्धेय और पूजनीय लोगो के खिलाफ कीचड उछलता है, तो मेरा मन दुखी होने लगता है। कल तक जिनके जूते उठाये लोग हवाई अड्डे पर पीछे पीछे चलते थे, आज वे ही गाढ़े लबद म फस गये हैं। सब दिनन के फेर हैं—पहले दददा ही जमीन पर पर नही रखते थे, आज परा तले जमीन ही नहीं रही। लोग दददा के पीछे पडे है। मोटर कार कपनी का एक एक बोल्ट उखाडा जा रहा है। फिर लोग वाग नसबदी हसीना के पाछे पड गये और हसीना का रुख कालिख से सान रहे हैं। कमीशन वालो को जाने कब सदबुद्धि आयगी? मौज-पानी के यही चार दिन होते है। चर्चिल की उम्र पर पहुचकर भला कौन घपलेबाजी की सोचता है? न मुह म दात न पेट म आत। इश्कदारी खाक चलेगी?

अब और लीजिये। लोग-वाग पडिज्जी को लथेड रहे है। अभी कल की बात है, बद गले के कोट-पण्ट और चश्म म अपने हसीन बालो के साथ पडिज्जी कैसे जमते थे! दस राजेश खन्ना सामने खडे कर दो मगर वह ग्रेस नही ला सकते जो पडिज्जी के मुखश्री पर चमकती थी। फिल्मी ऐक्टर होना और बात है, फिल्मी महकमे का मन्त्री होना और बात है।

मरी याददाश्त गवाह है कि आजादी के पिछले तीस बरसो म फिल्मी

महकमे म इतना हसीन मत्री नही आया। चेहर पर आख नही टिकती थी। किसी कपनी या पुराना फिल्मी फोटू उठाकर देख लो जहा पडिज्जी हीरो-हीरोइना के साथ खडे हो। दिलीप और सजीव पडिज्जी के बाजू म एक्सट्रा जैस नजर आत ह। एक फिल्मी जलम क फोटू म पडिज्जी सायरा बानो की बाज म खडे हैं। क्मे फब रह ह ! अब इन नये हाकिमो को कौन समझाये कि फिल्म और टी० वी० के महकमे का मत्री तो किसी हसीन आदमी को बनात। बचारे साठ म ऊपर दादा अडवानी का उधर फिट कर रखा है जहा कभी पडिज्जी की ग्रेस चमकती थी।

सच पूछो तो पडिज्जी का त्याग महान है। हीराइनें बिलख उठी है। उधर अखबार मगजीना वाल अपनी अलाप रह है कि पडिज्जी का हीरो-इना और फिल्मी कयाओ के बीच गाढा हिसाब था, मौज पानी चलता था। हरे राम हरे राम ! क्या समय आ लगा है एसे सजीदा और खामोश पडिज्जी पर ऐसे छीटे ? अव्वल तो मैं मान ही नही सकता। जिसने सेंसर पर इतनी सख्ती रखी हो वह भला खुद अन सेंसड कम हो जायगा ? राम भजो। जिसने इस प्रकार के सक्सी सीन को छटवा दिया हो वह भला तोबा तोबा। क्या हो गया है लोगो को ? पडिज्जी जब तक कुर्सी पर रहे न कुर्सी से मोह रखा न कुर्सी के किस्म से। चूल्हे म डालो किस्सा कुर्सी का। वह ऐसी वैसी फिल्म दिखाकर क्या पब्लिक का टाइम बरामद करते ? फूक्वा दी फिलम। छुट्टी हुई। नही पसद थी पडिज्जी का सो घाट लगा दी। क्या उसका अचार डालते ? पडिज्जी ने जो फैसला किया जमकर किया, जनहित म किया। अब लाग बाग टुकाची बातें उडा रहे हैं कि पडिज्जी का फिल्मी तारिकाओ के बीच कुछ या या था। था तो किसीके बाप का क्या जाता है ? हर आदमी अपने महकमे से चार छोटे छोट फायद उठा लेता है। मरा बाप म्यूनिसिपलिटी म हेड क्लक था सो घर के सामने दिन म चार बार फ्री झाडू लगती थी। मैं रेलवे म हू तो क्या कोयला बाजार से खरीदूगा ? जहा टनो इजन म जलता है वहा पाव भर मेरी अगीठी म भी जल गया।

पूरा फिल्मी महकमा पडिज्जी के अण्डर म था। किसी तारिका स बोल-बतिया लिया या जरा दिल हल्का कर लिया तो कौन सी भुस म लाठी मार

दी। फिल्मी महकमे का आला हाकिम स्टार से नही तो क्या बिजली के खम्भे से दिल बहलायेगा ? आये दिन फिल्मी हसीनाओं का एक न एक लफड़ा उडता रहता है। जरा पंडिज्जी बोल बतिया लिए तो कौन-सा चुनरी म दाग लग गया ? मनोरजन की चीज मनोरजन के काम आयी। कौन सा वहा एक्ट्रेसो को रेलवे इजन चलाना है ? घोडा घास प नही जायगा तो भूखा मरेगा। सब जानते है कि हाकिम को खुश रखने म चार फायदे है। पडिज्जी भी हाकिम थे नवाबो के जमाने म ठसाठस सुरा सुन्दरी चलती थी। बडे लोगो की बडी बाते। पडिज्जी पूरे महकमे के तनहा मालिक थे सो क्या बठी डाले बैठे रहते ? और फिर इसम पडिज्जी का क्या दोष ? म ही घर-गृहस्थी चार बच्चा का बाप हू। अब खुदा न खास्ता मुझी प कोई फिल्मी चीज मर मिटे और मेरे साथ तनहाई चाहे तो क्या मैं इनकार कर दूगा ? लानत भेजिये मुझपर।

अब य सब छोटी बाते है कि जाच पडताल करते फिरो कि वह कौन थी कहा कहा थी वगरह वगरह। खाने पीने की चीज खा पीकर छुट्टी की। डकारें गिनने स क्या फायदा ? लाख रुपय की बात यह है कि पडिज्जी के रहते जनता का करेक्टर नही बिगडने पाया। सेंसर टाइट रखा, रेप सीन, बाथ सीन बेड रूम, सेक्स सबकी छुट्टी कर दी। करेक्टर है तो जहान है। शकर की तरह सारा गरल खुद पी गये। जनसाधारण के आचरण पर आच नही आने दी। ओम नमोनम। ऐसे त्यागी पुरुष कहीं सदियो म अवतरित होते ह। लागो का क्या स तो पर भी अगुली उठाते हैं। ददद की धुलाई कर रहे है रखमानो को लथेड रहे है पडिज्जी के पीछे पड गये है। हे भगवान ! मैं कब तक इन महापुरुषो की छीछालेदर देखूगा ? इस देश को क्या हो गया ह ? मैं मिठाई खाऊ या न खाऊ चादी के वक उतरते देखने म पीडा होती है। सबके सब कस सुहाने लगते थे !

कोई पत्थर से

पिछले दिनो काफी झाड पोछ हुई। जिन्हे लोग धुला च दन समझते थे, व अ तत कूडे जम बुहार दिये गये। इस ओर च दन के लेप तल क्स सडाध भरी थी अब समक्ष म आ रहा है। धीरे धीरे चान्दी के वर्क उतारे जा रहे है। अन्दर का त्रिनविजाता गोबर सामने आ रहा है। कही फाइलें गायब हैं कही माल गायब है। जि होने फाइले बनायी उ होने गायब कर दी। रोना कैसा ? घी कहा गया ? प्यारो के कलेजे म। कटाव युद्ध जारी रहा उन्नीस महीन। वे जो तम्बुओ म नसे कटान का ब दोबस्त छेडे बैठे थे, अन्दर ही अ दर माल काट रहे थे। अखाडा जमा था। नसबदी अभियान की थकान उतारी जा रही थी। सुरा सु दरी चल रही थी। हाय, कैसी लगन और निष्ठा वाले कर्मयोगी थे, जिन्ह नादान पब्लिक ने कबाडा कर दिया।

र जन मूरख बाद गवाया। काग्रेस का दन ता नक्शा ही कुछ और होता। जिसन दिन भर नसबदी के तम्बुओ मे केस ला लाकर खून पसीना बहाया उसने अगर रात म दूसर तम्बू म जरा चुस्की मार ली या माटी की काया को सुख पहुचा लिया, तो कौन सी भुस म लाठी मार दी ? हम भारतवासियो के बाप भी नही जानते कि लोकत त्र की रक्षा कस होती है। सब लोग अगर सिद्धा तो और आदर्शो की रक्षा पर ही पिल पडे, तो सुरा, सु दरी हेलिकोप्टर डाक बगलो और गद्देदार बिस्तरो की रक्षा कौन करगा ? सच्चे लोकतन्त्र म हर चीज को बराबर स मौका मिलना चाहिए। यही तो किया देशसेवको ने ! नसबदी के तम्बू भी सभाले और साकी शराब

की भी भरपरस्ती करते रहे। फिर भी पब्लिक ने मुंह पर थूक दिया। लानत है पब्लिक पर! न जाने इस देश की पब्लिक सच्चे और कमठ कार्यकर्ता की कब पहचानेगी? और जो हुआ सो हुआ, एक अच्छी भली हसीन और नौजवान लडकी को भी थू थू कर दिया। मुझे गहरा सदमा पहुंचा, भूतपूर्व युवक हृदय सम्राट' से भी ढाई सौ ग्राम ज्यादा।

सदमा! बेचारी हसीना का जलवा डाउन हुआ। ऐलान करता हूं कि सुप्रीम कोर्ट तक लड जाऊं। मैं सब कुछ सह सकता हूं, मगर हसीन लडकी की तौहीन नहीं। न जाने वह कौन सा शुभ दिन होगा जब हम भारतवासी हुस्न की कदर करना सीखेंगे। वह गरीब लडकी दुखी है। लोग मौज ले रहे हैं। युवक हृदय सम्राट पर आये दिन चार्ज लग रहे हैं। उधर उस गरीब हसीना का दिल कराह रहा है 'कोई पत्थर से न मारे मेरे दीवाने को।"

लोगों ने उड़ा दिया कि वह ताज होटल में तराकी की चड्डी पहन बदन चलकाती घूमती थी, हम कहते हैं कि वह इतना भी नहीं पहनती तो किसीके बाप का क्या जाता? खेलने-कूदने की यही उम्र होती है। हसीना कहती है कि वह तैरना ही नहीं जानती, तो तैरने का चड्डा क्या पहनेगी? ठीक कहती है बच्ची। वह तो मोहन की दीवानी थी बावरी। उसका और युवक हृदय सम्राट का मीटर सही चढ गया था। दोनों एक ही वेवलेंथ पर सोचते थे। आज भी वह युवक हृदय सम्राट' से मेल जोल रखती है। दो दिलों को यह दुनिया मिलते देख नहीं सकती। भारतीय फिल्मों में भी निगोडा यही सब होता है।

हाय, कोई इस बच्ची का त्याग तो देखे! उस अकेली ने तेरह हजार नसबंदियां करवा दीं। कोई तेरह करवा दे तो मैं जानूं। बेबी को हम जालिम भारतवासी थोडा और अवसर दे देते तो अल्ला कसम, पूरे मरदाने हिंदुस्तान को कटाकर रख देती फिर देखते हम, कि किसका बाप बच्चे पैदा करता है! कहां ढोलक बजती है!

हसीना के दिल में टीस है कि लोग युवक हृदय सम्राट को जालिम निगाहों से क्या देख रहे हैं? मैं हसीना बी को दुखी नहीं देख सकता। ऐ भारतवासियो मेरी तुमसे अपील है कि हसीना का दिल मत तोडो।

'युवक हृदय सम्राट' को एक युग प्रवतक, महान देशभक्त, त्यागी सत और भारत-पुत्र के रूप म देखो। देख ही लोगे तो तुम्हारा क्या विगड जायेगा ? दूसरे मुल्का का इतिहास देखो। एक हसीना का दिल रखन के लिए लोगो ने क्या क्या कुर्बानिया दी है। तुम एक जरा सा भूतपूव 'युवक हृदय-सम्राट' को महात्मा मान लाग, ता बच्ची का दिल रह जायगा। ऐसी त्यागी कन्याए सदियो म पदा होती ह। जिस लडकी ने पूरी दिल्ली, शासन और युवक हृदय सम्राट्' को चकरघिन्नी जसा नचा दिया आज दो कौडी की हा गयी ? मैं वरदाश्त नही कर सकता !

परसो रात में कुलदीप नैय्यर की पुस्तक 'द जजमट' पढते पढते छाती स लगाये सो गया। छत पर ठडी हवा चल रही थी। उन्नीस महीने कैसे प्यारे और रगीन बीत भारत के इतिहास मे! सजोकर रखने याग्य! अपन दद्दा यानी कि भूतपूव युवक हृदय सम्राट उफ बादशाह बेताज का दुखडा लिये हुए हसीना मेरे सपने म आयी। हसीन पोशाक काला चश्मा, समाज वाद जैसी सुहानी लग रही थी। बोली

"के० पी० भाई जान तुम सो रहे हो ? दददा पर जुल्म हो रहा है। इन्सानियत पर जुल्म हो रहा है। बेचारे भोले भाले मासूम दददा पर जुल्म हो रहा है। भाभी का भी पासपोट जब्त हो गया। दद्दा ने इस देश का स्वग बनाने म कौन सी कसर उठा रखी थी ! मैंने कितना साथ दिया दद्दा का ! फिर भी दद्दा पर तोहमतें लग रही है। उठो, एक आवाज उठाओ कि दद्दा चन्दन से पवित्र हैं दूध जैसे साफ ह। मेरा दिल टूट रहा है।"

फिर वह न जान कहा गायब हो गयी। मेरे गल से सोते म ही स्वर फूटा

"कोई पत्थर से न मारे मेरे दीवाने को ! "

मैं कोशिश में हूँ !

बहुत से लोगों का होता है। हमें भी है। पुरानी चीजों का शौक एक पुराना शौक है, जिसे आज भी लोग कलेजे से लगाये हैं। हमारे एक दोस्त ने परदादा के पाँव की बायें पैर की सड़ी बुसी जूती मखमल में लपेट रखी है। कहना है कि यह वही ऐतिहासिक जूती है जिसे मिर्जा गालिब ठर्रे की पिनक में अपने पाँव में डालकर चले गये थे। परदादा ने दूसरे पाँव की भी भिजवा दी कि एक मिसरे में क्या होता है! शेर मुकम्मल होना चाहिए। गालिब ने बायें पैर की लौटा दी जो अब तक महफूज है। खैर पुरानी चीजों का अमीराना शौक हमें भी है और परमपिता परमात्मा की असीम अनुकम्पा से घर में हर चीज पुरानी है। कालीन से लेकर बीबी तक दोनों ही हिस्टोरिकल हैं और दक्खन से ताल्लुक रखते हैं। मेरे वे दोस्त भाग्यशाली हैं जिन्होंने मेरा कदीमी कालीन और उतनी ही कदीमी बीबी देखी है। वे जानते हैं कि दोनों चीजें मेरे स्वर्गीय ससुर साहब किब्ला की देन हैं जिन्हें मैंने चौथाई सदी पहले खुशी-खुशी कबूल किया था, और आज भी झेल रहा हूँ। कालीन में कई बार जूता फँसा है और सिर नहीं उठा पाया। बीबी के सामने सिर उठाना हमारी खानदानी रिवायत में नहीं।

बच्चों के स्वेटर किताबें मोजे वगैरह भी मैं पुराने ही खरीदता हूँ। मेरे शौक की इज्जत बनाये रखने में बच्चों ने मेरा साथ दिया है और बचपन में ही उन्हें पुराने का शौक लग गया। एक बार बड़े साहबजादे ने पुराना जूता पहनने से इन्कार कर दिया। मैंने समझा दिया कि वह नायाब जूता अशोक कुमार का है। छोकरे ने झट सिर से लगाया और थिगड़े लगवाकर आज

भी पहन रहा है।

चुनाचे हर पुरानी चीज की तरह मुझे फिल्म और गान भी पुराने ही पसन्द ह। अगर ढक्कन स कदीमी ग्रामाफान पर सहगल का पुराना रेकाड (जो घिसत घिसत चिक्ना हो गया है) सुनता हू तो कुछ अजीब सी आवाज निकलती है, जो सहगल की कनई नही रह गयी है। बच्चे अक्सर कहत ह कि अगर यही महगल था ता इसस अच्छा हमारा वतन माजन वाला महरा गा सकता है। गधे हैं! पुराने हाग तब कही पुराना बाप याद आयगा कि हा, काई आदमी हमारा बाप हुआ करता था।

चुनाच एक दिन घर म तनहाई का माहौल पाकर हमारी पुरानी याद ताजा हो उठी, जब बीवी और कालीन दोना नय थ। वासी कढी म उबाल आ गया और फेफडा की मारी हास पावर खीचकर हमने एक पुराना गाना अलापा—

चलो इक बार फिर से अजनबी हो जाये हम दोना।

लगता है बहुत ऊब गये हो।" उ होन रसाइ के अ दर स ही स्वर दिया।

'भइ, गौर स साचो। अगर सचमुच हम च द दिनो के लिए अजनबी हो जाये तो मजा आ जाय। न मं के० पी० सक्सेना ए०एम०एम०, लखनऊ, तुम्हारा बाकायदा शौहर रहूं, न तुम मरी कानूनी बीवी रहो। साचो, कभी ऐसा हो तो क्या हो? हम लोग अलग अलग मुहल्ला म रह और सर-राह चलते चलते भी न मिल। तुम्हे कसा लगगा?'

'मेर एते भाग कहा कि किचकिच से जान छूटे! मगर बच्चे किसके बाप को बाप कहग?'

ओपफो! हलव म हीग मत डाला। कैसा प्यारा आइडिया बन रहा है। बच्चो की फिक्र न करो। चार का उनक मामा के यहा, चार का फूफा के यहा, और बाकी को कही और भेज देग। बस तुम अजनबी हो जाओ एक बार फिर से।"

फिर स, क्या मतलब?"

'जस हम शादी के पहले थे। न तुम जानती थी कि मैं कितने नम्बर का जूता पहनता था, न म जानता था कि तुम सिर की जू को मारन के

हान का कह रहा हू, न कि स्वर्गीय हान का । तुम्हारी जगह काई भी थोडी समयदार हुई हाती तो बच्चा को इधर उधर डिस्पैच करके अजनवी हो गयी हाती और किसी दूसर मुहल्ल म बैठी मुये खत लिख रही होती। ठीक है—पडी रहा यही मुयस कदीमी जान पहचान बनाय और पालक छोक्ती रहो ।'

चुनाचे हुआ गो ही, वह उसी िन अजनवी हो गयी, मगर मर ही घर म । आज पूरा हफ्ता निकल गया । मैंने जब जब उसम बात करनी चाही, उसन मुये या दीदे फाडकर दखा गोया मैं परायी औरत को छेड रहा हू । अब म इस कोशिश म हू कि किसी तरह इस जानी पहचानी अजनवी से दोबारा जान पहचान हो जाय ।

बेचारे बोतलानन्द का ड्राई दु ख

हाय ! दुखवा का से कहू मारी सजनी ! उ हे दखकर मरा दिल भर आया। मेर हाथ म होता तो ब द रसधार पुन खुलवा देता। उनसे मिलने पहुचा तो वह अपने बरामद म मात्र जाघिया धारे सूखे पडे थे चटाई पर। शहर क्या ड्राई हुआ उन्हे सुखा गया। वह ही पहल रस भर तरबूज जसे डगमगाते चलत थे। आज कानी अबिया जस सूखे पड थे। होंठ पपडियाये, आखे पीली, मुह पर एसा दु ख जैसे लेट लटे अपनी तेरही मना रहे हो। मेरी आहट पर आखे खोली और भूतपूर्व दारू की बोतल से पानी चूसकर बोले 'कस आय ?'

मैंने उ हे आने का प्रयोजन बताया।

यही पूछना था कि बोतल से बिछडकर जाम से जुदा होकर उ हे कसा महसूस हो रहा है ?

तडपकर उठ बठे और हलक म भरी डाइ खखार बरामदे क कोन म जमा करते हुए बोल, तुम नही समझोगे, बालक ! तुम ठहरे गुल्ली डडा बाज, हम हैं ओलंपिक के खिलाडी। तुम होली दीवाली म एक चुस्की म गुटरगू हो जाने वाले ठहरे। हम बाकायदा नली लगाकर पूरा डिस्टलरी साख लेने वाल अद्धे भर स तो सिर्फ कुल्ली करते थे। तुम हमारा दद क्या समझोगे ? एक दु ख हो तो गिनाये ? नाली के कलकल बहते महकते भीजल म औंधे मुह पडे रहने का अपना अलग सुख था। छिन गया। डगमगाकर शतरंज क माहिरे जस ढाई ढाई घर चलने का अलग सुख था छिन गया। गोबर घूरे के पास बठकर पकौडी खाने का अलग सुख था,

छिन गया। चलत थे तो पाजामा लवदे म फचफचाता था, मक्खिया साथ-साथ गाड आफ आनर देती चलती थी, कूकुरजन प्यार स मुह सूघते थे। अगल बगल वाला का मनोरजन होता था, सब छिन गया। हम तो तुम्हारी इस जनता सरकार न निचोडकर सूखन को डाल दिया अलगनी पर।

' आज कई दिन हो गय। गाली बकन को जी तरस गया। हाय पहले चढती थी तो एक सास म कैसी प्यारी प्यारी गालिया निकलती थी। अब घटा से कोशिश कर रह हैं और किसीको उल्लू का पट्ठा नही कह पा रहे ह। तुमन तो सुना होगा, बालक! इक्तीस माच तक चढी रहन पर हम कितना अच्छा गात थ। अब कई दिन स गाने की कोशिश कर रह हैं तो गल स ओम शाति शाति निकल रहा है।

" हाय, अब तो हम ठीक स दिखाई भी नही देता। पहले ढाई कुलिया के बाद बस भी नीतूसिंह नजर आती थी। अब क्या लना देना बस स, क्या नीतूसिंह स? चारो तरफ सब सूखा ही सूखा है। और तो और अब अपन बच्चे भी परदेशी लगत हैं। सो कैस? बताते ह। पिछले मास तक हम बाकायदा अपना दारु एलाउन्स तनखाह स निकाल लेते थे। इस बार दारू ही न रही तो एलाउस स क्या पोदीना खरीदत? मन मसोसकर पूरी प तुम्हारी भौजाई के आग पटक दी।

"पिछले मास तक हमारे पाचो अद्धे पउए नग धडग शुद्ध भारतीय ढग स घमत थ। पहचान बनी रहती थी कि हमार बच्चे ह। इस बार हमारा दारूकोटा उनक नकरो बुशशर्टो म काम आ गया। निगोडे ढक गये, छल चिकनिया बन गय। अब कस पहचानें भला कि य हमार ही कटपीस है? औलादो का पहचान सुख तक छिन गया। अपनी भौजाई को ही देखो। अभी बुलात ह। नगेगा जैम हम नयी ले आय है। साडी खरीद लायी है। हमार ड्राई होते ही मनहूस कसी चाचक हो गयी ह? पहल भी तुम बराबर देखते थ। सूखी, खजुही, फटीचर रहती थी तो बाध बना रहता था कि भने घर की औरत ह। अब चोटी कघी करन लगी है। हम तो रह रहकर शक होता ह कि हमारी औरत है ही नही।

ह बालक! हमारी तो नीद ही जाती रही। पहल टाइट होकर

आधी रात लौटत थ तो जूते पहने ही वस खटियार ढेर हो जात थे और दोपहर मे उठकर कुल्ली करत थे। अब सारी रात चौक चौक पडते है। चूहे की दुम भी हाथी की सूड नजर आती है। यह सब क्या हो गया ? हलक स उतरत ठर्रे की जलती लकीर कहा बुझ गयी ? हमारा तो समाज ही छिन गया। मुहल्ले के लडके और कुत्ते हमारी दारू का आनन्द लेकर कारस म लुह लुहे करते थ। सब जेवा हो गये। और सबकी छोडो। हम ही देखो। हाय हमारे रिक्श वाल चोखडा पाजामा, मुह स बहता लार, चढी आख राक एन रोल कदम कसे हीरो लगते थे। कसी प्यारी प्यारी हिचकियां आती थी वसी ही जैसी 'अनारकली' म बीना राय हिचकी लेती थी— जमाना ये समझा कि हम पीके आये। अब देखो कैसे लूमड लग रह ह। धुला हुआ मुह कढे हुए बाल। भाड मे गय हम। इस उम्र म नौटकी क छोकर जैसा सजा रहना क्या अच्छा लगता है ?

देखा क० पी० तुम पहले कितन अच्छे लगते थे हम। तुम्हारी भौजाई कहती थी के०पी० आय हैं। हम कहत थे, 'हम पी के आय है।' वाह आदमी पी के आये तो के० पी० भी ठीक है। हम मत छेडो। हम सूखकर साठ हो गय है। वक्त-वक्त की बात है। हम तो अब घर स निकलना भी अच्छा नही लगता। किस मुह से निकले ? व नालिया क्या कहेगी जिनम हम आराम करते थ ? वे खम्भे क्या कहेगे जिनस हम टकराते थ ? व कुत्त क्या कहग जो हमारे पीछे दुम हिलाते चलत थ ? वह पाजामा क्या कहगा जिसम एक ही पायचा होता था ? व रिक्श वाल क्या कहगे जो हम लाश जैसा ढोकर लात थ ? हाय, सब अनाथ हो गय।

मेरा मन दुख स अद्धा भर भर गया। उन्ह यो खुश्क पडा छोडकर मै चला आया।

नेताओं का निर्यात करो

आखिरकार मेरा चिन्तन रग ले ही आया। कई महीनो म मैं विश्व की गिरती हालत दखकर परेशान था। पेट म पडी पतली नाल हजम नही हो रही थी। मुझे यही चि ता खाय जा रही थी कि विश्व की हालत न सुधरी तो लोग मुझे दाप देंगे कि तुम्हारे रहते विश्व खडडे म चला गया। चुनाचे मैं कैजुअल लीव लेकर नगोट बाधकर चिन्तन पर बठ गया। घर वाला को आदेश दे दिय कि मुझे डिस्टब न किया जाय। मैं विश्व चि तन पर बैठन लग पडा हू।

विश्व की गिरती हालत का कारण मर हाथ लग गया है। सिफ भारत को छोडकर शेप सारा विश्व फटीचर होता जा रहा है। भारत को छोडकर विश्व रहन लायक नही रह गया। मैं अगर भारत म न होता तो आत्म-हत्या कर चुका होता। मेर चि तन से यह नतीजा निकला है कि विश्व म अच्छे नेताओ की कमी है। हमार यहा भरमार है। मेरा वस चलता तो अपन यहा के नेता विश्व म वाट देता। मगर फिर भारत कमजोर पड जाता। नही, नही, मरे यहा कोई नेता फालतू नही है। हर नेता का अपना अलग महत्व है। एक भी नेता कम हो गया तो भारत सूखन लगेगा।

मुझस विश्व के कई भागो से यही सवाल किया गया है कि भारत इतना खुशहाल और सम्पन्न क्या है? उनका ख्याल है कि हम लोग दूर-दृष्टि और पक्के इरादे के कारण सफल ह। नही, यह सब हमारे नेताओ का प्रताप है। एक एक नेता शकर जी की वटिया जैसा दूध मे धोकर रखने लायक है। विश्व वाले चाहे ता भारत की तरह सम्प न हो सकते है। बस,

हमारे नेताओ को इपाट कर। इस सबध म मेरे कई सुझाव पश हैं

अ दर की लडाई भिडाई काइ मायन नही रखती। बाहर स चौकस बन रहा। हमारे यहा चौधरी साहब और पी० एम० साहब के बीच खत पत्रो की ल-द चल रही ह, मगर राष्ट्र दिन ब दिन मुटाता जा रहा ह। चारो तरफ खुशहाली है। साल भर म हम कहा से कहा पहुच गये। परिस अमेरिका खीसे निपोरे दख रहे है।

राष्ट के स्वास्थ्य क लिए शराब हानिकारक थी। ब द कर दी। ब द करत ही राष्ट्र की सहत खिल उठी। हर आदमी पहलवान बना लाठी उठाये घूम रहा ह। मेरे बाप न भी भारत की वह सेहत नही दखी थी जो मैं देख रहा हू। दश को खुशहाल रखने क लिए आकडे बहुत मुफीद है। हमार यहा आकडो की काई कमी नही। लोग बाग जूतम-पजार तक क आकडे रखते है। विश्व के अ य देश भी नहरो और बिजली घरा के बजाय अगर सिफ आकडो का निमाण करे तो हमारी तरह फूल फल सकत ह।

विश्व की शिक्षा-प्रणाली गडबड है। हमारी ठीक है। हम अपने नौज वाना क शारीरिक विकास पर पूरा ध्यान द रहे ह। १९७७ की एल० एल० एम० परीक्षाए अभी बाकी है। विश्व के दूसरे राष्ट्र नौजवानो को परीक्षाओ म पीसे डाल रहे ह। हमारे यहा हर नौजवान को दड बठक करके सहत बनाने का पूरा मौका मिल रहा है। सेहत है तो जहान है। दूसरे मुल्का की यह सबस बडी कमजोरी है कि लडका बच्चो को चिहाड करने का टाइम नही देत। बाद म ललचाते है कि देखो भारत के छात्र कैसे गोल मटोल धरे ह।

दूसरे मुल्को की अदरूनी अशाति देखकर मुझे रोना आता है। वे हमसे कुछ क्यो नही सीखत? हमारे यहा जसी चुस्त पुलिस व्यवस्था शायद अल्ला मिया के यहा भी नही होगी। यह देखकर सीना फूल उठता है कि दुघटना हुई नही और ४ ५ घटा के भीतर ही पुलिस आ गयी। दूसरे मुल्को की पुलिस तो इतनी देर म पतलून भी नही पहन पाती। पुलिस की इतनी सतक व्यवस्था के कारण ही हमारे यहा क्राइम नही होते।

दूसरे देशो म धम और ज्ञान नही है। हमारे यहा ढेरो भरा पडा है। हर नेता धम और ज्ञान की डिक्शनरी है। अभी सूर चतुश्शती पर नेताओ

ने पब्लिक का वताया कि सूरदास कवि भी थे, सत भी। न वताते ता हम कौन वताता कि सूर क्या थे ? हम सब उन्हे अधा समझकर टाले रहत। अब पता तो लगा कि हाय सूरदास सत भी थे। दूसर देश क नताआ का भी चाहिए कि वतायें कि जीसस क्राइस्ट कौन थे। हमारे यहा ज्ञान का उजाला इस तरह न मिलता तो हम भी विश्व के दूसरे देशो की तरह वेवकूफ वने पडे रहते।

विदेशी लाग जल भुनकर मुझसे पूछते है कि आप लोगा का चरित्र इतना ऊपर कस उठ गया ? मैं जवाब देता हू सत्यम शिवम, सु दरम।' हम उनम जीनत अमान का शरीर नही देखत प्रभु की लीला दखत हैं। महाप्रभु श्री राजकपूरानन्द जी की फिलासफी देखते ह। हम मन चचल नही हान देते। 'देस परदेस' की टीना को भी उसी भवितभाव म देखत है जस हनुमान-विजय। आओ विदशिया! तुम हमारी आध्यात्मिक शक्ति कहा तक परखाग ? हम महान ह सिफ महान और कुछ नहा।

सच पूछिय तो नेताआ से हम इतना बल न मिला हाता ता हम भी टटपूजिय रह गये हाते। हम दूसरे क बच्चा म बुराई नही ढूढत। यह नही दखते कि किसके बटे न क्या गुल खिलाय। कहा तक ताकन का दुरुपयाग किया है।

हम स्वण युग म जी रह ह फिर भी सोन से मोह नही। राह चलते जिसने गल की चेन या हार मागा उतारकर दे दिया। ले जाओ भई हमारे पति दूसरा बनवा देग। विदेशो की महिलाआ को इस सब त्याग से शिक्षा लेनी चाहिए। खान पीने स हम माह नही। हमारे नताआ का भी नही। कुछ नही तो जो प्रभु न दिया है वही पी लेग। हेल्थ सुधरेगी, पचासा बीमारिया दूर हागी।

मन म दूसरे क प्रति दया और करुणा काई हमस सीखे। कही बाढ आयी नहीं कि हलिकोप्टर और दूरबीन लकर दौड पडे। बाढ ग्रस्ता को तसल्ली हुई कि काई हम ऊपर स देख रहा है। भगवान चाहे बाद म देखे, नेता पहले देखता है। जिस देश म जन कल्याण की एसी एसी दिव्य मूर्तिया भरी पडी हा वह फिर स्वण युग म तो जियगा ही। मेरे पिता जी ने रामराज्य का सपना देखा था, वह अब जाकर पूरा हुआ।

निदशिया क पास अब भी टाइम है चाह तो भारत जस खुशहाल बन सकत है। अपन नेताआ को हमारे यहा ट्रेनिंग पर भेजे। खाना और हास्टल फ्री। मेर मन म बडी इच्छा है कि विश्व की हालत भारत जसी सुधर जाय। म चाहता हू कि मेरे पेरिस और जमनी म रहने वाल भाई भी धीरे धीरे मरी ही तरह मुटा जायें।

सडकीय अनुशासन और खस्ता कचौडी

उस समय मेरी हालत किसी टूटाय गय मवी जमी हा रही थी। यानी तबू से बाहर, पार्टी स चिपका हुआ। पूरी सडक तम्बू स घिरी हुई थी। मैं तम्बू और दीवार के बीच लगभग नाली म फमा हुआ था। अगर तम्बू की तरफ जोर लगाता हू तो रायत शारव के हडे म जा गिरता हू। नाली की तरफ दबता हू तो गडाप म कल-कल वहते नाली के श्रीजल म डूबता हू। तम्बू के अन्दर ऐट हाम' चल रहा था। मैं आउट आफ होम फसा पडा था। रिक्शे ताग आ आकर लौट रह थ। ट्रफिक गालिया देती हुई वापस मुड रही थी। सडक हाम बनी हुई थी और लोग बाग अ दर खस्ता कचौरिया तोड रहे थे। मने किसी तरह खुद का समझाया रे मूख, ऐटहोम जरूरी चीज है। दूसरे क घर स चूसी हुई रकम का कुछ अश अपने घर जाकर खच कर देना पुण्य का काम है। मैने तम्बू के अ दर झाका। एक ऊच मच पर चिरजीव और सौभाग्यवती साफे पर चपचाप बठे दूसरा को खाते देख रहे थ। वह जो सौभाग्यवती थी उसने कई मन की साडी और कई किलो गहने चमका रखे थे। वह जो चिरजीव थ वह सुनहरी पगडी म कबूतर का पर लगाय तलवार बाध बैठे थे। शादी से पहल वह शायद शेव के समय नये ब्लेड की धार स भी डरते होंग। इस समय राणा सागा स भी चार इच लम्बी तलवार पतलून की बेल्ट स बाधे थे। मेरे ख्याल से उन्हें पिस्तौल बाधनी चाहिए थी। एटहोम म उपस्थित नर नारी चटनी रायत मे मुह औधाये सडाप रह थे। मैं दीवार और तम्बू क बीच फसा पडा था। रूमाल म बधी बरफ गल रही थी

तभी एक साहब रेशम का कुर्ता पहने, पान चबाते बाहर आये। ताजा हाथ लगी रकम की चिकनाई उनके चहरे पर चमक रही थी। शायद वह ही चिरजीव के पिता थे। मने धीरे से कहा

'महोदय, मैं फसा पडा हू। मुझे उबारिये। मैं अपने घर पहुचना चाहता हू।'

"रास्ता बद है। घूमकर पिछली सडक से नजीराबाद और कैसरबाग होते हुए निकल जाइये।

'हम तो मैं उन्नाव कानपुर होता हुआ छोटी लाइन के रास्ते भी घर पहुच सकता हू, मगर क्या करू, आदत पडी है रोज इसी सडक से जाने की। कृपया बतायें कि सडक क्या बद है?'

देख नही रहे हैं कि शादी का एटहोम चल रहा है?'

ऐट होम नही ऐट रोड कहिये। एट होम होता तो घर के आगन या छत पर होता। क्या आपके चिरजीव पैदा भी सडक पर हुए थे?' वह उखड गये। चेहरा तमतमा गया। शादी में खरीदी गयी नयी बनियान के अदर सीना फुलाकर बोले, 'हम चक चक नही करनी है। हमने परमिशन ले रखी है।'

वह कौन साहब है जिन्होने परमिशन दी है? क्या यह सडक उनके पिताश्री की है? पचास आदमियो को रायता पिलाने के लिए सैकडा लोग मील भर लम्बा चक्कर लगाकर जायें यह यायोचित है?

वह और भी तमककर चौडे हुए दख नही रहे है कि घर म जगह नही है? मेहमान तो खिलाने ही हैं। कहा ले जाये, जनाब?'

'होटल म बारादरी म गोमती किनारे या किसी पार्क म। कही जगह न मिल तो पत्तल म खूराक लपटकर मेहमानो के घर पहुचा दीजिये या नकद पैसे दे दीजिये। मगर यह सडक घेरने का किस हकीम ने कहा था। सवारियो के इतने लम्बे राउण्ड स किसीकी गाडी छूट जायगी कोई अस्पताल पहुचने को तडपेगा, और आप गा बजाकर चटनी दहीवडे परोसते रहेंगे। आप धय हैं।

चिल्लाइ मत मचाइये। शादी-ब्याह म सभी लोग सडक घेरते है। हर

जगह तम्बू-कनात लगती है। वह दहाडे ।

' देखिये प्रभु समिधयान स प्राप्त गडडी की गरमी मुझपर मत उतारिय । हा सके तो एक आदेश जारी करा दे कि सहालग भर लोग पदल चलन के लिए सडक का उपयाग नही कर सकत । अपन अपने घर पहुचन क लिए हेलिकोप्टर का इस्तमाल करे ।'

"आप एकदम अनामे है। सब लोग मुडकर दूसरी तरफ से जा रहे है, आपके पाव म मेहदी लगी है ?'

"लगी थी तीस बरस पहले ! मगर सडक नही घेरी थी । व लाग जा घूमकर गय है, गालिया देते हुए गय है । मरा गालीशास्त्र जरा कमजोर ह । मैं इसी रास्ते मे जाना पसन्द करूगा ।"

उन्होने तुरत अपना रूमाल सिर पर राजनारायण स्टाइल म बाधा और लडन मरन को धोती टाइट कर ली । अपनी मदद को कई लोगो का बुलाना चाहा मगर कचौरिया छाडकर कोई न आया ।

वही से लागा ने मुझे डाट दिया । मरे भी मन म तश भर आया । इच्छा हुई कि पाजामा कमर म खासकर मटर-पनीर क डोग म कूद जाऊ । तभी अचानक देखता क्या हू कि दो कारे तम्बू पर आकर रुकी । आगे रास्ता बन्द था । उन कारा से दस बारह नौजवान उतरे । मिली जुली अंग्रेजी हिन्दी मे चिहाड मचाइ और कनात की बल्लिया अपन हाथा सरकाकर सडक साफ कर ली । दस बीस लताडे सुनाइ और कारे निकालकर ले गय । महाशय जी गुबार दखते रह गये । ऐट हाम क महमान जूठन छोडकर सिगरेट-पान पर टूट रहे थ । मैंने बडी विनम्रता स पूछा

' इन कार वाले छोकरा न सचमुच बडा जुलुम की हा । घुमाकर नही ले गये कार । बिला वजह तम्बू ढीला कर दिया । आपका डाटना चाहिए था ।

"आप अपनी लवलव बन्द कीजिय। छोकरा के मुह कौन लगे ? उल्ल के पट्ठो म अनुशासन रह ही नही गया । हर जगह चिहाड मचायग । '

'सत्य वचन महाराज । उल्लू के पट्ठा म सचमुच अनुशासन नही रह गया है । आपन सडक घेरकर कसा धरम का काम किया था । पचास जन कचौडिया को प्राप्त हा रहे थे इन मुर्गो न आकर बास बल्ली ठिकाने लगा

थी। क्या कर साहब यह निगोड़ा युवा वर्ग है ही अनकल्चर्ड। आपने कल अनुशासन से सड़क पर रौनक की थी और वे गुड़ गोबर कर गये।'

उन्होंने सिर में रूमाल खोला। मुझे जरा तसल्ली हुई कि उन्होंने गुस्से का शीशा हटा लिया है। फिर विनम्र होकर खीसें निपोरते हुए बोले

हें हें हें! आपसे बिना रहे ब्राह्म रूप हो गया। आइये तो कचौरियां चख लीजिये।'

प्रियवर! कचौरियों से मुझे कोई चिढ़ नहीं है। मगर सड़क पर उठकर राजना चटनी हपोकना मुझे मेरे पिछले जन्म की याद दिला देगा जब मैं भारत का पशुधन हुआ करता था। इस बार हनुमान जी की कृपा से मनुष्यरूप धारण किया है तो सड़क पर पागुर करना भूल चुका हूं। आपको बहू मुबारक हो, चिर सौभाग्यवती रहें।'

मैं कनात के थाम नल्ली फांदकर घर आ गया। बरफ की जगह सिर्फ अंगोछा शेष था। अगली सुबह इसी सड़क पर पत्तलों का कूड़ा और खुदे हुए गड्ढे सुशोभित थे। मुझे पिछली शाम के उनके श्रीवचन याद आ गये। हमारे नौजवान कितने अनुशासनहीन होते जा रहे हैं। बड़े-बुजुर्गों से जरा सा भी नागरिक अनुशासन और सलीका नहीं सीखते।

हमारे साहित्य मे टेस्ट ट्यूबी बच्चे

अभी तक सब कुछ नाम न चल रहा था। जिन बच्चो को पैदा होना था, कायदे से पैदा हो रहे थे। नौ महीने मा को पीडा, बाकी सारा जीवन बाप का। फिर मास्टरो का, विद्यालयो को बसो का वगैरह। कई पार्टी आयी कई गयी मगर बच्चे बदस्तूर मा के गर्भ म जन्म लेते रहे। इसान का वारियत हुई कि अब यह ढर्रा पुराना पड गया। चुनाचे एक काच का ट्यूब निकाला, उसम मा-बाप को रखा और ठडे बक्स म रख दिया। लो जी शिशु तैयार।

हमारे दोस्त मिर्जा ने पूरा माजरा पढा तो मुह बिचकाकर बोले "अमा हटो भी, यह कोई बात हुई ? औलाद न हुई, निगोडी कुल्फी हो गई कि ठडे बक्से म जमा दी! खुदा न करे, एसे बच्चे बडे होगे तो मू प मक्खिया भिनभिनायेगी। हम पूछते है कि अब तक जसे पैदा हो रहे थे, वसे ही होते रहते तो कौन सी भूम मे लाठी लगी जा रही थी ?"

हमने माथा पीटकर उन्हे समझाया ' ऐ मिर्जा, अकल के नाम पर तुम्हारा राशन काड भर चुका है। दुनिया म पहली बार इन्कलाब आया। २८ जुलाई सन् ७८ को पहली बार साइसदा ने बच्चा नलकी म पदा करके दिखा दिया। यह दिन सुनहरे हरूफो म लिखा जायेगा। मगर तुम्हारी हाडी म यह बात जमे तब न ? किसी चीज की पैदाइश अपनी जगह से हटकर हो यह कोई मामूली बात है ? दुनिया म पहली बार टेस्ट ट्यूब बेबी पदा हुआ है मिर्जा !"

' तो मैं क्या ढोलक लेकर सोहर गाने जाऊ ? उनके लिए यह करिश्मा

नया होगा। हम अपने ही मोहल्ले मे ये सब चोचले बरसा पहले देख चुके है। क्या समझे ?"

हम मारे घबराहट के मिजा की बगले झाकने लगे। बडी मिन्नत म हमने उनसे कहा कि जरा पतला करके समझाइय।

मिर्जा कुछ इस अदा स मुस्कराये गोया वह खुद किसी बोतल या मर्तबान म पदा हुए हो। अगुली की पोर स मूछ की नोक जरा ऊपर करते हुए बोले बिल्कुल जरा गौरतलब बात है। हुआ वही जो टेस्ट ट्यूब म हुआ। अपने 'तपिश' अमीनाबादी को तो जानते ही होगे ? अमा वही जो शेर कम पढते हैं जलाप ज्यादा लते है। मैं चश्मदीद गवाह हू कि उनका सारा कलाम सारा साहित्य टेस्ट ट्यूबी है। जो न जानता हो उसके आगे मूछ फडकायें। हम रेशे रेशे स वाकिफ है। हुआ यो कि एक डायरी ले ली। एक पन्ने पर एक मिसरा मेरा टीपा एक मिलता जुलता आपका। हर पन्ने पर यही हरकत करके डायरी कही पुराने घडे-मटके म डाल दी। छह महीने बाद किसी सडे मुसे मुशायरे से बुलावा आया तो वही डायरी निकाली। इस अर्से म सारे शेर फर्टीलाइज होकर गजल बन चुके थे। वही गजल दुम पर तखल्लुस जोडकर अपने नाम स माइक पर दे मारी। ढेरो वाहवाह हुइ। अब आप इस टेस्ट ट्यूब गजल नही कहेगे क्या ?'

मिर्जा आपके पाव कहा है ? मैंने गदगदाकर पूछा।

'क्या ? मोजो म हे। क्या जरूरत आन पडी ?'

'भई मै आपके कदम चूमना चाहता हू। टेस्ट ट्यूबी अदब पर जो रोशनी आपने डाली है, वह सच लाइट है।'

हमने आपसे पहले ही अर्ज किया था कि हम कायल नही हो सकते। इस फतह पर या आप गाल बजाइये या बरतानिया वाले। शेर-शायरी और कविताई म यह टेस्ट ट्यूबपना हम काफी देख चुके है। अब जरा हिन्दी प भी आइय। महाकवि बिजूका आपके वाकिफ है। अरे भई वही जिन्हे देखकर लगता है कि जब पागल हुए और तब पागल हुए। उन्होने कविताई की फील्ड म जो जो गोल मारे हैं वे सब टेस्ट ट्यूबी हैं। आज भी चले जाइय बिना इत्तला उनके घर प। टेस्ट ट्यूब म कविता का गर्भाधान कराते न मिलें तो मेरी मूछ कल से आपकी। जिस क़िस्म का तहक़ीकी काम

(रिसच वक) आपके डाक्टर एडवड और स्टपटो ने वच्चे की वावत किया उमसे चवन्नी भर ज्यादा आपको बिजूका जी करत नजर आयेंगे। एक स एक पुराने कवि का मलवा भरा पडा है। कुछ इधर स टीपी, कुछ उधर स। दुम और चोच परकाट-छाट की आर डायरी म डालकर पक्न को धर दी। उनकी पुरानी आवनूसी अलमारी खोलिये। पचीसो डायरिया टस्ट-ट्यूव की मानिन्द गर्भावस्था स गुजरती नजर आयेंगी। किसी डायरी को चौथा महीना लगा है किसीका सातवा। काई प्रसव पीडा स कराह रही ह। 'बिजूका जी उस दिलासा देंगे कि परेशान न हा पीलीभीत का कवि सम्मेलन निकट है। तेरी डिलीवरी करा देंग। पहलोठी का नौनिहाल पीलीभीत के मच पर आख खोलगा। अब आप मुझे वताइये कि जा शख्स शुरू से लेकर पैदाइश तक इस कदर टस्ट ट्यूवी अदव दख चुका हो, वह भला नलकी म तयार हुए बच्चे से क्या खाक रोव खायेगा ? सच पूछिये तो बरतानिया वाले जरा ज्यादा जल्दबाज हैं। हम लोगा म अव भी शरा-फ्त बाकी है। हमन टेस्ट ट्यूब म इमल तयार करन का तजुर्वा पहले साहित्य पर किया। कामयाब हुए। मच माइक पर चल निकले। अब आग चलकर हम लोग भी मतबान, बोतल, अचारदानी, गुलदान या लोटे म बच्चे तयार कर लेग। हुनर हम मालूम ही है। फिलहाल एसी नाजायज पैदाइशें साहित्य म ही हान दीजिये।"

मेरा सीना फख्र स चौडा हा गया। जिस टेस्ट ट्यूब की चिघाड अब मची है, वह हमारे यहा काफी अर्से से चल रहा है। अलग अलग नस्ला के दो चुटकुले टेस्ट ट्यूब म डालकर ठडा हाने रख दिये और एक हास्य-क्षणिका न आखें खाल दी।

खर्च हो चुके बाप के नाम

ऐ मेरे अजीज बाप ! आप जन्नत या दोजख, जहां भी सेटल हों, आराम से रहें। आपको इस दुनिया से खर्च हुए बीस होलियां हो लीं, मगर मैं आपको पहली बार खत लिख रहा हूं। इधर पिछले दो दशकों में बाल बच्चे पालने में बड़ा मसरूफ रहा, सो खत न लिख सका। आपकी दुआ से बच्चे तो पल गये मगर बाल सब साफ हो गये। आपको याद होगा कि आपके मरते वक्त मेरे सिर पर भी लच्छेदार बाल थे। अब वहां क्रिकेट का साफ-सुथरा पिच है। पेंशन जैसे तीन चार आठ बाल सिर्फ कनपटियों पर शेष हैं और पैंतालीस साल में ही मैं आपका वालिद दिखने लगा हूं। जिन बच्चों को यानी अपने पोतों को आप चड्डी लगाये रेट मुड़कना छोड़ गये थे वे आज बाकायदा विश्वविद्यालय में हड़ताल कराने और खिलाड़ मचाने लायक हो गये हैं। आपकी दुआओं से आपका बड़ा वाला पोता दो साल से इश्क भी कर रहा है। आपने मुझे इश्क न करने दिया और भड़क कर पांव की इज्जत हाथ में ले ली। मैं डर गया था और हाल यानी महबूबा को समझा दिया था कि भई मेरा बाप हमारे इश्क पर राजी नहीं है, लिहाजा तुम कहां और इश्क कर लो। वह राजी हो गया और उसी दिन [illegible] और इश्क कर लिया। इधर मेरे बड़े बाल का यह हाल है कि एक दिन मैंने डरते डरते कहा बेटे ! तुम जहां इश्क कर रहे हो वह टीम [illegible] है। वहां अच्छी जगह इश्क करो मेरे नूर नजर !'

बोले ! यह इश्क है [illegible] टेस्ट मैच [illegible] कि टीम [illegible] जाय। जिस [illegible] में आता। [illegible] उसने टांग मार [illegible] कोशिश। मुझे

मम्मी ने वता दिया कि हमारे खानदान म किसीने इश्क नही किया। सभी ने डाइरेक्ट शादी कर ली। हुह, भला यह भी काई जिन्दगी है कि सर्विस कमीशन की तरह डाइरेक्ट शादी म आ गये ? नानसन्स !"

ऐ मेरे वाप ! उसकी मा ने भी मुझे लताड दिया, "देखो जी, बच्चो के पिरम शिरेम म टाग मत अडाया करा। हमारे वच्चे इतने घटिया नही हैं कि उनकी प्रेमिका हम चुनें और कहे मुन्ना इस लडकी से प्यार कर ला।"

ऐ मेरे वाप, आज तुम जिन्दा हाते तो मैं शतिया कमीशन विठा देता। जाच की जाये कि मुशी शम्भूशरण ने अपने बेटे के० पी० सक्सेना की शादी एक खटरस लडकी से क्या कर दी। उसके और पडोस की लडकी राम करधनी के प्यार को क्यो नहीं पनपने दिया गया ? अच्छा हुआ मेरे वाप कि तुम टाइम से चुक गय। आज कही तुम जिन्दा हाते तो तुम्हारे वाप तक को मैं गवाही म बुलाये वगैर न छोडता। मुझे सच वताओ, मेरे वाप, तुम्हारे टाइम म तो एमरजन्सी नही लगी थी, फिर तुमने मुझे प्यार क्या नही करने दिया ? कर लने देते तो क्या म हाई स्कूल मे फेल हो जाता ? या तुम्हारी पेंशन कम हो जाती ? काश, तुमने राम करधनी के वच्चे देखे होते हर वच्चा अमजदखान जसा तगडा है ! यही सब मेर बच्चे कहलाते न। एक मेर वच्चे हैं। छोटी उम्र म ही ए० के० हगल जैसे वूढे दिखते हैं। काश तुम अल्ला मिया स एक दिन की कैजुअल लीव लेकर आ सकत ! अपनी वहू को खुद न पहचान पाते। तुम्हारी कसम, मेरे वाप, वह मुझसे भी पाच किलोमीटर ज्यादा पिचकी दिखती है। हसना मत मेरे वाप, एक दिन मरे एक पुराने दास्त चाय पर आये। तुम्हारी बहू चाय रख-कर चली गयी। दोस्त ने धीरे स पूछा, 'य तुम्हारी वडी वुआ जी थी न ?'

मरे वाप, मेरे दिल पर वुलडोजर चल गया यह सुनकर। अब तुम उम्मीद करते हो कि मैं इस कदर सेकेण्ड हैण्ड औरत के साथ होली खेलू ? शरारतन पिछली हाली पर तुम्हारे आठवें पोते न मा पर रग छिडक दिया। बस, रग की ठडक के मारे तुम्हारी बहू की वायी जानिब की पाचवी पसली म चार महीन दद रहा। तीन सौ तिरेपन रुपय छब्बीस पैसे डाक्टर का बिल आया। काश, तुम राम करधनी से मेरा इश्क चल लेने देते तो तुम्हारे

बाप का क्या बिगड जाता ? इश्क के दिना राम करधनी पौन दा मन की थी। आज सत्तासी किला की है। उसका शौहर गिलासी राम नौ बच्चा के बावजूद उसके साथ होली खेलता है ता लगता है कि किसी ड्रम पर रग उडेल रहा है। मरे बाप तुमसे मेरा इत्ता सा सुख भी न देखा गया ? खर अब तो यही मजबूरी है मेरी कि, जहि विधि राखे पत्नी ताहि विधि रहिये।

अलबत्ता ए मरे बाप तुम्हारी ज्यादतिया का बदला तुम्हारा पोता मुझसे ले रहा है। ताजा प्राप्त सूचनाओ के अनुसार इस होली म वह अपन तीसरी महबूबा के साथ रग खेलेगा। तीन साल स बी० ए० पाट वन म रुका है और फी साल एक महबूबा हासिल कर ली। तुमन जीत जी मग तीन जोडे जुरावे खरीद कर न दी, और वह है कि तीन महबूबाए हासिल कर चुका। ऐ मेरे बाप, तुम्हारे वक्त म होली इतनी बकवड क्या थी ? भले ही उन दिनो गुझिया इफरात थी। पौने दा सर गुझिया चुराकर मैंने राम करधनी का खिला दी थी। आज मेरा सीनियर मास्ट एक गुझिया स तीना महबूबाओ को फीड कर रहा है। मगर डिसिप्लिन के मामल म तुम इतने घटिया क्या थे ? तुम्हारे सामन मैं मार डर क राम करधनी के घर की तरफ मुह करके नही बठ सकता था। आज मरा पहला तोताचश्म मेरी मौजूदगी मे तीना गल फ्रेंडस क साथ खी खी हसता है और मा स चाय लाने को कहता है। मेर बाप, तुमने मुझे अग्रेजी राज म उर्दू गजल तक न गान दी। और वह खुशनसीब है कि हिदी राज म मजे स अग्रेजी पाप गीत गा रहा है और हिल हिलकर कमर तोडे डाल रहा है। उसकी महबूबाए भी अपन गल की पूरी हास पावर के साथ अग्रेजी गानानुमा कुछ चीखती हैं। मेर बाप मन एक दिन डरत डरत पूछा

ए मेर बटे की गल फ्रेडा ! क्या तुम होली म हिदी गाना नहा गा सकती ? '

व बोली ओह पाप, हाउ मच ओल्ड एण्ड एक्सपायड यू आर हिन्दी भी कोइ लग्वज है ? आल रबिश, काश आपन सिनेट्रा या एल्विस प्रिसल को सुना हाता। होली म फास्ट म्यूजिक चलता ह डड। '

ए मरे बाप क्या तुम्हार टाइम म फास्ट म्यूजिक नही था ? अगर था

तो तुमने मुझे कमर क्या न लचकाने दी ? कमर मेरी थी, तुम्हारा क्या जाता ? काश, उस पाप म्यूजिक का पाप मेरी समझ म आ जाता तो आज य चिलगाजिया मुझे बैकवड ता न समझती !

चुनाचे ऐ मेरे बाप, तुम मेरे इश्क के साथ मेरी होली भी गारत कर गये। क्या न मरने से पहले मुझ हिंट दे गये कि ज्या ज्यो अग्रेजा की याद घटती जायेगी, अग्रेजियत की तहजीब बढती जायेगी। अब मेरे पास क्या है ? न उम्र, न अग्रेजियत, न बच्चा के साथ निभाने का सलीका ! खैर, मुझे खुशी है कि मेरे बच्चे पुरानी तहजीब के लबादे से बाहर निकल आये हैं और होली पर अमेरिकी ढग से फाग नाच रहे है। ज नत (या दोजख) म पोस्ट काड मिलता हो तो अपनी और अम्मा की खैरियत लिखना !

तुम्हारा बदनसीब बेटा !

मेरे मोहल्ले का मध्यकाल

इतिहासकारो का सारा निचोड पुराने शिलालेख, भित्तिचित्र और खुदाई म प्राप्त ताम्र झाम गवाह ह कि मध्यकाल म व जो स्त्रिया होती थी अपने शृगार के प्रति काफी सजग रहती थी। कुछ नही बदला, आज भी स्त्रिया मध्यकाल मे पहुचकर शृगार के प्रति अति सजग हो जाती है। शृ गार म मेरा कोई अपना दखल नही है। यह विषय आदरणीय रवीन्द्र-नाथ त्यागी का है। उनके जसा शृगार मुझे कम ही देखन का मिला है। नायिका का नाखून ले बैठते ह नो ऐसा सजाकर लिखत है कि मन-पक्षी तीलिया तोडने लगता है। जी चाहता है कि बाकी नायिका भले ही कोई और ले जाये सिफ नाखून मुझे देता जाये। मैं उसीके सहारे उम्र गुजार दूगा। त्यागी जी की मर्जी कि डिफेंस म चले गये। और कोई होता ता इतना त्याग न करता। मेकअप डिपाटमट म जाता। वे मेरे आदरणीय और अग्रज है। शृगार की बात चली सो याद आ गये। खर।

ध्यान देने योग्य प्रश्न जो है सो मध्यकाल का शृगार है। चूकि एक मध्यकालीन मेरे घर म भी है सो विषय म मेरी गहरी दिलचस्पी है। अडोस पडोस भी काफी मध्यकाल है। उनम से कुछेक न तो मध्यकाल की गरिमा को इतना बल और भार प्रदान किया है कि सतुलन बनाये रखना कठिन है। चलती है तो पता लगाना कठिन हो जाता है कि इतिहास का यह शिलालेख अमीनाबाद की ओर जायेगा या हजरतगज की ओर। कभी कभार मुहल्ले का मध्यकाल सामूहिक शापिंग को निकलता है तो लगता है कि जस बीजापुर और फतहपुर सीकरी हरकत म आ गय हो।

बहादुर सिपहसालार गुलाम गौस खा को तोपे किले की फसील पर आ गयी हो।

यह तो हुई गरिमा और क्षेत्रफल की बात। अब शृगार पर आइये। चैरिटी बिगिन्स ऐट होम। घर से ही खैरात शुरू करता हू। मध्यकाल की गगा जमुनी लटें सुलझाने म फी माह सात कघिया के दात तोड देती है। प्राचीनकाल म जब वे ब्याह कर आयी थी यो ही चोटी पर हाथ फेर लेती थी और उम्र कैद जैसी लम्बी जुल्फें लहराकर तडप उठती थी। नन यो ही कजर बिन कारे रहते थे और होठ रेम्टीक्लीन कैप्स्यूलो जसे गुलाबी रहते थे। मुस्कराती थी तो लगता था जैसे सारे हिन्दुस्तान की औरतें अच्छे मूड म है। धीरे धीरे प्राचीनकाल विलीन हो गया। मध्यकाल आया। पुरुष के लिए व सदा ही काल' रही, बस हत्या का ढग बदलता रहा। मध्य काल की सबस बडी इल्लत यह हुई कि पता लगाना कठिन हो गया कि वे हस रही है या बिलाप कर रही ह। बाल-बच्चे निपटाकर कालेज यूनिवर्सिटी पहुचा दिये और गस बुझाकर शृगार करने बठी। बाईस बरस बाद ख्याल आया कि दुल्हन वही जो पिया मन भाये। कघी की उल्टी जानिब स दबा दबाकर चितकबरी जुल्फो मे खम और छल्ले निकाल रही हैं और पिया कमबख्त का खून सूख रहा है कि डेढ रुपये की कघी अब टूटी तब टूटी। अब इस उम्र म किस पिया के बाप म दम है जो टोक दे कि भई बासी बर्फी पर चादी के वक अच्छे नही लगते। छल्ले वल्ले निकाल चुकन पर एक बार आईने म मध्यकाल निहारा और दूसरी नजर पिया पर डाली कि निगोडा ताड भी रहा है या अखबार ही पढता जा रहा है। अब जरा बिन्दी वगैरह ठीक की और बेबी (कालेज गयी ह) की अलमारी से सब अल्लम-गल्लम शीशिया डब्बे और पेंसिलें निकाली जिनका नाम भी अपने प्राचीनकाल म नही सुना था। चेहरे पर फाउण्डेशन बिठाने म इतना वक्त लग गया जितने वक्त मे एक अच्छी खासी इमारत की फाउण्डेशन रखकर उदघाटन भी हो चुके। उधर फाउण्डेशन क्रीम अलग परेशान है कि टिके कहा? जा-बजा इस कदर खाइया और पहाडिया है चेहरे पर कि फाउण्डेशन क्रीम भागती फिरती है। इसके बाद मुख्तलिफ डब्बा और

अचारदानियों से कुछ खुश्कापफ की मदद से बिठाकर सतह बराबर की। आइने पर अलग झुंझलाहट आये जा रही थी कि कमबख्त झूठ क्यों नहीं बोलता ?

इसके बाद लिबास की बाउंड झोल, ऊंच नीच, आगा पीछा दुरस्त करके खामखाह फाल की चुन्नटें बराबर की गोया सारा मध्यकाल पलस्तर करके प्राचीनकाल में जा पहुंची हो। अब थोला, बग या कडिया सभाल कर बिला वजह पिया प्यारी से पांच छह मरतबा कहा कि मैं पडोस के साथ बाजार जा रही हूं। अर्थात ए मरदूद एक बार तो मेरे मध्यकाल पर आह भर दे। फिर चाहे जहन्नुम में जा। आहिस्ता-आहिस्ता नपे तुले कदम रखता हुआ हर फ्लैट की सीढी से एक-एक मध्यकाल उतरा। नुक्कड पर जा मिली और पूरा इतिहास इकट्ठा हो गया। पढने वाले निगाह चुराने लगे कि हटाओ, इतनी भारी भारी डिक्शनरियां कौन पढे। टाइटल पेज की गरिमा देखकर ही दिल हिलने लगता है। उधर पिया लोग जो हैं वे घर में बैठे कलेजा कूट रहे हैं कि जितने का लोशन फाउण्डेशन पोत गयी उतने में पूरे फ्लैट की पुताई हो जाती।

मध्यकाल के ये ऐतिहासिक शिलाखण्ड जिधर जिधर होकर गुजरे, कलेजे दहल गये, ट्रैफिक रुक गयी कुछ लोग इतिहास के रंग चुगे अवशेष देख रहे थे, कुछ जिधर जाना चाह रहे थे उधर मध्यकाल ने सडक ब्लाक कर रखी थी। जिस जिस दुकान, जिस जिस काउंटर पर मध्यकाल का आक्रमण हुआ शो केसों की कीलें हिल गयीं और सेल्समैनों के चेहरे का भूगोल डगमगाने लगा। जहां जहां रास्ते में दूसरे मुहल्ले का मध्यकाल मिला, गर्जना के स्तर की भयंकर हंसी के गुलगपाडे उडे। अगल बगल वाले खुद को बचाकर निकल गये कि टोडरमल या डलहौजी युग से रगड खाना प्राणघातक या कम से कम हड्डी पसलीघातक सिद्ध हो सकता है। अपने युग की सारी गरिमा और प्राचीनकाल के अवशेषों की सारी आभा प्रदर्शित करके मध्यकाल समुदाय मुहल्ले लौटा। रिक्शे टेम्पो वाले बचाकर निकल गये कि चित्तौडगढ के किले का टायर ट्यूब झेल नहीं पायेंगे। ठेले पर हिमालय कौन लादे ?

मेरे अपने घर के ऐतिहासिक सग्रहालय का मध्यकाल भी लौट आया। सारा पेण्ट-वार्निश खुरच चुका था। घर मे गया, शृगार स लदा मध्यकाल अव ऐतिहासिक अर्थों म मोहन जो दडो का टूटा वतन नजर आ रहा था। जत इतिहास ठीक कहता है कि मध्यकाल म शृगार पर बहुत जोर था। आज भी है। इतिहास पटरी-पटरी ठीक दौड रहा है।

क्या सखि, अगद ? ना, कमीशन !

सो भक्तो, परमपिता परमात्मा की असीम अनुकम्पा और जमाने की गर्दिश कुछ ऐसी कि खाने की हर चीज रकाबी से उठकर कुर्सी तक जा पहुची है। मसलन, कमीशन ही ले लीजिये। मेरे बचपन जवानी और मूछो पर उतरी सफेदी तक लोग बाग कमीशन खाते रहे। कितने ही कमीशन खा खाकर इस कदर सहतमद हो गये कि खुद अपनी ही पुरानी बनियान पहचानने से इकार कर दिया।

अब कमीशन खाने की चीज न रहकर कुर्सी पर बैठने लगा। मेरी शेष बची ततीस परसेंट जवानी गवाह है कि मैंने रेलवे सर्विस कमीशन के अलावा कोई कमीशन नही देखा। चुपचाप इस कमीशन का कई पन्नो का फार्म भरा, सवाल जवाब हुए और बदन गुर्दा आँतें नपवाकर स्टेशन मास्टरी की सुख सेज झण्डियो को प्राप्त हो गया।

अब इधर कमीशनपना कुछ इतनी तेजी से सरसब्ज हो रहा है कि बाल बच्चो की गलतियो पर भी कमीशन तनात हो रहे हैं। हमारे वक्तो मे लडके-बच्चे गलती करते थे तो देन अण्ड देयर गोशुमाली (कान खीचना) की रस्म अदा कर दी जाती थी ताकि एक के कान पर सनद रहे और दूसरे बच्चे सबक हासिल करें।

मैने ही बचपन मे कई बेजा हरकतें की। बाबू जी ने बाया कान पकड कर मेरा पूरा शरीर जमीन से उठा दिया। मुझे बरेली से ही दिल्ली नजर आ गयी। कभी कोई कमीशन वगैरह नही बैठा। यो भी उन दिनो घरो मे इतना फरनीचर नहीं होता था कि कमीशन बिठाया जा सके। कमीशन

कोई दरी या बारे पर विठाने की चीज तो है नहीं। मामूली आदमी कमीशन 'विठाने' की सोचे तो उसकी अपनी खटिया खडी हो जाय। खर।

इन दिनो मेरे अ दर न जाने कौन से जरासीम (कीटाणु) रेग गय है कि मैं कमीशनो पर चि तन करने लग पडा हू।

बुनियादी सवाल यह है कि अब जो कमीशनात आहिस्ता-आहिस्ता विठाये जा रहे हैं, वे अभी तक कही खडे थ ? अगर खडे नही थे तो विठाने का सवाल ही नही पदा होता। कुछ लोगो का कहना है कि चद कमीशन अभी लेटे पड़े है। उ ह विठाना जरूरी है। म यू पूछता हू कि वे बैठ ही गय, या खडे हो गय, या चलने लग तो जनता जनादन की सहत पर कौनसा फक पड जायगा ? कन्ता जैस घर रहे तसे रह बिदेस।

इधर मेरे जवान जहान बच्चे भी इस कदर कमीशनिया गय है कि धर पटक भी करेग और सजा भी पसद नही करेग। बडा वाला फीस की रकम के बकाया अस्सी पसे सफा डकार गया। उसकी मदर ने लताडा तो बडे डेमोक्रेटिक ढग से कहता क्या है कि कमीशन बिठाओ कि मने पैसो म गालमाल की है।

मैं सूचनाथ निवेदन कर दू कि मेरे मन म न किसी पार्टी के लिए पीडा है न ही कही काई तागा बधा है। अत जो कहता हू उसम एक बूद भी किसी पार्टी का रस सावित नही हाता। वसे मेरे ही घर म झाक देखिय तो सारे घटक मौजूद हैं। काई चेहरे स मार्क्सवादी लगता है, कोई सी एफ डी यन। खूब चिलगुहार रहती है, मगर बाहर स हमारा दौलतखाना निहायत आदश है। सो, पूरा घर कमीशनवादी है, सिफ मै नही।

एक दिन या ही कुनबे म कमीशनालाप चल रहा था कि जटाशकर आ गये। मर बचपन के दोस्त है और पदाइशी कुवारे। मेरा मझला उनस भिड गया कि चच्चा आप कमीशन पर बैठ जाओ और हमारा निपटारा कर दो। पहल तो जटाशकर न बहाना किया कि उनके फोडा निकला है। बैठ नही सकते। मगर मझला अड गया कि कोई बात नही। स्टडिंग कमीशन पर फैसला कर दो। मैंने माथा पीट लिया कि ए जाहिल की औलाद, तू एक मामूली लल्लू पजू आदमी का बेटा है। तुझपर कमीशन

नही फबेगा। जटाशकर ने एक वडी ईमान लगी बात कही। बोले कि' बडे आदमी को उनकी तरह हमशा कुवारा रहना चाहिए ताकि न औलाद पदा हो न कमीशन का अदशा रहे।" इस तरह कमीशनो के इखराजात से भी वचत रहेगी और परिवार-कल्याण होगा सो फोक्ट मे। मगर मैं क्या करता ? जिस तरह वाहर आ चुकी टूथपस्ट वापस ट्यूब म नही जा सकती, मैं दोवारा कुवारा नही वन सकता।

कमीशनो के भविष्य पर मैंन च-द ज्योतिषिया स सलाह ली। उनका कहना है कि कई सहस्र युगो के बाद कमीशन का कल्ला पुन फूटा है। यह उस वक्त तक हरा भरा रहगा जब तक पुत्र अथवा पुत्रिया होते रहते हैं। इसे शान्त करन का कोई यत्न नही। महाभारत के टाइम म भी कमीशन वैठते थे। कहत हैं कि अजुन के पास एक सिद्ध वाण था जिसे चलाकर कमीशन भ्रम समाप्त किया गया। अब इस रोकना है तो कोई अजुन ढूंढो। भीम तो मेरे मुहल्ल म ही कई है। अजुन कोथाए पावो ?

उधर कमीशनशास्त्रिया का यह कहना है कि कमीशन बेहद जरूरी चीज है। इसकी वही इम्पार्टेंस है जो मकान म रोशनदान की होती है। यानी कि वदबूदार और जहरीली गसा का निकास। गैस फैलते रहना खतरनाक है सो कमीशन द्वारा सारी घुटन का निकास हो जाता है और राष्ट्रीयता म गस्टिक नही फलती। पेट हल्का रहता है। एक दूसरा लाभ उन्होंने यह भी वताया कि कमीशन की मदद स बच्चा का हिस्ट्री याद करन म आसानी रहती है। मसलन फला का मारकर फ्ला तख्त पर वठा। अब नय ढग स इस तरह याद करेंगे कि फला के बाद फला न और उसके बाद फला ने कमीशन विठाया और अगला पिछले को हटाता रहा। इतिहास याद करने का यह वेहद स फाराइज्ड तरीका है। साफ सुथरा।

कमीशन शब्द के जन्म क बारे मे व्यग्यकारा का कहना है कि मूल शब्द कम-सशन है अर्थात जब नयी ससद का सशन आयेगा, कमीशन साथ लायेगा। यही मूल शब्द सिकुडकर कमीशन हो गये। बाकी काफी कुछ पुरान कमीशन जैसा ह जो खाया जाता था। पहले भी कमीशन एजेण्ट' होत थ अब भी है।

कुछ रद्दोबदल के साथ शायर ने भी कहा है

नेता ! तरी जिन्दगी पे दिल हिलता है
तू बस एक कमीशन क लिए खिलता ह ?
बोला नेता हस के ऐ बाबा !
यहा प, एक कमीशन भी किसे मिलता है ?

श्री के० पी० कुलकथा

सोचता हू कि लाओ, उनका भी भला कर दू। किनका ? उनका, जो बिला वजह मेरी जिंदगी म टाग अडाने का शौक रखते है, यानी मुझपर शोध वोध कर रहे है। वसे तो मेरे च द दोस्त मिलकर एक महान ग्रथ की रचना म जुटे पडे है, जिनका नाम श्री के० पी० कुलकथा' रखने का इरादा रखते है। यह ग्रथ कई किलो म जायेगा और मेरे मरणोपरान्त छपेगा ताकि मैं रायल्टी म हिस्सा न माग बठू। तब तक कितनो की पी एच-डिया रुकी रहेगी। एक क या है कोई मध्यप्रदेश म, जो मेरे ऊपर थीसिस लिख रही है। विषय है के० पी० के अति असफल प्रणय सबध'। उन्ह डाक्टरेट मिल जायें तो प्रभु और विश्वविद्यालय की कृपा। वैसे, विषय अच्छा है। सुनकर मुझे भी जरा जरा घुरझुरी हुई। आने वाली पीढिया यह तो नही कहेगी कि मैं क्लीन बोल्ड हो गया और किसीने घास नही डाली। चुनाचे आज यही टापिक उठाकर मै जनसाधारण की जनरल नालेज म इजाफा कर दू।

दरअसल मैं उदू म पैदा हुआ था। इसका अथ यह है कि जिस खान दान पर मैंने अपने पैदा होने का एहसान किया था, वहा सिफ उदू ही बोली और पढी जाती थी। वावू जी वेहद खस्ताहाल टाके लगी जूती पाव म डालकर कचहरी जाते थे। यही जूती अगर वक्त पर नजर नही आती थी ता अम्मा से या पूछत थे

'अरे भई वालदा ए फला फला (हमारा नाम) यह क्या बात है कि हमारी पापाश (जूती) नजरनवाज नही हा रही है ?"

अम्मा कहती, ' वह क्या विस्तर तले रौनक अफराज हो रही है !"

ऐसे ठेठ फारसी माहौल म जाहिर है कि हमपर भी नजले की तरह उर्दू हावी थी।

सब लोग जानते ह कि हिदी म जो 'प्रेम' होता है, उसम जरा देर लगती है उर्दू मे 'इश्क' जल्दी हा जाता है। हम भी चूकि उर्दू म थ, इस लिए तरह के होते होते ही तीन तरह हा गये। अभी मूछा म कई साल बाकी थे और हम इश्क का चस्का लग गया। 'श्री के० पी० कुलकथा' मे इस बात का जिक्र आया है कि हमे लडकपन म दो ही शौक थे—जीरे के बघार वाली मूग की दाल पीना और इश्क पर तवज्जो देना। जस केमिस्ट्री म आक्सीजन होती है—रगहीन, स्वादहीन, गधहीन, वैसा ही हमारा इश्क था—स्वाथहीन, घपलाहीन। साफ सुथरी लटकइया वाली मुहब्बत। साथ पढते थे। वह साढे दस की, हम तेरह के। न गाना, न आह, न विरह, न पीडा, फिर भी खालिस इश्क। वह अपने बस्त से मठरिया निकालकर हम खिलाती और हम अपने बस्त से गिलास निकालकर पानी पी लेते। हमारे जमाने म खिलान पिलाने का काम महबूवा ही करती थी। आशिक अपना जेबखच बचाकर रखत थे। उसका नाम कुछ ऐसा ही था, जसे अमूमन छोटी लडकिया के हाते है। हमारा नाम उन दिना भी के० पी० था। विलेन उन दिना भी हात थे। एक हमारा ही हमउम्र लडका, जो किसी हलवाई खानदान से ताल्लुक रखता था, उससे इश्क करना चाहता था। मगर हमारी साढे दस साला महबूवा अपने करेक्टर की बेहद पक्की थी। उसने हलवाई-पुत्र को डाट दिया कि जाओ हम आलरेडी के० पी० से इश्क कर रहे हैं। हलवाई के लडके ने हम रास्ते मे पीटना चाहा। उन दिनो धर्मेंद्र या विनाद खन्ना का जमाना हाता, तो हम उस फिल्मी ढग स निपटा देते। मगर नही, हम आशिक थे और उर्दू म आशिक थे। उर्दू साहित्य का इतिहास गवाह है कि आशिक ने हमेशा जुल्म सहे हैं, अपना जूता कभी नही उठाया। चुनाचे हमने भी सिर झुका दिया और उसने हम कलाकन्द जैसा थोप दिया। कई दिन फोटो मिलान पर भी मा बाप हमारा चेहरा नही पहचान पाये। जिस वक्त वह हलवाई पुत्र हमारे चेहरे से चादी के वक उतार रहा था, उस वक्त हमारी साढे दस साला महबूवा फफक-

फफक्कर रो रही थी। काश, उसन अपनी पाचवी क्लास म म्यूजिक क विषय लिया होता, तो गा पडती, काई पत्थर स न मारे "

यह सारा किस्सा बाबू जी को मालूम हुआ कि हमारी धुलाई सफाई इश्क की वजह से हुई है तो बेहद खुश हुए। इतने खुश, जस क्चहरी म कोई मुवक्किल अठ नी की जगह बारह आने दे गया हो। जाते ही अम्मा स फमाया, लो भई फला-फ्ला की अम्मा ! अब मगवा लो शीरनी (मिठाई) और खिला दो पाच कायस्था का। माशा अल्लाह ! लडका अब जाघिया छोड पाजामे की उम्र का आ पहचा है। मुशी इतरचन्द की बच्ची स नजरा का सिलसिला चल चुका है। गणेश जी की किरपा स जल्द ही गजल वगरह कहने लगगा।

अम्मा भी बहद खुश हुई। उन दिना बच्चा के इश्क पर मा-बाप क खुश हाने का रिवाज हुआ करता था। अब वक्त बदल गया है। मरा लडका इश्क करे, तो उसकी खोपडी पर क्रिकेट खेल दू। आनन फानन बाजार म गज भर रेशम मगवाया गया और हमारी महबूबा क लिए सलमा सितारा वाली फिराक सिलकर पाव भर गुड क साथ बतौर नज राना मुशी इतरचन्द के घर पहुचा दी गयी। उधर स भी हमारे लिए एक सिली सिलायी नेकर और पाच मिर्चें आयी। इन मिर्चों को सुलगाकर हम पर धुआ दिया गया, ताकि हम नजर न लग और इश्क क मामल म आइन्दा हमारी ठुकाई पिटाई न हो। आहिस्ता आहिस्ता हम दोना उस उम्र को पहुचे जब वाकई इश्क करना चाहिए। वह प्राइमरी स हटकर गर्ल्स स्कूल म पहुच गयी और इधर हमारी मूछा स क्ल्ल सरसब्ज हुए। हम दोना क मिलने-जुलने पर पाबन्दी लगा दी गयी। उन दिना यही रिवाज था कि लडकी फ्राक छोड सलवार का प्राप्त हो जाय और लडके की मूछें नमूदार हो जायें तो इश्क नही करन दिया जाता था। करना है तो शादी करो वरना भाड म जाओ।

बाबू जी और मुशी इतरचन्द म कई दिन स गालमज बातचीत चल रही थी। लेन-देन पर कुछ पपला था। इतरचन्द की तरफ स नकद म इक्यावन रुपय छह आन और दहेज म एक लाटा कम जा रहा था। बाबू जी साफ मुकर गय। एक लोटे की बदौलत हमारी आने वाली पीढ़ी का नक्शा

बदल गया। अब जो हैं वह जरा सावली हैं और फनस्वरूप चारो बच्चे जरा स्लटी रग के हैं। वह हुई होती, तो बच्चे गोरे भभूका होते। खैर, रिश्ता टूट गया। वह एक लोटा कम दहेज पर पीलीभीत म ब्याह दी गई, हम एक लोटा ज्यादा पर गोरखपुर म। उसकी शादी के तीन महीने बाद जब वह मायके लौटी, तो हमस मुलाकात हुई। हमन पूछा, 'क्यो भई, हम याद तो नहो आये कभी ?" वह झेंप गयी और बोली

"हटा जी ! तुम काहे को याद आन लग ? हमारी अम्मा कहती हैं कि शादी के बाद सिवा दूल्हा के किसीको मत याद करा। तुम काई दूल्हा थोडे ही हो !"

खर, हम उस अब भी कभी कभी याद कर लेत हैं। खास तौर पर उस वक्त जब किसी हलवाई की दुकान से गुजरत हैं। चेहरे की चोटें ताजा हो जाती है। चुनाच, अगर आप इस पूर मामल को इश्क मानते है, तो हमन भी किया। नही मानते है, तो मेरा जीवन कोरा कागज कोरा ही रह गया।

अभी आपन क्या पढा है ! पूरी 'के० पी० कुलकथा' पढो, तब जाके पता लगगा कि कस मुगल बादशाहो जस हमने उम्र के छियालीस साल पार किये हैं।

न भीग पाने का दुःख

बरसने को मेह बहुतेरा बरसा मगर कायदे से दो ही बार बरसा—एक बार जब मैं जवान नहीं हुआ था, और दूसरी बार जब मैं जवान नहीं रहा। दोनों बार भीगा और खटिया थाम ली। डाक्टरों का कहना था कि बलगम जकड़ गया है। पहली बार बाप ने दुआ की कि बेटा अच्छा हो जाये। इकलौता है। दूसरी बार बेटे ने दुआ की कि बाप अच्छा हो जाये। कहीं खच हो गया तो पिक्चर के पैसे कौन देगा? मैं दोनों बार अच्छा हो गया। पहली बार भगवान ने बाप की मान ली दूसरी बार बेटे की। मेरी आज तक नहीं मानी। मैं जवानी के दिनों में भीगना चाहता था, वैसे ही जैसे फिल्मों में भीगते हैं। मगर बेइंतहा बारिश के बावजूद भीगना मेरे मुकद्दर में नहीं था। खैर।

वह जो मैंने दूसरी बार भीगने का जिक्र किया है सो मैं पिछले हफ्ते भीगा था और खटिया को प्राप्त हो गया। तेज बुखार चढ़ा और थर्मामीटर का पारा चढ़ता गया। बुखार की नींद में अजीब-अजीब सपने आने लगे। वही सब सपने जो जवानी में आते हैं।

देखता क्या हूँ कि अचानक कड़क जवान हो गया हूँ। सिर के खच हो चुके बाल पुनः घुँघराले हो उठे हैं। वही सब झावड़ माल पहन हूँ जो आजकल नौजवान पहनते हैं। फूलदार कमीज तले बनियान नहीं है। शर्ट के बटन खुले हैं। पानी बरस रहा है मैं भीग रहा हूँ। मेरे साथ कोई और है जो भीग रही है। दूर कहीं कुछ ऊटपटांग म्यूजिक बज रहा है जैसे ढेरों कुत्ते लड़ रहे हों। मेरे और उसके सारे कपड़े भीग गये हैं और अब जाकर

पता लग रहा है कि हम दोना म कौन नर हू और कौन मादा। वरना पोशाक और बाल एक जस हैं हमारे। वह मर करीब आती है। हम दोना अग्रेजी म कुछ-कुछ मुहब्बत की बात करत हैं और भूल जात हैं कि ग्रामर की लिहाज मे दोना ही गलत अग्रेजी बोल रहे हैं। वह मर और करीब आती है और कहती है कि पढाई कैसी चल रही है ? मैं कहता हू कि छाडो डियर। जस-जमे इम्तहाना की तारीख फटे जूते जैसी फलती जा रही है, मेरा मन पढाइ से ऊब रहा है। हम दोनो और करीब आत हैं, और फट ! मेरी आख खुल जाती है। बीवी के हाथ म लौंग-तुलसी वाली चाय है। कहती है 'पी लो। बलगम हलका हो जायगा।"

मैं चुबलाकर पी लेता हू। बलगम और गाढा हो जाता है।

बीवी पूछती है कि सपना देख रहे थ ?

मैं कहता हू, "हा, देख रहा था।

वह पूछती है कि किस देख रहे थे ?

म बात दबा देता हू कि कहीं सपने म भी दाग न अडा द। कह देता हू कि अपने दफ्तर क हेड क्लर्क को सपन म देख रहा था

उस तसल्ली हो जाती है कि सपन म भी मेरा चाल चलन पुख्ता है।

बुखार अब भी उतना ही तेज है। बीवी के टलते ही मैं पुन आखें मूद लेता हू कि वह सपना गताक से आग चालू हो जाये। मगर दस बार म बाकइ दफ्तर क हेड क्लर्क की सपूर्ण खोपडी (घुटी चदिया) देखता हू। पसीना छूटता है। आखें खोल देता हू। बुखार थोडा नीचे आ गया है। सिर म भयकर दद है। 'सत्यम्, शिवम् ' देखने के बाद जो सिरदद हुआ था, उससे भी अधिक।

पाच रोज बाद आज नामल हुआ हू। खिचडी भी खायी है। छडी क सहारे छत पर आ जाता हू और बरसाती के नीचे चारपाई पर बैठ जाता हू। घटाए घिर रही हैं। वैसी ही काली जसी फिल्मा म घिरती हैं या उर्दू शायरा की गजल म घिरती हैं।

नीचे आगन से बीवी पूछती है कि क्या कर रहे हो ?

जी म आता है कि कह दू—खुदकुशी का प्लान बना रहा हू, मगर चुपचाप कह देता हू कि चादर ओढे हुए घटाए देख रहा हू।

बीवी चुप हो जाती है कि चलो देख लेने दो। सिफ घटाए ही तो देख रहा है। चाल चलन खराब नही होगा। उसे मेरे चाल चलन की बहुत चिता रहती है।

तभी अचानक देखता क्या हू कि सपना रिपीट हो रहा है। मैं डर जाता हू कि बुखार शायद फिर चढ आया है। मगर नही। सपना नही है। बाबू रामस्वरूप की अटिया पर लपयप चल रही है। दोनो पण्ट बुशशट म है। शायद सगे भाई। मगर नही उनमे से एक हस रहा है एक हस रही है। जिसे इश्क कहते हैं वह चल रहा है। बूदें पडन लगी हैं। दोनो भीग रहे हैं। एक दूसरे को करीब कर रहे है। जी म आता है कि चीखकर कह दू कि भीगो मत बलगम बढ जायेगा। मगर चुप रहता हू। पानी तेज हो गया है। सारी छतें सुनसान हैं। व दोनो खूब भीग रहे है। और बिना वजह हस रहे है। भीगने से उनके नर मादा का फक स्पष्ट हो गया है। मुझे यही दुख हो रहा है कि कम्बख्ता को तेज बुखार चढ आयेगा और बलगम घर घरायेगा। मेरी बला से। हाय दोनो किस कदर करीब हो गय है। जी म आता ह कि पुन जवान हो जाऊ। जब था तो कभी इस तरह भीगने का मौका हाथ न लगा। जवान नही हुआ था तभी शादी हो गयी और जवान होते होते तक दो चिलगाजे पदा हो गये। झुझलाकर शेर पढा

जवान होत ही घिरने लग सपूतो से
हम तो चडिढया ही हाथ लगी शबाब के बदले।

उधर भी सीन कट होन लगा है। वह जो भीग रही थी वह छत पार करके अपन जीने म गुम हो गयी है। जो भीग रहा था वह गुनगुनाता हुआ अपन जीने मे उतर गया है। भगवान ने चाहा तो दानो को शर्तिया बुखार आयेगा। मुझे सताकर खुश नही रह सकते।

नीचे स बीवी न आवाज दी है कि चले आओ ऊपर बहुत ठण्डक है। दोबारा बुखार बढ सकता है।

मैन जवाब दिया कि आ रहा हू।

वह पूछती है कि भइ, ऊपर क्या दख रहे हो इतनी देर म ?

इस बार मैं नही कह पाता कि हुडक्लक की चदिया देज रहा हू। पह देता हू कि परिन्दे दख रहा हू। वारिश म भीगते हुए परिन्द कितन जच्छ लगते हैं। काश, मैं भी बचपन और इस उम्र के बीच एक बार भीन लिया होता ! हिश सब बकवास है।
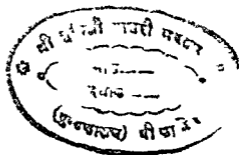
कृपया नकल को नमन कीजिये !

मेरे साथ एक बुरी आदत है। जो चीज हत्थे चढ जाती है उसीपर शोध करने लग पडता हूं। पिछले दिनों मैं चिकमगलूर पर शोध करने की सोच रहा था। भारतवासी होते हुए भी यह नहीं जानता था कि चिकमगलूर क्या चीज है। अभी तक मैं इसे खाने की डिश समझ रहा था। बाद में साबित हो गया था कि वाकई खाने की डिश है। जार्ज अर्स पाटिल इंदिरा—सब अपनी अपनी प्लेटें और चम्मच सभाले बैठे थे कि इसे हम खायेंगे। जिसे खाना था उसके हिस्से में आ गया चिकमगलूर। बहरहाल, चिकमगलूर में काफी चिक चिक हुई। मैंने शोध का इरादा छोड दिया।

अब मैं नकल पर रिसर्च कर रहा हूं। नकल का इतिहास हमारे देश के इतिहास जैसा पुराना है।

अंग्रेजों ने मुगलों की नकल की। कांग्रेस ने अंग्रेजों की और जनता ने कांग्रेस की। सिर्फ ढंग बदला। सताने के तरीके बदले। औजारों हथियारों और ऐयाशी का नये ढंग से आधुनिकीरण हुआ। जो पहले जूते खाकर जिन्दा रहते थे अब भी हैं। जो पहले ऐयाशी का सुख भोगते थे अब भी भोग रहे हैं। नकल का इतिहास हमारे देश में काफी पुराना है।

मेरा बेटा यूनिवर्सिटी इम्तिहान की तैयारियों में लगा है। बेल बाटम पर बाल पेन से केमिस्ट्री छाप रहा है ताकि तन से लगी रहे और वक्त जरूरत काम आये। मैं यूनिवर्सिटी में था तो पाजामे पर फार्मूले लिखता था। अब यह मेरा मुकद्दर कहिये कि धोखे में मेरा फार्मूला-युक्त पाजामा मुझसे पहले बाप पहनकर कचहरी चले गये और मैं टापता रह गया।

सुना है, आजकल व याओ को नक्ल मे काफी सुविधा है। किसकी मजाल है जो हाथ लगा दे। मेरे बेटा को मुझसे यही शिकायत है कि हमे बेटी बनाकर पदा कर देते तो कौन सी मूछ छोटी रह जाती ? ब्लाउज बल बाटम, साडी वगैरह पर पूरी किताब छाप लेते। मेरी पत्नी ने बच्चा का समथन किया। हम मिया बीवी की बी० ए० की पुरानी मार्कशीटे गवाह है कि उनका ग्राण्ड टोटल मुझसे ज्यादा था। मुझे याद है कि तब मैं नेकर पहनकर इम्तहान देने गया था, वे साडी पहनकर। नकल का इतिहास हमार देश मे काफी पुराना है।

मैं पढता था तब भी परीक्षा पेपर के दौरान बाथरूम का महत्त्व बढ जाता था। बिला वजह लघुशका महसूस होती थी और पुर्जे वगैरह चला लिये जाते थे। अब भी परीक्षा के दौरान गुर्दे कमजोर हो जाते ह और रह-रहकर बाथरूम याद आता है। फक सिफ इतना है कि पहले बाथरूम पर जमादार रहता था अब पुलिस वाला। शेप सब वसा ही शुभ है। नकल का इतिहास हमारे देश मे काफी पुराना है।

अग्रेजो के टाइम मे एक कोइ विलियम जान डिक थे। वे कभी थूकते नही थे। सारी थूक खखार अदर घोटे रहते थे कि कही थूक म पौष्टिक तत्त्व न निकल जायें। धीरे-धीरे उस इलाके के सब लोगो ने पीतल के थूक-दानो के बदले गुड मूगफली ले ली। थूकना बद हो गया। अब वही जोर जीवन जल पर है ! कुछ बडे लोगो न नारा लगाया कि अपना अपने ही काम लाओ। हेल्थ बनी रहेगी। चुनाचे अब छुटभैय भी सोचने लगे कि 'प्रात अमृतपान' कब से शुरू करे। नकल का इतिहास हमारे देश म काफी पुराना है।

मेरे छुटपन म रायबरेली स्टेशन पर एक अग्रेज इजन ड्राइवर थ जो सिर का कोयल स बचान की गरज स इजन स्टाट करने के पहल हरी झडी बाध लेत थ। बस, हरी पडी चल पडी। सब बाधने लग। कालातर म जो भी रायबरेली जीतकर आग बढा, हरी झडी बाधन लगा। यह दूसरी बात है कि पडी बाधने के बावजूद कुछेक के सिरा म कोयला भरा रहा। नकल का इतिहास हमारे देश म काफी पुराना है।

मेरे बचपन के दोस्त जटाशकर तीसरी क्लास म मौलवी साहब क

पास मरे साथ पढते थे। इम्तहान म ठीक पहले पेट म अरिथमेटिक खल वला गयी और उन्ह पेचिश हो गयी। मौलवी साहब ने छूट दे दी कि घर पर खटिया पर लेटे लेटे सवाल लगाकर भिजवा दो। नबर दे देंगे। काला तर म खटिया मेडिकल कालेज हो गयी। वही पडे-पडे पपर हल करो। नबर द देंगे। मेरा मझला भी अड गया कि मेडिकल कालेज स इम्तहान दूगा। मैं भी अड गया कि मैं तुझे काजीहाउस भेजे देता हू। वही स दे इम्त हान। नक्ल का इतिहास हमार देश म काफी पुराना है।

मैं ताजा ताजा जवान हुआ था सन अडतालीस म। इधर उधर आख उठाकर पहली बार देखा कि मरे साथ साथ और कौन-कौन जवान हुई है ? दीवाली के दिन थे। चाली घाघरी पहन सजी धजी कई घूम रही थीं।

बरसा बाद इस बार देखा कि गले स पर तक घाघरी पहने घम रही है जिसम न नाडा है न बटन। एक ही कपडा गले स परो तक टगा है। चल भी रही हैं सडक भी साफ कर रही हैं। नक्ल का इतिहास हमार देश म काफी पुराना है।

जिन दिना मैंने चड्ढी छोडकर नेकर साधा था नौटकिया का बडा रिवाज था। हर गली मुहल्ल रात रात भर नगाडा तडकता था और एक स एक बूढा हुक्का, पराठे और कबल बाधे, मुह उठाये कमर की लचक पर वाह वाह करता था। कालातर म ऐयर कडीशण्ड ड्रामा हाल बने और ऐसे एस ड्रामे होन लगे कि खुद ही खेलो, खुद ही समझो। इसी बीच म एक ड्रामा हुआ बडे हाकिम' हम समझे कि अग्रेजी ढग का होगा। था तो अग्रेजी का ही तर्जुमा मगर देखते क्या है कि नगाडा तडक रहा है और ठेठ नौटकी अदाज म दिलवर की अगडाइया टट रही हैं। यानी नक्ल का इतिहास हमारे देश म काफी पुराना है।

अब साबित हो ही गया कि हम परपरागत ढग स नक्लची है, तो फिर इम्तहाना म इतनी फौज, मिलिट्री लगान की क्या जरूरत है ? परिश्रम तो आखिर उसन भी किया है जिसन महीन महीन पुर्जिया बनायी हैं, या साडी पर कमिस्ट्री छापी है।

इम हस्तकला के नबर अलग स होन चाहिए। काश, मैं कुछ होता तो जी जान स मन्दिया पुरानी नक्ल-परपरा की हिफाजत करता !

उछलते हुए सोने का मातम

मिर्जा लपकते हुए आये और अपनी जूतियां, छड़ी और पीकदान समेत सोफे पर उकड़ूं बैठ गये। हमपर लगभग लानत भेजते हुए बोले, 'बस, तुम अखबार में 'कसम-वादे' और कालीचरन' देखते रहो! खुदा कसम, तुम्हारे जैसे लोग जमीन पर बेफजल' बोझ हैं। कुछ पता है कि बाहर क्या हो रहा है? सोने ने कितनी तगड़ी उछाल ली है?

"भई, खुशी की बात है। इस बार भी गोया दीवाली दंगल में सोना-सिंह ने हमारे मोहल्ले की नाक रख ली।"

मिर्जा ने मुक्का तानकर हमारे सोफे के हत्थे से अपना माथा पीट लिया। अपनी बचना भर दाढ़ी तकरीबन नोचकर उबाल खा गये, "भई, बुरा न मानना, अब तुम हाथ रेट पर बेच देने लायक हो गये हो। मैं सोनासिंह पहलवान पर खाक नहीं डाल रहा हूं, बल्कि सोने की बात कर रहा हूं—माहड था। वही जो मरते दम मुंह में डाला जाता है।"

मिर्जा छोटी छोटी बातों को लेकर उचका मत करो। तुम पहले मरने का प्रोग्राम तो फाइनल करो। तुम्हारे मुंह में डालने भर को सोना भर पाने है। मेरी समझ में नहीं आता कि सोने की उछाल का असर मुझपे या तुमपर क्या पड़ेगा? तुम्हें कौन-सा नया निकाह पढ़वाना है? जो एक है वही बेवा होने को आरजू में तड़प रही है।"

मिर्जा तनकर खड़े हो गये। गुस्से में खखारकर हलक की मालगुजारी अदा न कर हमारी ओर लपके, कसम पीर घटना की आज कहीं तुनराइ न हुड होते तो खून-खराबा हो जाता। हमारा उसूल है कि हम

जुमरात को किसी भुनगे की भी हत्या नहीं करते। सोने की तड़प को
क्या समझोगे ? किसी रईस खानदान से हुए होते तो बाल नोच रहे होते
तुम्हारा क्या ? प्याली भर माश की दाल में डुबोकर चार रोटियाँ
लीं और कच्छा पहनकर सो गये। हमारे कलेजे से पूछो जिसकी ११ पुश्त
में सिर्फ रईसजादे ही पैदा हुए। अब तुम्हें बतायें तो बगलें बजाने लगोगे
नानी अम्मा कमर में पौने तीन सेर वजन पक्की ईंट के सोने की तग
बांधती थीं। क्या समझे ?

समझना क्या है ? अई मिर्जा वह कमरें ही और था, अब की कमर
और है ! अब दुल्हनों की टोटल कमर पौने तीन सेर नहीं होती ! तगड़ी
क्या बांधेगी !'

काटा मत बदलो। बात कमर की नहीं, सोने की हो रही है। हम
खानदानी रईसजादा के मुंह पे तो कालिख पुत गयी। तुम्हारी ही भावज
डोली से ड्योढ़ी पर उतरी थी तो सिर से पांव तक सोना ही सोना थी
कई दिन तक अम्मी सोना हटाकर यह ढूंढ़ती रही थीं कि आखिर दुल्हन
कहां है ? जितने फालतू जेवरात थे यानी जिनकी बदन पर गुंजाइश नहीं
रह गयी थी वे पीछे पीछे नौकरानी पहन चल रही थी। अब हम अपने
शब्बीर की दुल्हन लानी है और सोना उछाल खाकर आसमान छू रहा है।
समझ में नहीं आता कि मुंह छिपाकर किसकी कब्र में जा घुसें ?'

कब्र की फिक्र न करो मिर्जा ! मैं ताजी तैयार कराये देता हूं। तुम
लपककर कफन पहन आओ। रहा सवाल सोने का सो भाभी साहबा के
पास इतना काफी सोना है कि शब्बीर की पांच दुल्हनें पहन सकती हैं !'

अई, तुम्हारी इन टुकाची बातों पर खुदकुशी करने को जी मचलता
है। हमारे खानदान में आज तक एक ने दूसरे का पाजामा नहीं पहना,
फिर जेवर कैसे पहनेगा। फिर तुम्हारी भावज के पास बाजूबंद नौरतन
तगड़ी, टीका करनफूल झुनझुनिया पतेला बालाहार कमरपाश कंगन
जुलेखानी नकफूल, सुहागपली पटिया लटकन चंदरमुखी, लाकेट,
जवाहरखाम पुंगिया हीरापान और दीगर अल्लम गल्लम जेवरात सन्
छःतीस के हैं। अरे ना रस शब्बीर की दुल्हन जो आयगी वह माडरन फरम
की होवगी। पतलून्ना बनियान पहनने वाली ! उसकी जूती पहनें।। ये पुरा

जेवर ? उन्हें चाहिए नयी काट के, जो चमके ज्यादा, झनके कम ! उधर सोना है कि पुट्ठे पर हाथ नही रखने दे रहा है। समझ म नही आता कि निगोड़े सोने को हो क्या गया ? सुना है कि बाहर भेजा जा रहा है। अरे भई, कोई उनसे पूछे कि अब हमारे यहा की दुलहनें क्या पहनेगी ?"

'मिर्जा, आजकल की नयी काट की दुलहनें सोना पहनती ही कहा है ? एक कलाई घडी और चेन काफी है !"

'आपने बक दिया और हम मान गये ? भाड म जायें दुलहने ! शादी का जोडा भी न पहनें ! चडढी बनियान वाली नहाने की पोशाक म निकाह पढवा लें ! मगर हमारा खानदानी विकार तो खटाई खा रहा है। हम तो अपनी जानिब से बावन तोले पाव रत्ती चढाना है। फिर उनकी मर्जी। तुम्हारी भावज ने ही सारे जेवर हाडी म भरकर पुरानी रजाई म ठूस रखे है तो कौन सा हमें ब्लड प्रेशर हुआ जा रहा है ?'

'उबाल मत खाओ, मिर्जा, सलूशन हम समझाते है ! सोना उछाल खा रहा है। यही मौका है कि भावज का कोई पुराना सडा बुसा जेवर निकाल दो और आमद रकम से नई काट के हल्के हल्के जेवर बनवा दो बहू के वास्ते। आखिर भावज के पुराने जेवर किस काम आ रहे हैं ?'

"कहो तो उन्हे भी औने-पौने कबाडखाने म निकाल दे ? आपकी नक सलाह का शुक्रिया ! जब बताओगे, वह तरकीब बताओगे कि वह मुगल जादी पाव की इज्जत हाथ म लेकर हम कब्रिस्तान तक दौडा ले ! होने को तुम खामखाह निस्फ दजन बच्चो के बाप हो गये मगर औरत का न पहचान पाये। कही किसी डायरी म नोट कर लो कि औरत अपना पुराना शौहर भले ही किसीको दे दे पर पुराना जेवर जुदा नही कर सकती।"

"भई, अजीब बात है ! हमने तो सुना है कि मारे लाड-प्यार के सासें सारा सोना नयी बहू का दे डालती है ?"

दे डालती थीं, कहो। सन छब्बीस के बाद वैसी सासे पैदा होना बन्द हो गया। अल्ला उन्हे करवट-करवट जन्नत बख्शे। हमारी अम्मी लास्ट सास थी जिन्होंने दात म लगा सोना तक मय दात के, तुम्हारी भावज को दे डाला। अम्मी मरहूम के बाद से वैसी सासे ही बनना बन्द हो गयी।

"भई मिर्जा, तुम अपनी नामाकूल जबान ही इस्तेमाल म लाते रहोगे

या समझदारी से भी कुछ खर्च कराोगे ? तुम भाभी को जाकर समझाओ तो कि सोने का भाव इस कदर हाई हो गया है ! शायद लालच में आकर जेवरात तुडवाने पर तैयार हो जायें ?"

'तुम देख लेना कि अगर ऐसा किया तो तुडवाने का तजुर्बा जेवरात पर नही, मेरी खोपडी पर होगा । *मुगलानी शर्तिया अड जायेगी कि और खरीद लो* ! कल को भाव और चढ जायेगा ! मैं जाँघिये को तरक्की दे कर पाजामा करना चाहता हू, तुम उसे लगोट बनाने पर तुले हो। खुदा जाने तुमने पच्चीससाला शादीशुदा जिन्दगी में क्या भाड झोंका है। इससे तो तुम कुआरे ही रहते तो मुल्क कौम और ससुराल वालो पर एहसान होता। *अब जरा अपनी फफूदी लगी अक्ल से यह सोचकर बताओ कि* इतने ऊचे सोने पर हाथ कैसे रखा जाये ? अगले महीने ही शब्बीर की *खानाआबादी होनी तय पायी गयी है* !'

मिर्जा, चुपचाप सुनो। पानी देकर सोना नीचे ले आओ ! बड़े बडे आजकल पानी चढाये घूम रहे हैं ! जेवरात यो ही सस्ते में दे बनवाकर खालिस सोने का पानी चढवा लो। झिलमिलाते भी रहेगे और काम भी कौडियो में निकल जायेगा ! क्या समझे ?"

या खुदा ! काश, तुम पैदा होने से पहले ही मर गये होते, मिया ! कहो तो शब्बीर के लिए दुल्हन भी प्लास्टिक की ला दू ? गारत हो जाये यह दुनिया। हम खानदानी रईसों का अब दाल हजम करना मुश्किल है। आदाब अर्ज ! '

मिर्जा सोने से भी तेज उछले और पीकदान बगल में दाबे यह जा, वह जा। सोना भी आदमी को किस कदर पागल बना देता है ! सोने के बगैर वाकई जीना बेकार है ! हमने सोफा कुशन सिर तले दबाया और सो गये !

के० पी० सक्सेना

जन्म १९३४, बरेली (उ० प्र०) में।

शिक्षा १९५३ में सभी सीन्यिा लाघ की यूनिवर्सिटी की। स्नातकोत्तर (विज्ञान)।

वनस्पतिशास्त्र पर अंग्रेजी में एक दजन पुस्तकें। आधे दजन विज्ञान लेख विदेशी पत्रिकाओं में।

'आकाशवाणी से ७८ नाटक प्रसारित। १९७४ में नाटक 'वह जो मैं नहीं हूं' अ० भा० रेडियो नाटकों में सवश्रेष्ठ घोषित एवं पुरस्कृत। इस नाटक का १३ प्रांतीय भाषाओं में अनुवाद।

मंच के लिए दो दजन नाटक।

टी० वी० के लिए एक दजन नाटक लिखे और अभिनय भी।

लगभग ५०० व्यंग्य रचनाएं प्रकाशित।

बच्चों के लिए बीस हास्यकथा सकलन तथा उपन्यास। व्यंग्य सकलन 'नया गिरगिट' प्रकाशित। दो पुस्तकें प्रेस में।

जायदाद—एक बीवी चार बच्चे! कोई घर नहीं!

नौकरी—लखनऊ स्टेशन पर स्टेशन मास्टर!

शौक—सिर्फ पान खाना!

खुराक में 'ख्याली पुलाव' सबसे ज्यादा पसंद है!